अनुपम त्रिमूर्ति जिनालय देवगढ़ ललितपुर, (उ.प्र.)

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अदभुत प्रतिमायें

7. श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, देवगढ़, जिला- ललितपुर, उत्तरप्रदेश में पर्वत पर स्थित 22 नंबर जिनालयगत अनुपम त्रिमूर्तियों में देशी बलुआ पाषाण से निर्मित कायोत्सर्गस्थ, सात सर्प फणावलियों सहित जिन प्रतिमा है। इसके चरणों के निकट दोनों ओर एक-एक हाथ जोड़कर प्रणति निवेदित करती हुई दो आकृतियाँ भी दृष्टिगोचर हो रही हैं। उसके पादपीठ पर 'चकवा पक्षी' के चिह्न युक्त यह प्रतिमा है (चित्र क्र.7)।

संकलनः निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रभातसागरजी महाराज, मुनि श्री चंद्रसागरजी महाराज, मुनि श्री निरीहसागर जी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - www.sanskarsagar.org\knowledge

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		जुलाई 2025	
16	बुधवार	षष्ठी	उत्तराभाद्रपद
17	गुरुवार	सप्तमी	रेवती
18	शुक्रवार	अष्टमी	अश्विनी
19	शनिवार	नवमी	भरणी
20	रविवार	दशमी	कृत्तिका
21	सोमवार	एकादशी/द्वादशी	रोहिणी
22	मंगलवार	त्रयोदशी	मृगशिरा
23	बुधवार	चतुर्दशी	आर्द्रा
24	गुरुवार	अमावस	पुनर्वसु
25	शुक्रवार	प्रतिपदा	पुष्य
26	शनिवार	द्वितीया	आश्लेषा
27	रविवार	तृतीया	मघा
28	सोमवार	चतुर्थी	पूर्वाफाल्गुनी
29	मंगलवार	पंचमी	उत्तराफाल्गुनी
30	बुधवार	षष्ठी	हस्त
31	गुरुवार	सप्तमी	चित्रा
		अगस्त 2025	
1	शुक्रवार	अष्टमी	स्वाती
2	शनिवार	नवमी	विशाखा दि/रा
3	रविवार	नवमी	विशाखा
4	सोमवार	दशमी	अनुराधा
5	मंगलवार	एकादशी	ज्येष्ठा
6	बुधवार	द्वादशी	मूल
7	गुरुवार	त्रयोदशी	पूर्वाषाढ़
8	शुक्रवार	चतुर्दशी	उत्तराषाढ़
9	शनिवार	पूर्णिमा	श्रवण
10	रविवार	प्रतिपदा	धनिष्ठा
11	सोमवार	द्वितीया	शतभिषा
12	मंगलवार	तृतीया/चतुर्थी	पूर्वाभाद्रपद
13	बुधवार	पंचमी	उत्तराभाद्रपद
14	गुरुवार	षष्ठी	रेवती
15	शुक्रवार	सप्तमी	अश्विनी

तीर्थंकर कल्याणक

20 जुलाई : भगवान कुंथुनाथ जी गर्भकल्याणक
26 जुलाई : भगवान सुमतिनाथ जी गर्भ कल्याणक
30 जुलाई : भगवान नेमिनाथ जन्म तप कल्याणक
31 जुलाई : भगवान पार्श्वनाथ जी मोक्ष कल्याणक
09 अगस्त : भगवान श्रेयांसनाथ जी मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

21 जुलाईः रोहिणी व्रत
25 जुलाईः सप्तपरमस्थान व्रत प्रारंभ
25 जुलाईः सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष प्रा.
31 जुलाईः मोक्ष सप्तमी
04 अगस्तः 3,10,17,24,31 रविव्रत सौभाग्य दशमी, कलश दशमी, अक्षय निधि दशमी
06 अगस्तः श्रावक द्वादशी
08 अगस्तः कर्म निर्जरा व्रत, षोडशकारण व्रत प्रारंभ
09 अगस्तः सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष पूर्ण
09 अगस्तः रक्षाबंधन श्रमण संस्कृति रक्षक दिवस
09 अगस्तः मेघमाला व्रत प्रारंभ
14 अगस्तः चन्दन षष्ठी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

21 जुलाईः 05/53 बजे से 29/14 बजे तक ।
24 जुलाईः 05/55 बजे से 29/55 बजे तक ।
30 जुलाईः 05/57 बजे से 21/53 बजे तक ।
04 अगस्तः 05/59 बजे से 09/12 बजे तक ।
08 अगस्तः 14/28 बजे से 30/01 बजे तक ।
09 अगस्तः 06/01 बजे से 14/23 बजे तक ।
12 अगस्तः 11/52 बजे से 30/03 बजे तक ।
14 अगस्तः 06/03 बजे से 30/03 बजे तक ।
15 अगस्तः 06/03 बजे से 07/36 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः जुलाई-16,17,18,21
मशीनरीप्रारंभः जुलाई-17,18,25,30,31
वाहन खरीदनेः जुलाई-17,18,25

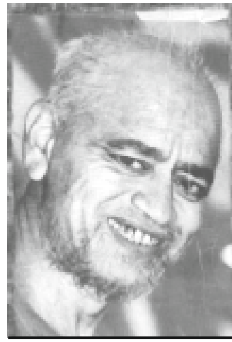

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 315 • जुलाई 2025
• वीर नि.संवत 2551-52 • विक्रम सं. 2082 • शक सं. 1945

लेख

- क्यों मनायें वीरशासन जयंती 08
- श्रमण शतक में इन्द्रिय विजय की व्याख्या 13
- आगम की छाँव में समीक्षात्मक अध्ययन 15
- तिगड़म है (तिकड़म) दुःखदायी 17
- हरिवंशपुराण में जम्बूद्वीप 18
- द्रव्यलिंगी मुनि का स्वरूप व प्रकार 20
- पंडित श्री रतनलल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 22
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 23
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 24
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 25
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 26
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 27
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 28
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 29
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 30
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 31
- पंडित श्री रतनलाल जी भावपूर्ण श्रद्धांजली 32
- सुबाई गांव में उड़ीसा का पुरावैभव 35
- ब्र. आत्मानंद जी (पंडित श्री रतनलालजी) इंदौर (दसम प्रतिमाधारी) का समाधिमरण 45
- संस्कृति का सम्मेलन है चातुर्मास 56
- **वरिष्ठ नागरिकः** बुढ़ापे में आराम से रहने हेतु सुझाव 58
- साइटिका दर्द नियंत्रण उपाय 59

बाल कहानी

- कातिल प्रेमी 62

कविता

- रतन का जतन 10
- रत्नत्रय के रतन बचा लो 14
- जय विद्यासागर 32
- पूजन कर लो रे अंतरीक्ष प्रभु पार्श्व की 35
- पंथ दिगम्बरः शिव सुख का आधार 37

कहानी

- काम बिना बेचैन 49

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 11
चलो देखें यात्रा : 33 • आगम दर्शन :34 • माथा पच्ची : 36 • पुराण प्रेरणा : 37
• कैरियर गाइड : 38 • दुनिया भर की बातें : 39 • इसे भी जानिये: 43
•दिशा बोध : 44• हमारे गौरव : 55 • वरिष्ठ नागरिक : 58 • हास्य तरंग-पाककला : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8450088410

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं ।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–3193601
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, 7 मई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने आलोचकों को गलत सिद्धकर दिया कि मात्र मोदी अति प्रचार ही नहीं करता अपितु कुछ करना भी जानता है ऑपरेशन सिन्दूर करके आतंकी ठिकानों को तबाह कर यह सिद्ध कर दिया कि मोदी सिंह की सवारी करता है। यह ऑपरेशन पाक और उसके आतंकियों के लिए साफ संदेश दे गया कि भारत आतंकवाद रूपी सर्प के फन कुचलने में सक्षम है। ऑपरेशन सिंदूर भारत की आतंकवाद रोधी रणनीति का सटीक जबाव है। और आतंकवाद रोकने की संकल्प बद्धता को स्पष्ट करता। अतः पाकिस्तान को यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि भारत आतंकवाद का सफाया कर सकता है।

सोनू ब्या, केसली

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों पाक के लिए जासूसी करने वालों को पकड़ा गया जिनकी सरगना ज्योति मलहोत्रा अनेक प्रकार के चैट और वाट्सएप से परत दर परत राज खुलने से उलझ गई परंतु सवाल इस यह उभार कर सामने आया कि क्या ज्योति भारत माता को नहीं मानती होगी क्या उसके लिए देश की गरिमा कम नजर आयी। देश के लिए कितनी ही मातायें अपने बच्चों को सेना में भर्ती कराती हैं और दूसरी ओर ज्योति जैसी देशद्रोही बालिका पर उसकी माँ क्या सोचती होगी। अपनी कोख पर पछताती होगी कि मैंने कैसी संतान को जन्म दिया। देश से बड़ा कोई नहीं होता इसे ध्यान में रखना जरूरी है।

संजय जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के जून अंक में प्रकाशित डॉ. अरविंद प्रेमचंद भोपाल का लेख पढ़ा मंदिरों का अतिशय खत्म क्यों हो रहा है। इसके तल में जाने से पहले सोचना होगा कि अतिशय प्रतिमा या मंदिर देवकृत होता है। पंचमकाल में व्यंतर भवनवासी और ज्योतिषी देव हैं। अपनी विक्रिया से अतिशय करते हैं। उनके स्थायित्व को बनाने के लिए मंदिर की पवित्रता बनाये रखने श्रावकों का कर्तव्य होता है मद्य–माँस मधु का सेवन करने वाले यदि प्रभु प्रतिमा स्पर्श करेंगे तो देवगण अपनी दूरी अवश्य बनायेंगे अतः शुद्ध मन शुद्ध तन और शुद्ध वाणी व्यवहार बनाये रखने से मंदिर का अतिशय अवश्य ही बना रहेगा।

कु. देशना जैन राहतगढ़

• सम्पादक महोदय, श्वेताम्बर मत का आधार वस्त्रवाद और पात्रवाद है। पात्रवाद का औचित्य सिद्ध करने के लिये श्वेताम्बर मतानुयायी साधकों ने आगम संकलना के समय केवली भुक्ति जैसी कर्म सिद्धांत विरूद्ध तथा तर्क विरूद्ध विचार धारा का समावेश किया जिसका उद्देश्य पात्रवाद की उचितता सिद्ध करना है परंतु श्वेताम्बरीय विद्वान पं. बेचरदास के अनुसार **जैन साहित्य में विकार** जैसे ग्रंथ रचना से विदित होता है कि यह सब परिवर्तन अपने पात्रवाद के पोषण के लिए किया गया है अतः आगम दर्शन स्तंभ में आचार्य जयसेन द्वारा निराकृत केवली भुक्ति निराकरण लेख के माध्यम से संस्कार सागर ने एक सत्य पाठकों के सामने रखने का अनूठा कार्य किया है।

श्रीमति सुप्रिया आदर्श जैन, झाँसी

भक्ति तरंग
केवल ज्योति

केवल ज्योति सुजागी जी,
जब श्री जिनवर के ।। टेक ।।
लोकालोक विलोकत जैसे,
हस्तामलक बड़भागी जी ।।1।।
हरि-चूड़ामनिशिखा सहज ही,
नम्र भूमितें लागी जी ।।2।।
समवसरण रचना सुर कीन्हीं,
देखत भ्रम जन त्यागी जी ।।3।।
भक्ति सहित अरचा तब कीन्हीं,
परम धरम अनुरागी जो ।।4।।
दिव्य ध्वनि सुनि सभा दुवादश,
आनँद दरस में पागी जी ।।5।।
भागचन्द प्रभु भक्ति चहत है,
और कछु नहिं मांगी जी ।।6।।

जब श्री जिन को केवलज्ञान प्रकट हुआ, जब केवलज्ञान की ज्योति जगमगा उठी तक सारा लोक-अलोक-भूत-भविष्यत-वर्तमान की समस्त पर्यायों सहित हाथ में रखे आँवलें की भाँति स्पष्ट दिखाई देने लगा।

तब समस्त सम्पदा-धन-वैभव, मुकुट से युत्त इन्द्र भी उनके चरणों में झुक गये, समस्त वैभवयुत्त लोग उनके चरणों में झुक गये, नत हो गये। अर्थात केवलज्ञान रूपी लक्ष्मी के आगे तीन लोक के वैभव निस्सार हैं , निरर्थक हैं तुच्छ हैं।

फिर देवों ने समवशरण की रचना की जिसे देखकर सब लोगों के भ्रम कौतूहल दूर होने लगे।

सबने भगवान की भक्ति सहित पूजा-अर्चना की और सबको धर्म में अति अनुराग श्रद्धा हुई।

समवशरण की बारह सभाओं में बैठे सभी प्राणीजन जिनेन्द्र की दिव्यध्वनि सुनकर आनंद व भक्ति से सराबोर हो गये।

कवि भागचंद जी कहते हैं कि केवल ऐसे प्रभु की ही भक्ति की कामना हैं, इसके अलावा वे और कुछ नहीं चाहते।

संस्कार प्रवाह

नहीं डाला रतन पानी में

राजस्थान की वीर भूमि चित्तौड़गढ़ जिले में एक बीनोता कस्बा जिस कस्बे में सुखलाल जी और गमेरी बाई को एक रत्न की प्राप्ति हुई थी उस रत्न ने अपने जीवन को रत्न ही बनाया क्योंकि हर व्यक्ति के सामने एक समस्या होती है कि रत्न जब भी प्राप्त होता है तो प्रायः रत्न लोग नर तन को ही रतन मानते हैं और वह रत्न आगम में माना गया है और रतन प्राप्त करके उन्होंने अपने पुत्र का नाम रतन लाल ही रखा।

पंडित रतनलाल जी अपनी जन्मभूमि को छोड़कर शिक्षा प्राप्त करने उदयपुर गये तद्उपरांत इंदौर में बसे। इंद्रभवन में उन्होंने अपनी स्वाध्याय की परंपरा को इस तरीके से बनाया कि आगम ग्रंथों का स्वाध्याय कराने में रूचि थी और उनकी सरलतम शैली की विवेचना हर किसी को समझ में आती थी। उनकी स्वाध्याय शैली को देखकर के कई ब्रह्मचारी उनके पास पढ़ने के लिये आते जाते रहते थे लेकिन उनकी व्याख्या में कभी भी पक्षपात नहीं रहा उन्होंने नय के पक्षपात से ऊपर उठकर प्रमाण को ही महत्वपूर्ण बताया ये आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी से सन् 1978 में दर्शनार्थ पधारे उनकी चर्चा हुई तब मैंने एक बात देखी सचमुच में उनकी व्याख्यायें बहुत गहरी थी।

पंडित रतनलाल जी ने अपने जीवन को सादा और उच्च विचार मय बनाया वे स्वावलंबी रहे और स्वावलंबन के साथ-साथ उन्होंने किसी भी प्रकार से तत्त्व विवेचना में किसी का टकराव नहीं किया उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि वे जीवन को नर रतन मान करके पानी में डालने के लिए कभी भी सहमत नहीं हुए। उन्होंने **नर तन रतन अमोल इसे पानी में मत डालो** इस लाइन को जीवन में उतार लिया और जीवन में उतारने के बाद समाधि धारण करते हुए दो अप्रैल को उन्होंने नश्वर तन को छोड़कर जिस तरीके से किसी घर में आग लग जाए तो व्यक्ति सबसे पहले उसमें से रतन निकालता है इसी तरीके से नश्वर तन से उन्होंने आत्मा से आनंद को निकालते हुए आत्मानंद में लीन होने की पूरी कोशिश की। उनकी वही कोशिश नर तन रतन को उन्होंने पानी में नहीं डाला ऐसे विद्वान रतनलाल जी का संस्कार सागर परिवार सदैव अभिनंदन करता है और उनकी समाधि से सबक लेकर सारे लोग निष्पक्ष आगम की विवेचना करते हुए समाधि की ओर बढ़ते हैं बढ़ेंगे इसी आशा और विश्वास के साथ हम पंडित रतनलाल जी को आज भी याद करते हैं और वे सदैव हमारे स्मृति पटल पर विराजमान रहेंगे।

क्यों मनायें वीरशासन जयंती

❋ सुषमा जैन, भिलाई ❋

भारत में अनादि काल से पर्वों को मनाने की परम्परा रही है। वीरशासन जयंती एवं गुरु पूर्णिमा दोनों ही नैमित्तिक धार्मिक पर्व हम बड़े ही उत्साह एवं प्रभावना पूर्वक आयोजित करते हैं। इस दिन भगवान महावीर की जगत कल्याणी दिव्य ध्वनि खिरी थी। अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनके ज्ञान के आलोक से संसार आलोकित था। मंद मंद पवन बह रही थी। सौधर्म इन्द्र और देव केवलज्ञान कल्याणक की पूजा करके आनंदित थे। सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने विशाल सभा मण्डप समवशरण की रचना की, जिस सभा में बैठकर तीर्थकर भगवन्त प्राणी मात्र के कल्याण का उपदेश देते हैं वह सभा मण्डप समवशरण कहलाता है वहाँ पहुँचते ही प्राणी सब कुछ भूलकर धर्ममय वातावरण में निराकुल हो जाता है। श्री मण्डप भूमि में स्फटिक की सोलह दीवारों से विभाजित बारह कोठे होते हैं जिनमें बारह सभाएँ होती हैं। तीर्थंकर भगवान की बार्यी ओर से क्रमशः 1 गणधर एवं समस्त मुनिराज 2. कल्पवासी देवियाँ 3. आर्यिकाएं एवं श्राविकाएं 4. ज्योतिषी देवियाँ 5. व्यंतर देवियाँ 6. भवनवासी देवियाँ 7. भवनवासी देव 8. व्यंतर देव 9. ज्योतिषी देव 10. कल्पवासी देव 11. चक्रवर्ती एवं मनुष्य 12. पशु पक्षी बैठते हैं। इसके मध्य में गंध कुटी में स्वर्ण सिंहासन पर स्वर्ण कमल पर आकाश में तीर्थंकर भगवान विराजते हैं।

अंतिम तीर्थेश महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति वैशाख शुक्ला दशमी के दिन हो चुकी थी। आषाढ़ मास व्यतीत होने को था, पर अभी तक महावीर की दिव्य ध्वनि आरंभ नहीं हुई थी। राजगृह के निकट विपुलाचल पर्वत पर समवशरण में यथास्थान सभी विराजमान थे। पैंसठ दिन व्यतीत हो चुके थे दिव्य ध्वनि नहीं खिरी थी। सौधर्म इन्द्र ने अवधि ज्ञान से ज्ञात किया कि जब तक यथार्थ ज्ञानी गणधर उपस्थित नहीं हैं, तब तक तीर्थंकर की वाणी नहीं खिरेगी। तीर्थंकर की ज्ञान साधना गणधर के माध्यम से ही अभिव्यक्ति को प्राप्त होगी। सौधर्म इन्द्र बटुक का रूप धारण कर उस स्थान पर पहुँचे जहाँ मगध से सोहिल नामक ब्राह्मण विद्वान ने मध्यमापावा में एक विराट यज्ञ का आयोजन किया था। इस यज्ञ का नेतृत्व मगध के प्रसिद्ध विद्वान इन्द्रभूति गौतम कर रहे थे। इस अनुष्ठान में सहस्त्रों विद्वानों के साथ अग्निभूति वायुभूति आदि ग्यारह महापण्डित उपस्थित थे। इन्द्रभूति गौतम का व्यक्तित्व विराट एवं प्रभावशाली था। पाँच सौ छात्र उनके पास अध्ययन करते थे। सौधर्म इन्द्र बटुक का रूप बनाये हुए इन्द्रभूति गौतम के पास जाकर बोले आप दर्शन, न्याय, तर्क, ज्योतिष और आयुर्वेद के मर्मज्ञ विद्वान है। मुझे एक गाथा का अर्थ समझ में नहीं आ रहा। उसका अर्थ ज्ञान करने की जिज्ञासा है, और अत्यंत विनम्रता से कहाः-

पंचेव अत्थिकाया छज्जीव-णिकाया महव्वया पंच।
अट्ठ यपवयण-मादा सहेउओ बंध-मोक्खो य॥

इन्द्रभूति गौतम समझ नहीं पा रहे थे कि पंचास्तिकाय क्या है छःजीवनिकाय कौन से हैं आठ प्रवचन मात्रिकाएं क्या हैं। उन्हें जीव के अस्तित्व के सम्बन्ध में स्वयं शंका थी वे बटुक रूप धारी इन्द्र से बोले तुमने ये गाथा किससे सीखी ? इन्द्र बोले मैंने यह गाथा अपने गुरु तीर्थंकर महावीर से सीखी पर वे कई दिनों से मौन हैं अतः इसका अर्थ मैं उनसे नहीं जान पाया। तब इन्द्रभूति ने कहा कि चलो तुम्हारे गुरु के समक्ष ही इस गाथा का अर्थ बताऊँगा। सौधर्म इन्द्र बहुत प्रसन्न हुए और विचारने लगे कि मेरा कार्य संपन्न हुआ।

मानस्तंभ को देखते ही इन्द्रभूति गौतम का मान गलित हो गया। सम्यक्त्व प्रगट हो गया, उन्होंने अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए भगवान महावीर के चरणों में नमस्कार किया। अपने पाँच सौ शिष्यों के साथ भगवान के पादमूल में जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली। अन्तर्मुहूर्त में ही रिद्धियाँ प्राप्त कर मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यय इन चारों ज्ञान के धारी प्रथम गणधर हो गये। यह पावन दिन था आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा। इसी दिन हमें गौतम गणधर गुरु मिले, यह दिन गुरुपूर्णिमा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अगले दिन श्रावण कृष्ण-प्रतिपदा के दिन ब्रह्म मूहूर्त में भगवान महावीर की दिव्यध्वनि खिरी। और धर्मतीर्थ का प्रारंभ श्रावण-कृष्ण-प्रतिपदा को हुआ। तभी से यह दिन वीरशासन जयंती के रूप में मनाया जाता है।

इन्द्रभूति गौतम अपने पाँच सौ शिष्यों के साथ दीक्षा लेकर भगवान महावीर के प्रधान गणधर पद पर विराजे। महावीर भगवान के समवशरण में ग्यारह गणधर थे। अग्निभूति और वायुभूति ने भी अपने अपने पाँच पाँच सौ शिष्यों के साथ समवशरण में दीक्षा ली। और दूसरे गणधर अग्निभूति व तीसरे गणधर वायुभूति हुए। शुचिदत्त ने दिगम्बर दीक्षा लेकर भगवान महावीर के चतुर्थ गणधर का पद प्राप्त किया। सुधर्मास्वामी ने समवशरण में दीक्षा ग्रहण करी गणधरों में पाँचवें गणधर बने, सुधर्मा स्वामी ने बहुत वर्षों तक श्रमण-संघ का संचालन किया। मण्डिक सांख्य-दशर्न के समर्थक थे, वे दीक्षा लेकर छठवें गणधर हुए। मौर्य पुत्र ने समवशरण में यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर जैनेश्वरी दीक्षा धारण करी, वे सातवें गणधर हुए। आकस्मिक ने भी जैनेश्वरी दीक्षा लेकर आठवें गणधर पद को सुशोभित किया। अचल आत्म कल्याण की भावना से महावीर के पादमूल में दीक्षा ग्रहण कर समवशरण में नवमें गणधर हुए। मेदार्य भगवान महावीर के चरण सान्निध्य में दिगम्बरी दीक्षा लेकर दसवें गणधर हुए। राजगृह निवासी प्रभास ने महावीर के दर्शन से ही आत्मकल्याण के विचार से दिगम्बरी दीक्षा धारण करी और वे भगवान के ग्यारहवें गणधर पद पर आसीन हुए।

इस प्रकार विपुलाचल पर्वत पर भगवान महावीर के समवशरण में इन्द्रों द्वारा पूजनीय ग्यारह गणधर और इनके साथ तीन सौ ग्यारह अंग चौदह पूर्वों के धारक थे, नौ हजार नौ सौ यथार्थ संयम को धारण करने वाले शिक्षक थे एक हजार तीन सौ अवधि ज्ञानी थे, सात सौ केवल ज्ञानी परमेष्ठी थे नौ सौ विक्रिया रिद्धि के धारक थे, पाँच सौ पूज्यनीय मनः पर्यय ज्ञानी थे और चार सौ

अनुत्तरवादी थे इस प्रकार सब मुनिराजों की संख्या चौदह हजार थी। गणिनी आर्यिका चन्दना को लेकर छत्तीस हजार आर्यिकाएं एक लाख श्रावक तीन लाख श्राविकाएं थी, असंख्यात देव-देवियां और संख्यात तिर्यंच थे। तीर्थंकर महावीर ने समवशरण में सिंहासन के मध्य में स्थित हो अर्धमागधी भाषा में छः द्रव्य सात तत्त्व संसार और मोक्ष के कारण और उनके फल का प्रमाण नय निक्षेप आदि उपायों के द्वारा विस्तार से निरूपण किया।

वर्तमान समय में वीरशासन जयंति और गुरु पूर्णिमा मनाना तभी सार्थक होगा जब हम लौकिक शिक्षा के साथ अपने आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त करने के लिए एक अपना गुरु बनाएँ। वन्दन पूजन वैयावृत्ति तो हम सभी निर्ग्रन्थ मुनिराजों की करें लेकिन अपनी प्रगति के लिए किसी एक को अपना गुरु बनायें जिनसे हम सदैव मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। भगवान महावीर के बताये पथ पर चलकर परमात्म पद प्राप्त करने का सम्यक् पुरुषार्थ कर पायें।

कविता

रतन का जतन

✻ निर्यापक मुनि श्री योगसागरजी महाराज ✻

आगम के गाँव में
संयम की छाँव में
जीवन का आनंद
पाया निजानंद
बना रतन नर रतन
चरित्र की चमक
इन्द्रिय दमन की दमक
जीवन की सारा

जिनागम था प्यारा
पाया जिनवाणी का सहारा
निजशक्ति को पूर्ण निहारा
तन से नहीं चेतन से
नहीं लगाव रखा वतन से
शिक्षा दाता भाग्य विधाता
गीत विरह के इंदौर गाता
किया गया मरण बाल पंडित
रतनलाल थे सचमुच पंडित
कालजयी, कामजयी,
मनजयी, मदजयी, इन्द्रियजयी
स्वर्ग के अधिकारी पंडित जी अविकारी
आपको नमन, त्याग को नमन
समता को नमन, क्षमता को नमन
तीन रतनधारी हर जल विरागी, संयमधारी
वरे मोक्षनारी रतन का जतन

संयम स्वास्थ्य योग

सेहत स्वाद का राजा सेब

लेटिन नाम- मेलस सिलबेस्ट्रिस

शक्तिवर्धक- सेब एक अच्छा टॉनिक है। सभी आयु के लोग इसे नित्य खायें। सेब के छिलके में विटामिन अधिक होते हैं। अतः सेब छिलके सहित खायें। सुबह शाम खाली पेट नित्य खाने से शरीर में स्फुर्ति रहती है। चिड़चिड़ापन दूर होकर मानसिक शक्ति बढ़ती है। सेब में विटामिन सी अधिक होता है। सेब खाने से पुराने, असाध्य रोगों में लाभ मिलता (होता) है। सेब में **मैलिक एसिड** रहता है। यह खटाई आँतों, यकृत (लिवर) और मस्तिष्क के लिए बहुत लाभदायक है (उपयोगी है)। इसमें फास्फोरस होता है अर्थात् जलन करने वाला पदार्थ जिसे खाने से पेट साफ होता है और आमाशय को पुष्टि प्राप्त होती है। सेब में फास्फोरस सर्वाधिक होता है। जो पुट्ठों, स्नायु और मस्तिष्क के लिये बहुत लाभदायक है। सेब और इसका रस विटामिन एवं खनिज पदार्थों से भरपूर है।

दो सेब के छोटे-छोटे टुकड़े करके उस पर आधा किलो उबलाता हुआ पानी डालकर रख दें। जब पानी ठण्डा हो जाए तो उसे छानकर पी लें। यदि मीठे की आवश्यकता हो तो मिश्री मिलायें। यह सेब का पौष्टिक और स्वादिष्ट शर्बत है। यह शीघ्र ही रक्त में मिलकर हृदय, मस्तिष्क, यकृत और शरीर के हरेक कोश में शक्ति और स्फूर्ति पहुँचाता है। सेब का रस हृदय को शक्ति देता है, नेत्रदृष्टि तेज करता है, दुबले-पतले व्यक्तियों को हृष्ट-पुष्ट बनाता है। जो लोग शक्तिशाली स्वस्थ्य और जवान बने रहना चाहते हैं, उनको सेब का रस अधिकाधिक नित्य सेवन करना चाहिए। कहावत भी है- (An Apple a Day, Keeps The Doctor Away) अर्थात एक सेब नित्य खाने से डॉक्टर की आवश्यकता नहीं पड़ती। सेब भूखे पेट खाना अच्छा है। यह गर्मी, खुश्की दूर करता है। इसका मुरब्बा हृदय, रक्त, मस्तिष्क की कमजोरी हटाता है। नित्य प्रातः भूखे पेट सेब खाकर के ऊपर से दूध पिया जाये तो एक दो माह में ही त्वचा का रंग निखरेगा चेहरे पर लाली झलकेगी, यौन सम्बंधी सभी कमजोरियाँ दूर होकर जीवन में स्फूर्ति दौड़ने लगेगी। यह बहुत अच्छा टॉनिक है। मानसिक तनाव में नित्य दो सेब खाने से लाभ होता है। सेब भोजन से पहले भूखे पेट खाने पर अधिक लाभदायक है। सेब वीर्यवर्धक है।

जोड़ों का दर्द- पेशाब की जांच कराने पर यदि पेशाब में अम्ल (Acid) की मात्रा पाई जाये तो सेब खाना लाभदायक है। सेब खाने से जोड़ों का दर्द व गठिया में लाभ होता है। सेब उबालकर, पीसकर दर्द वाली जगह पर लेप करें।

दांत गलते हों, छेद हो, मसूडे फूलते हो तो खाना खाने के बाद नित्य सेब खायें। इससे दांत और मसूढ़े ठीक हो जायेंगे और खराब नहीं होंगे। यह स्फूर्तिदायक फल हैं।

बिच्छु दंश में- सेब की चटनी पीसकर जहाँ बिच्छु ने काँटा हो, लेप करें तथा सेब खिलायें।

जुकाम- दुर्बल मस्तिष्क के कारण सर्दी-जुकाम सदा बना रहता है। ऐसे रोगियों को जुकाम की दवाओं से लाभ नहीं होता। ऐसे लोगों को जुकाम ठीक करने के लिए भोजन से पहले छिलके सहित सेब खाना चाहिए। इससे मस्तिष्क की दुर्बलता भी दूर होती है।

ब्रोंकाइटिस- सर्द ऋतु में खाँसी, जुकाम प्रायः रहता है। खाँसी से ब्रोंकाइटिस हो जाता है। दो सेब या नाशपाती (Pears) खाने से पुरानी (क्रानिक) ब्रोंकाइटिस से छुटकारा मिल सकता है। सेब और नाशपाती में कैचिन्स (Catechins) नामक एंटी ऑक्सीडेंट्स कम्पाउंड्स पाये जाते हैं जो फेफड़ों की कोशिकाओं को फ्री-रेडिकल्स से होने वाले नुकसान से बचाने में सहायक होते हैं। सेब, नाशपाती कच्ची ही खाना लाभप्रद है। क्रानिक ब्रोंकाइटिस के रोगी को लम्बे समय कम से कम तीन माह से खांसी चली आती है और वह कफ अधिकाधिक थूकता रहता है। यह तथ्य अमेरिकन थोरेसिक सोसायटी ने व्यक्त किया है।

सेब फेफड़ों के लिये लाभदायक है। विटामिन (सी) (इ) एवं बीटा केरोटीन, खट्टे फलों सेब एवं फलों के रस के साथ ही फेफड़ों भली भांति कार्य करने का सम्बन्ध है। जो लोग सेब खाते हैं, उनके फेफड़ों की क्षमता सेब नहीं खाने वालों से अधिक होती है। इसलिए प्रतिदिन सेब खायें। ब्रोंक्राइट्स और खाँसी भगायें।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-3193601 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

श्रमण शतक में इन्द्रिय विजय की व्याख्या

✻ ऐलक सिद्धांतसागर जी महाराज ✻

श्रमण साधना और अध्यात्म साधना ये इन्द्रिय विजय का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी योग साधना कभी भी प्रशंसनीय नहीं हो सकती है जिन्होंने इन्द्रिय को जीत नहीं पाया है। साधना का क्रम इन्द्रिय विजय से ही प्रारंभ होता है। निर्जरा का आधार इन्द्रिय विजय है। इन्द्रिय विजय के बिना संवर और निर्जरा की बात सोच पाना संभव नहीं है। मोक्षमार्ग इन्द्रिय विजय के पड़ाव से होकर ही गुजरता है। वर्षों तक की साधना उसक्षण धूल में मिल जाती है जब कोई साधक इन्द्रिय की खिड़कियों से बाहर झाकने लगता है। शरीर आश्रित बुद्धि इन्द्रिय के गुलाम लोगों की ही होती है। जो व्यक्ति इन्द्रिय के विषयों में सुख मानता है। वह इन्द्रिय को कभी जीत नहीं सकता है। इन्द्रिय को जीतने के लिए सबसे पहले व्यक्ति को अपना सोच बदलना पड़ता है। और जब व्यक्ति का सोच बदल जाता है तो उस समय वह इन्द्रियों के विषय सुख से ऊपर उठकर आत्मीय सुख की बात सोचने लगता है। इसी समझ का परिणाम होता है कि इन्द्रिय को जीतना बहुत आसान हो जाता है।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने अपनी कृति श्रमण शतक में इन्द्रिय विजय का प्रकरण कई छन्दो में ग्रहण किया है। तथा पाठकों के सामने अध्यात्म के इस पक्ष को गहराई में प्रस्तुत किया है। सर्वप्रथम चंचल मन के विषय में टिप्पणी करते हुए आचार्य श्री ने लिखा है कि कम्पायमान मन को जो रोक नहीं पाता है वह परमात्मा के प्रशस्त स्वरूप का अवलोकन नहीं कर पाता हैं। जैसे कोई अंधा व्यक्ति देख नहीं सकता है उसी तरह से इन्द्रियाधीन मन कभी भी आत्मावलोकन नहीं कर सकता है। इस संदर्भ में यह छन्द अवलोकनीय है -

बिन्धं न नीलमस्तं मनो नैमित्तिकं ये न समस्तम्।
अन्धोऽरूणं प्रशस्तं किं संपश्यति पुरुषं स तम् ॥12॥

कम्पायमान मन को जिसने न रोका आत्मा उसे न दिखता जड़ से अनोखा।
आकाश में अरूण शोभित हो रहा है, क्या अंध को नयनगोचर हो रहा है॥12॥

परम पूज्य आचार्य श्री ने जिनेन्द्र भगवान को संबोधित कहते हुए कहा है कि जिसने इन्द्रियों को जीता है उसे संसार ने यति माना है श्रद्धा के साथ में उसी के लिए सारा संसार नमस्कार करता है तथा शुद्धात्म का निरीक्षण भी इन्द्रिय विजय को करने वाला ही कर पाता है इस संदर्भ में यह श्लोक अवलोकनीय है-

यो हीन्द्रियाणि जयति विश्वयत्नेन स जायते यातिः ।

मुनिरयं तं कलयति शुद्धात्मानं च ततोऽयति ।।

जीती जिनेश! जिसने निज इन्द्रियाँ है माना गया यति वही जग में यहाँ है।
श्रद्धा-समेत उसको सिर मैं नमाता, शुद्धात्म को निरख शीघ्र बनूँ प्रमाता ।।16।।

परम पूज्य अध्यात्म सरोवर के राजहंस आचार्य श्री कहते हैं जो साधु इन इन्द्रिय रूपी हाथियों को जीत लेता है तथा अपनी आत्मा के कल्याण के लिए परिग्रहों को छोड़ जंगल में निवास करते हैं ऐसे साधु को मैं नमस्कार करता हूँ क्योंकि वह हमें जीवनदान देते हैं जैसे कोई किसान पानी से कृषि को सोचता है वैसे ही साधु अपने आत्म चक्षुओं से उसका अवलोकन करता है। उक्त संदर्भ में अधोलिखित श्लोक द्रष्टव्य है-

करणकुञ्ज रंककन्दरं स्वरससेवन-संसेवित-कन्दरम् ।

त्वा स्तुवे मेडकं दरं कलय गुरो ! दृक्कृषिकंद ! रम् ।।85।।

जो साधु जीत इन इन्द्रिय-हाथियों को आत्मार्थ जा बन बसें तज ग्रन्थियों को।
पूजूं उन्हें सतत वे मुझको जिलावें, पानी सदा दृगमयी कृषि को पिलावें ।।85।।

आचार्य श्री ने श्रमण शतक में उल्लेख करते हुए कहा कि मन चंचल नहीं होता।

कविता

रत्नत्रय के रतन बचा लो

संस्कार फीचर्स

छोड़ गये तुम सुंदर बगिया जिसके हम सब फूल हैं
याद करें गे हम सब तुमको अब श्रद्धा के फूल हैं
रत्नकरण्डक किया सुरक्षित, दर्शन ज्ञान व्रत पालके
श्रावक शिरोमणि सचमुच तुम थे, बने विजेता काल के
अमर तत्त्व मय लक्ष्य बनाया, शिवपुर उन्नत चूल है
रतनलाल हीरा मोती से, दम के चेतन गाँव में
भय दुख से विश्राम मिला अब, निजात्म आत्म की छाँव में
धर्म तीर्थ शाश्वत चेतन में, भवसागर का कूल है
अब तक भटका भोग में अटका नहीं मिला सुख धाम है
विषय भोग रावण को मारा, पाया निज शिवराग है
रत्नत्रय के रतन बचालो, यही साध्य जग भूल है

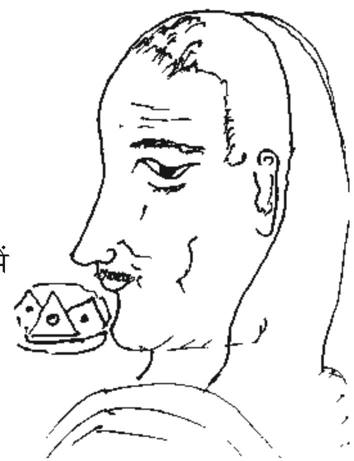

आगम की छाँव में समीक्षात्मक अध्ययन

ब्र. जिनेश मलैया (प्रधान संपादक संस्कार सागर), इंदौर

इंदौर के समाधिस्थ विद्वान रतनलाल शास्त्री के स्वाध्याय का सार आगम की छाँव में समाहित हैं । पंडित जी ने अपने जीवन काल में शताधिक ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारणियों का स्वाध्याय कराकर उन्हें जैन आगम की छाँव में बिठाकर भवरूपी तपन से बचाने का अचूक प्रयास किया है उनके इस प्रयास का परिणाम यह सामने आया बहुत भव्य जीव मिथ्यात्व की तपन से बचकर आगम की छाँव पाकर सम्यक्त्व की शीतलता प्राप्त करने में सफल हुए हैं आगम की छाँव विरले ही पुण्यात्मा जीव को मिलती है अन्यथा बहुत सारे प्रवचनकार आगम की छाँव को छोड़कर किस्से कहानी चुटकुले के मध्यम से हास्य मय भाषण करते हैं।

ब्र. रेखा जी ने आगम के बीज को वट वृक्ष का रूप देकर समस्त साधकों को आह्वान दिया कि आओ आगम की छाँव में बैठकर विषय कषाय की तपन मिटा लो। आगमिक विषयों की खींचतान वर्तमान की मुख्य समस्या है परंतु आगम की छाँव ग्रंथ का अध्ययन करके आगम का निष्पक्ष जिज्ञासु भटकन से अवश्य ही बच जाता है। प्रथम श्रुत स्कंध और द्वितीय श्रुत स्कंध परिचय प्राप्त करके जिन आगम गोता खोर सम्यक्त्व रत्नों का संकलन करने में अवश्य ही सफलता होता है।

जिन खोजा तिन पाईयां गहरे पानी पैठ ।

मैं बोरी डूबन डरी रही किनारे बैठ ।।

पंडित रतनलाल जी शास्त्री सफल शिक्षक ही नहीं अपितु सफल शोधार्थी रहे हैं उनकी अंतुर्मखी प्रवृत्ति ने उन्हें लेखन कार्य से परे रखा परंतु हम सबका सौभाग्य रहा कि विदूषि ब्रह्मचारी रेखा जी ने उनके शोध परिणाम से हम सब स्वाध्यायी जनों को अवगत कराया।

अद्भुत विवेचन शैलीः- पंडित रतनलाल जी शास्त्री विषय प्रस्तुत करने में सिद्ध हस्त थे उनके विवेचना में जहाँ सरल सुबोधता होती थी वहीं वे कठिन विषय को अनेक उदाहरणों के माध्यम से अग्रहण विषय को भी ग्राह्य बता देते थे आगम की छाँव नामक ग्रंथ के निक्षेप जैसे नीरस विषय को महावीर अग्नि मोक्ष जैने जैसे उदाहरणों के विषय को पाठक के अंदर तक प्रवेश करा दिया। द्रव्य क्षेत्र काल भाव के विषय को भी नाम उम्र योग्यता पता के माध्यम से घटित करके विषय को सुगम बनाने में चूके नहीं है। कर्म विपाकी प्रकृतियों का विभाजन करते हुए द्रव्य क्षेत्र काल भाव का विषय सहज गम्य बना दिया। तथा शरीर सिद्ध भगवान चार अनुयोग बंध निक्षेप में घटित कर अपनी शोधवृत्ति का अनूठा परिचय दिया है।

चार दान को समझाते हुए पंडित जी ने तो कमाल कर दिया 1. आहार दान= खाद्य व्यवस्था, 2. औषधिदान= स्वास्थ्य व्यवस्था 3. ज्ञानदान= शिक्षा व्यवस्था 4. अभयदान= न्याय व्यवस्था।

पूर्व भव में आहार नहीं देना दरिद्रता का कारण इस ग्रंथ में घोषित किया गया यदि स्वामि कार्तिकेय अनुप्रेक्षा दान प्रकरण स्मृति लाया जाये तो आचार्य स्वामी कार्तिकेय ने आहार दान को ज्ञान दान से श्रेष्ठ घोषित किया है। पंडित जी की विचारधारा और भी पुष्ट होगी।

उपयोग पर चिंतनः- उपयोग विषय का विवेचन दर्शन और अध्यात्म की दृष्टि से पृथक् पृथक् किया है दर्शन की अपेक्षा ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग दोनों का सटीक वर्णन किया है। अध्यात्म की दृष्टि अशुभोपयोग शुभोपयोग शुद्धोपयोग इन तीनों उपयोग के स्वरूप की आगम परिप्रेक्ष्य विवेचित किया है।

गुणस्थान की अपेक्षा तीनों उपयोगों को घटित करते हुए। आचार्य जयसेन और ब्रह्मदेव की विचार धारा का अनुकरण किया है अपना चिंतन निम्न प्रकार से रखा है।

1. प्रथम तीन गुणस्थानों मिथ्यात्व सासादन मिश्र में अशुभोपयोग ही सिद्ध किया है।

2. अविरति सम्यग्दृष्टि संयमासंयम और संयत गुणस्थानों में बढ़ते क्रम से शुभोपयोग मान्य किया है।

3.अप्रमत्त संयत अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण सूक्ष्म साम्पराय उपशांत मोह और क्षीण मोह गुणस्थानों में शुद्धोपयोग स्वीकार करते हुए। यह स्पष्ट कर दिया कि गृहस्थों एवं प्रमादियों को शुद्धोपयोग नहीं होता है।

4. शुभोपयोग सर्वथा हेय मानने वालों से भी सर्कस का उदाहरण देकर शुभोपयोग की स्वीकार्यता स्पष्ट कर दी है।

5. शुभोपयोग में संतुष्ट नहीं होने का भी संकेत दिया है।

पूर्वाग्रहों से परे निष्पक्ष विवेचना के लिए प्रसिद्ध पंडित रतनलाल जी शास्त्री ने आगम की छाँव नामक प्रवचन संग्रह ग्रंथ की नहीं अपितु रत्नों का सागर ही मोक्षमार्ग के पथिकों को दिया जिसका उपयोग करके हर स्वाध्यायी आग्रहों से परे निष्पक्ष विवेचन समझकर समाज को विवादों का जिनशासन प्रभावना में गहराई से भागीदारी सुनिश्चित कर सकता।

कविता

पूजन कर लो रे अंतरीक्ष प्रभु पार्श्व की

❋ संस्कार फीचर्स ❋

कुंदकुंद ने सुमरा प्रभु को,
विद्यानंदी स्तवन कीना मूर्ती दिगम्बर मोरी
अधर मूर्ति अतिशयकारी
सबके मन बस जाये ये गप्प नहीं है कोरी
शिरपुर आओ रे अंतरीक्ष प्रभु पार्श्व के दर्शन पाओ रे
अपनी आँखों से देखो तुम वीतरागता की मुद्रा
एक झलक पा मन हर्षता भूल ना पाता मुद्रा
हर दिन आओ अंतरीक्ष प्रभू पार्श्व की द्वार पे आओ रे
कुंदकुंद ने मूर्ति निहारी जय जय कार कराया
विद्यानंद ने स्तुति करके मत मिथ्यात्व मिटाया

तिगड़म है (तिकड़म) दुःखदायी

तारादेही

कोई व्यक्ति जो अपना इष्ट फल चाहता हो और वह उसे दिख रहा है, तो बहुत रोमांस होता है। अभी मात्र दिख रहा है, मिला नहीं हैं, मिला नहीं है, मुँह में पानी आ जाता है। जब प्राप्ति नहीं होती है तब तक प्राप्ति की इच्छा होती है। प्राप्त नहीं होता तो पहले मुँह में पानी आया था, अब आँखों में पानी आ जाता है गया हाथ से वह फल।

पूजन में जन्म जरा मृत्यु विनाश के लिये जल का मंत्र बोला गया। जनम नहीं हुआ-सब रोते रहते हैं। महाराज आशीर्वाद दें बस संतान हो जाये। तीन अलग-अलग से लगते हैं, इन्हें तापत्रय कहते हैं पर तीनों एक है। गुरुजी- इन्हें तिगड़म कहते हैं। राजस्थान में तिगड़म शब्द चलता है इन तीनों से तिगडम से अच्छे-अच्छे नहीं बच पायें। समाधान नहीं है। है पर हम उसे स्वीकारते ही नहीं हैं। मन-वचन-काय से यह व्यवधान है, दुःख है। समाधान नहीं है-ऐसा दृढ़ श्रद्धान होना चाहिये। श्रद्धा कैसे करे। दिख तो रहा है पोषाक फिर शोषक कैसे माने। आँखों के आगे मोह का पर्दा आ जाता है तो सही दिखता ही नहीं है। संसार तो भरा हुआ है, फिर आप कह रहे कि खाली है, तिगड़म है, दुःखदायी है। मोही व्यक्ति कहता है कि महाराज हमें तो आपके वचनों में ही तिगड़म लगती है। क्या वास्तव में ऐसा ही है क्या ? दृष्टि में जब स्थिरता आ जाती है, तो हम कुछ पहुँच सकते हैं, वहाँ पर।

कुछ पीलिया हुआ अब पांव आडे-तिरछे रखने लगा, ऐसा ही मोह का नशा है। जो अपने में स्थिर हो वो चले गये, अस्थिर वाले हम यहीं पर हैं। जब कभी भी हम स्थिर होना चाहेंगे तो धीरे-धीरे आत्मा ऐसे ही संस्कार को लाना जरूरी है, पर इसे आसान मत समझना। विद्यार्थी समझता है मैंने तो पूरा पढ़ लिया। परायण कर लिया पर परीक्षा के समय पेपर देखते ही-अरे ! ये तो बहुत कठिन है। ऊपर-नीचे अभी प्रश्न देखता है। अब मन को समझाता है, उसकी मन में स्थिरिता है तो मन से कहता है, मुझे इसी परीक्षा में नहीं रहना, सारी कक्षायें पास की- ये भी पास करना है, घर पर और भी काम था- वो छोड़ा क्यों मुझे पढ़ना है। यदि छोड़ दूंगा तो और अधिक कठिनाई हो जायेगी।

मन वाला होता है, वह मतवाला हो जाता है। आप सब लोगों के सामने भी पेपर है। मतवाला नहीं कमतवाला बनों। उस मन को कीमतवाला बनाकर रखो मतवाला नहीं। अभी एक शहर का बालक पंकज-पारस का बेटा, दिल्ली, बोली बोल रहा था। सामने वाला ही आगे बढ़ पाता है। कितनी समझता है, जितनी बार समझाओं उतना ही कम है। कुछ लोग कह रहे हैं, ये सब सपना सा लग रहा। मुकाम नहीं किया कभी, परंतु 10-15 दिन भी सपना ही है।

जब तक पूर्ण विकास न हो यही काम में आयेगा। तीन प्रकार से पानी को हमेशा याद रखना-मुख पानी, आँख में पानी एवं मृत्यु पर पानी।

हरिवंशपुराण में जम्बूद्वीप

❊ डॉ. सनत कुमार जैन ❊

मैं हरिवंशपुराण का स्वाध्याय कर रहा हूँ। स्वाध्याय के दौरान मुझे पुराण के पांचवें सर्ग में दो जम्बूद्वीप का वर्णन हुआ है। जिसका उद्धरण मैं इस लेख में कर रहा हूं जो कि निम्न अनुसार है।

संख्येयद्वीपर्यन्तो जम्बूद्वीपसमोऽपरः ।
विजयस्य पुरं तत्र पूर्वस्यों दिशि शोभते ।।397।।

संख्यात द्वीपों के अनन्तर जम्बूद्वीप के समान एक दूसरा जम्बू द्वीप उसकी पूर्व दिशा में विजय द्वार के रक्षक विजय देव का नगर सुशोभित है। 397 ।। वेदिका से युक्त वह नगर बारह योजन चौड़ा है, चारों दिशाओं के चार तोरणों से विभूषित सब और से सुन्दर और आश्चर्य उत्पन्न करने वाला है।।398।।

उस नगर के चारों ओर एक प्राकार है, उसका विस्तार अग्र भाग में एक धनुष के आठ भागों में तीन भाग तथा मूल में उससे चौगुना है। इस प्रकार की गहराई आधा योजन है ।।399 ।। ऊँचाई साढ़े सैंतीस योजन है और इसकी प्रत्येक दिशा में पच्चीस-पच्चीस गोपुर हैं ।।400।। प्रत्येक गोपुर की ऊँचाई इकतीस योजन एक कोश है, चौड़ाई उससे दूनी है और गहराई आधा योजन प्रमाण है ।।401।। उन गोपुरों पर सत्रह-सत्रह खण्ड के भवन बने हुए हैं। ये भवन सब प्रकार के रत्नों से व्याप्त तथा स्वर्णमय हैं।।402।। गोपुरों के मध्य में देवों के उत्पन्न होने का स्थान है जो एक कोश मोटा और बारह योजन चौड़ा है।। 403।। उस उत्पत्ति स्थान के चारों ओर एक वेदिका है जो पाँच सौ धनुष चौड़ी, दो कोष ऊँची और चार तोरणों से युक्त है।।404।।

उस नगर के मध्य में एक विशाल भवन है जो प्रमाण में गोपुर के समान ही हैं और उसका दरवाजा आठ योजन ऊँचा चार योजन चौड़ा तथा विजय नामक देव के द्वारा सेवित है ।।405।। उस भवन के द्वार का तोरण हीरे का बना है तथा स्वर्ण और रत्नमय उसके किवाड़ हैं। उसकी चारों दिशाओं में उसी के समान विस्तारवाले और भी अनेक भवन बने हुए हैं।।406।। दूसरे मण्डल में उन भवनों की चारों दिशाओं में उन्हीं के समान विस्तार वाले, रत्नों के दैदीप्यमान भवन बने हुए हैं ।।407।। तीसरे मण्डल में भी इसी प्रकार भवनों की रचना है परंतु उनका प्रमाण पूर्व प्रमाण से आधा है। चौथे मण्डल की चारों दिशाओं में जो भवन-रचना है वह तीसरे की मण्डल भवन-रचना के समान है।।408।। पांचवे मंडल में जो भवन है वे चौथे मंडल के भवनों से अर्ध प्रमाण हैं और छठे मण्डल के भवन पांचवें मण्डल के भवनों के साधन हैं ।।409।। आदि के दो मण्डलों में उत्पत्ति स्थान की वेदिका के तुल्य वेदिका है और उसके आगे दो-दो मण्डलों की वेदिकाएँ पूर्व-पूर्व वेदिका के प्रमाण से आधी-आधी विस्तार वाली जानना चाहिए।।410।।

बीच के भवन में चमर और सफेद छत्रों से युक्त विजयदेव का उत्तम सिंहासन है। उस पर वह विजयदेव पूर्वाभिमुख होकर बैठता है।। 411।। उसकी उत्तर दिशा मे छह हजार सामानिक देव बैठते हैं। तथा आगे और दो दिशाओं में छह पट्टदेवियाँ आसन ग्रहण करती हैं।। 412।। पूर्व - दक्षिण-आग्नेय दिशा में आठ हजार उत्तम पारिषद देव बैठते हैं। मध्यम परिषद् के दश हजार देव दक्षिण दिशा में स्थित होते हैं। बाह्य परिषद् के बारह हजार देव, पश्चिम-दक्षिण-नैऋत्य दिशा में आसनारूढ़ होते हैं और सात सेनाओं के बहत्तर देव पश्चिम दिशा में आसन ग्रहण करते हैं ।।413-414।। चारों दिशाओं में अठारह हजार अंग-रक्षक रहते हैं और चारों दिशाओं में उतने ही उनके भद्रासन हैं।।415।। विजयदेव के अठारह हजार परिवार देव हैं। इन सबके द्वारा सेवित होता हुआ वह कुछ अधिक एक पल्य तक जीवित रहता है।। 416।। विजयदेव के भवन से उत्तर दिशा में एक सुधर्मा नाम की सभा है जो छह योजन लम्बी, तीन योजन चौड़ी नौ योजन ऊँची और एक कोश गहरी है।।417।। सुधर्मा सभा से उत्तर दिशा में एक जिनालय है जिसकी लम्बाई-चौड़ाई आदि का विस्तार सुधर्मा सभा के समान है। पश्चिमोत्तर दिशा में उपपार्श्व सभा है ।।418।। उसके आगे अभिषेक सभा, उसके आगे अलंकार सभा, और उसके आगे व्यवसाय सभा है। से सब सभाएँ सुधर्मा सभा के समान हैं ।।419।। विजयदेव के नगर में सब मिलाकर पाँच हजार चार सौ सड़सठ भवन हैं।।420।।

विजयदेव के नगर से बाहर पच्चीस योजन चलकर पूर्वादि दिशाओं में चार वन है।। 421 ।। उनमें पहला अशोकवन, दूसरा सप्तवर्णवन, तीसरा चम्पकवन और चौथा आम्रवन है।।422।। ये वन बारह योजन लम्बे और पाँच सौ योजन चौड़े हैं। इन वनों के मध्य में क्रम से अशोक, सप्तवर्ण, चम्पक और आम के प्रधान वृक्ष हैं। इन वृक्षों की पीठिका जम्बू वृक्ष की पीठिका से आधी है तथा इनका निज का विस्तार जम्बू वृक्ष से आधा है ।।423-424।। उन चारों वनों की चारों दिशाओं में यथायोग्य अशोकादि देवों के द्वारा पूजित जिनेन्द्र देव की रत्नमयी चार प्रतिमाएँ हैं ।। 425।। अशोक वन की उत्तर-पूर्व दिशा में अशोकपुर नाम का नगर है इसमें अशोक नामक देव का भवन है जिसका विस्तार विजयदेव के भवन के समान है।।426।। सप्तवर्ण वन की पूर्व-दक्षिण दिशा में सप्तवर्णपुर है उसमें पूर्व प्रमाण को धारण करने वाला सप्तवर्ण देव का भवन है।।427।। चम्पक वन की दक्षिण-पश्चिम दिशा में चम्पक देव का चम्पकपूर और आम्रवन को पश्चिमोत्तर दिशा में आम्रदेव का आम्र नगर है।।428।। वैजयन्त आदि तीन देव दक्षिणादि दिशाओं में बने हुए नगरों के स्वामी हैं तथा अपने भवन वायु और परिवार आदि की अपेक्षा विजयदेव के समान हैं।।429।। इस प्रकार जम्बूद्वीप का वर्णन किया है। अब लवण समुद्रा का वर्णन करते हैं।

उपरोक्त वर्णन के अनुसार अढ़ाई द्वीप के नक्शे में दूसरे जम्बूद्वीप की स्थिति दक्षिण दिशा में दर्शाई गई है क्योंकि इस वर्णन मे जम्बूद्वीप के पूर्व दिशा में विजयदेव नगर स्थित है, ऐसा कहा गया है। इन विजयदेव नगर का वर्णन ऊपर विस्तार से दिया गया है। जबकि इस दूसरे जम्बूद्वीप के विषय में आचार्य श्री ने इतना ही लिखा है कि यह प्रथम जम्बूद्वीप के समान है। यह शोध का विषय है कि इस दूसरे जम्बूद्वीप का विस्तार, रचना ही प्रथम जम्बूद्वीप के समान है या कि इस दूसरे जम्बूद्वीप में जीवन है या नहीं। वर्तमान में कभी कभी एलियंस, उड़ान तश्तरी, चंद्रमा की चट्टान, मिट्टी आदि के विषय में जानकारियां प्राप्त होती रहती हैं, तो क्या उनका इस दूसरे जम्बूद्वीप से कोई संबंध है ?

द्रव्य लिंगी मुनि का स्वरूप व प्रकार

❊ पं. विजय कुमार जैन शास्त्री, शाहगढ़ ❊

साधु आदि के बाह्य वेष को लिंग कहते हैं। जैनाम्नाय में वह तीन प्रकार का माना जाना गया है साधु आर्यिका व उत्कृष्ट श्रावक ये तीनों ही द्रव्य व भाव के भेद से दो प्रकार के हो जाते हैं। शरीर का वेष द्रव्य लिंग है और अंतरंग की वीतरागता भाव लिंग है।

द्रव्य लिंगी मुनि 28 मूलगुणों का निर्दोष पालन होता है पूजा ख्याति लाभ की अंश मात्र की लालसा नहीं होती बाह्य से कोई परिग्रह नहीं होता और (पिच्छि, कमंडल, शास्त्र के अलावा) अंतरंग में भी कोई परिग्रह नहीं होता सकल संयम होता है ये मुनि वंदनीय पूजनीय होते हैं। जहाँ भाव लिंग है वहां द्रव्य लिंग भी होता ही है।

द्रव्य लिंगी मुनिः बाह्य में 28 मूलगुणों का पालन हो पर अंतरंग में परिग्रह होता है ये मुनि उस फल की तरह होते हैं जिसके छिलका तो फल का होता है पर अंदर का फल (गरा) नकली होता है ऐसे मुनि के गुणस्थान 5 या 4 के नीचे हो जाते हैं मात्र बाह्य से 28 मूलगुण हैं ऐसे मुनि या उनके मूलगुण वंदनीय नहीं क्योंकि भाव लिंग के बिना 28 मूलगुण सम्यक नहीं और मोक्ष के कारण नहीं।

द्रव्यलिंगी मुनि के अनंतानुबंधी, अप्रत्यख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कषाय, तीनों का अनुदय हो और संज्वलन कषाय के देशघाती स्पर्धकों के उदय में जो आत्मा की विशुद्धी होती है, उनके छठा प्रमत्तविरत गुणस्थान होता है। छठे गुणस्थान को अंतरंग स्वरूप है बहिरंग में जिन्होंने पाँचों इन्द्रियों को जीत लिया है, आरंभ तथा परिग्रह से पूर्णतया रहित है, रंचमात्र भी परिग्रह नहीं रखते हुए ज्ञान, ध्यान और तप से लीन रहते हैं। ऐसे मुनिमहाराज छठे, प्रमत्तविरतगुण स्थानवर्ती 28 मूलगुणों के धारक होते हैं। यद्यपि प्रमत्तविरत में आचार्य, उपाध्याय, साधु सभी होते हैं, किन्तु यदि सामान्य साधु की परिभाषा पर विचार करें तो उनके 5 महाव्रत, 5 समिति, पंच इन्द्रियजय, 6 आवश्यक, 7 अन्य शेष गुण, 28 मूलगुण होते हैं। इन गुणों के धारक मुनिराज प्रमत्तविरत, छठे गुणस्थानवर्ती होते हैं। मुनि, द्रव्यलिंगी अर्थात बाह्य वेष और भावलिंगी आंतरिक परिणामों से दो प्रकार के होते हैं।

जिन मुनियो के आत्म परिणामों में अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण तीन के अनुदय और संज्वलन कषाय के देशघाती स्पर्धकों के उदय वश, विशुद्धि है उन्हें भावलिंगी मुनि कहते हैं। किन्तु जिनके आतंरिक परिणाम ऐसे नहीं है उन्हें द्रव्य लिंगी मुनि कहते हैं। अर्थात् जो बहिरंग में 28 मूलगुणों का पूरा पालन करते हैं किन्तु आंतरिक परिणाम अनुकूल नही हैं वे द्रव्यलिंगी मुनि हैं। छठे गुणस्थानवर्ती मुनिराज

भाव और द्रव्य दोनों से ठीक होते हैं अर्थात् उनके आंतरिक परिणामों की विशुद्धि अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण तीन के अनुदय और संज्वलन कषाय के उदय के कारण हैं और बहिरंग में भी 28 गुणों का भी पालन करते हैं उन्हें छठे गुणस्थानवर्ती मुनिमहाराज कहते हैं।

प्रमाद- छठे गुणस्थान में मुनि प्रमाद सहित होते हैं। प्रमाद के आचार्यों ने 15 भेद, 4 विकथा, 4 कषाय, 4 इन्द्रिय के विषय, निद्र और स्नेह/ प्रणय बताये हैं। जिन मुनिमहाराजों ने पांच पापों का पूर्णतया त्याग किया है किन्तु इन 15 प्रकार के प्रमादों को कथित, कदाचित लगे रहते हैं उन्हें प्रमत्तविरत मुनिराज कहते हैं। ऐसा प्रमाद, संज्वलन कषाय के तीव्र उदय से होता है।

सप्तम गुणस्थान से संज्वलन कषाय का मंद उदय रहने के कारण 15 प्रकार का प्रमाद नहीं होता इसलिए मुनि महाराज अप्रमत्तविरत अर्थात् अप्रमादी होते हैं, उनका चिंतवन आत्मा की ओर रहता है।

आगमानुसार पंचम काल के अंत तक छठे और सातवें गुणस्थानवर्ती मुनि महाराज का सद्भाव रहेगा किन्तु ऐसे साधु बिरले होंगे ! वर्तमान में 1400 पिछियाँधारी, मुनिराज और आर्यिका माताजी हैं, उनमें से बिरले मुनि महाराज, जिनका आचरण आगमानुकूल है भाव लिंगी साधु अवश्य होंगे कुछ लोग वर्तमान में मुनियों का अभाव मानते हैं, सच्चे मुनि हैं ही नहीं हम किसकी वंदना करे ? ऐसे लोग मिथ्यादृष्टि हैं।

वर्तमान में भी ऐसे मुनि महाराज हैं जिनकी चर्या, आगमानुसार है ! उनकी वीतरागता, वैराग्य कूट-कूट के भरी है ! अतः भावलिंगी मुनि बहुत थोड़े हैं ऐसे मान्यता रखनी चाहिए।

यह कथन आगमानुकूल है।

यदि साधु के 28 मूलगुणों में से एक भी कम है तो उनका छठा गुण स्थान होगा क्या ?

नहीं, छठा गुणस्थान नहीं होगा। उदाहरण के लिए कोई मुनिराज ए.सी., कूलर में रह रहे हैं तो उनका अहिंसा महाव्रत का पालन नहीं होगा इसलिए उनका छठा गुणस्थान नहीं होगा।

जो अपने शरीर से रागवश गर्मी सहन नहीं कर सकते, उनके छठा गुणस्थान है ही नहीं, उनके सम्यक्त्व है या नहीं पर भी प्रश्न चिन्ह लगेगा। छठे गुणस्थान के लिए 28 मूलगुणों का पालन अत्यंत आवश्यक है व्रतों के पालन से कथित कदाचित दोष के लिए प्रतिक्रमण प्रायश्चित नित्य लिए जाते हैं। ये तो पुलाक-वकुश आदि मुनियों में भी लगते हैं। इसमें आपत्ति नहीं है। किन्तु जो नित्य प्रतिदोष लगाते हैं वे दोष लगाने में अभ्यस्त हो गए हैं जिन्हें आगम की चिंता ही नहीं है, उनके छठा नहीं पहला ही गुणस्थान है।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद
(पंडित श्री रतनलाल जी)

आदरणीय पंडित प्रवर श्री रतनलाल शास्त्री, जिन्होंने आत्मानंद नाम पाया। आत्माराधना सह चार आराधनाओं को चरितार्थ किया।

आत्मविश्वास, तत्वश्रद्धा व शुद्धात्मा की भावनामय दर्शनाराधना को दृढ़ता से जिया। असाध्य रोग के बाबजूद मेरूवत् अटल रह रोग का प्रतिकार औषधोपचार नहीं, ज्ञानाराधना के बलबूते असहनीय पीडा सह रोग परीषह सहन करते अपनी दैनिक चर्या में बड़े चौकन्ने रहे।

आचार्य पूज्य कुंदकुंद देव की सीख रेखांकित की

जिणवयण मोसहमिणं विसयसुहविश्येणं अमियभूदं
जरमरणबाहिहरणं, खचकरणं सव्वदुक्खाणं।

जिनवचन को सर्वरोग हर औषधमान सेवन किया, विषयसुख से विमुख रह उनके विवेचन में रह रहे ही ज्ञानाराधना इनके दुखों के क्षय में सहायक होगी। जिनका स्वावलंबन गुण तो प्रशंसनीय अनुकरणीय व प्रेरक है। वह कहते- मैं इन्द्रभवन (वैराग्यभवन) में चन्द्रप्रभ भगवान्, समवशरण मंदिर में शांतिनाथ भगवान की शरण मैं हूँ, इनके पास मुझे अपारशांति व वेदना में कमी लगती है। एकाकी रहे।

प.पू. आ. विद्यासागर जी महामुनिराज जी से 1987 टड़ा ग्राम में दर्शन व व्रत प्रतिमा रूप 12व्रतों को अंगीकृत किया। जिन्दगी के पश्चिम भाग में वर्तमान नवाचार्य प.पू.आ. समयसागर जी मुनिराज से अनुमति त्याग दसवीं प्रतिमा तक के व्रत धारण कर तपाराधना को लिया।

तीन शाखा के दशलक्षण धर्म, अष्टान्हिक, अष्टमी चतुर्दशी आदि पर्वों में अनशन अवमौदर्य, रस परित्याग आदि तपाराधना की चौ आराधन की फलश्रुति में अंत में

त्यागूं आहार पानी, औषध विचार अवसर
टूटे नियम न कोई, दृढ़ता हृदय में लाऊँ।

क्रमशः आहार, अन्न दूध आदि का त्यागकर 14 दिन जलाहार करते अंत में ॐ नमः सिद्धेभ्यः को बोलते हुए देह का परिवर्तन किया। समस्त विद्वतवर्ग को एक अनुकरणीय आदर्श बने। भेदाभेद रत्नत्रय की भावना करने वाले ये भव्यात्मा अपने सिद्ध बनने के साध्य को शीघ्र साधे, यही मंगल शुभभावना।

- ब्र. किरण गोदरे

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद
(पंडित श्री रतनलाल जी)

संसार में गुरु कृपा सबसे निराली होली यही दशहरा यह ही दिवाली।
जो शिष्य है वह सदा ही ऋणी रहेगा निर्वाण प्राप्त करके ऋण ये चुकेगा।।

स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते

यह युक्ति पंडित जी के जीवन में पूरी तरह घटित होती है, आचार्य भगवन समयसागर की असीम कृपा से 10 प्रतिमा के व्रत लेकर स्वयं को आत्मानंद बना दिया और आप सभी विद्वानों के पथ प्रदर्शक बन गये आप आगम अध्येता अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आत्म साधना रत, कर्मठ लगन शील, धर्मोपदेशक थे, किसी ने ठीक ही कहां है सागर के पास गहराई होती है पर ऊंचाई नहीं , पर्वत के पास ऊंचाई होती पर गहराई नहीं , पर श्रद्धेय पंडित जी के पास ज्ञान की गहराई और आचरण की ऊंचाई का युगल संयोग देखने को मिला। मुझे भी आपके पास पढ़ने का सौभाग्य मिला आपके जीवन को निकटता से देखा, बस आपको देखकर ऐसा लगता था, ऐसा ज्ञान, तप सरलता सहजता हमारे अंदर कब आयेगी, आपने हम सभी को शिक्षण ही नहीं अपितु शिक्षा की शैली दी उदाहरण चिंतन के माध्यम से पृच्छना स्वाध्याय से सभी को निष्णात बनाया, सारे त्यागी व्रती आपके माध्यम से देश विदेश में प्रभावना कर रहे हैं।

18 मार्च संल्लेखना के समय मैने कहा पंडित जी के आशीर्वाद स्वरूप अच्छे कार्य के लिये 101 रूपये आपसे लूंगी उन्होंने बड़ी सहजता से कहाँ मैं 1001 रूपये दूंगा खुशी से आंसु धलक गए। गिरते हुए स्वास्थ्य को देखकर कहा पंडित जी हम तो आपके कारण आये थे आप ही जीव रक्षक, धर्म रक्षक हैं, आपके बिना हमारा क्या होगा आशीर्वाद देते हुए कहां सब सिद्ध हो जाओ यही मेरी भावना है 10 मार्च को थोड़ा स्वस्थ्य प्रतिकूल रहा ऊपर शांतिनाथ भगवान के पास लेट गये, पीछी कमण्डल रख लिए, आचार्य श्री का फोटो सामने रखवा लिया, और बोले ओम नमः सिद्धेभ्यः का जाप करो समाधि अच्छी होगी, करोड़ो जाप हुआ, उसी जाप का फल है अंत समय ओम नमः सिद्धेभ्यः के साथ इस देह का परिवर्तन हुआ, हम सभी इस दृश्य के साक्षी बने मेरे लिये ऐसे सदाशय धार्मिक प्रतिभा सम्पन्न महामना का वर्णन करना गूंगे की मिठाई के समान है, वे अणोरणीयन महतो महीयान के समान हैं। आपकी सरलता तथा गुण गाम्भीर्य देखकर पूज्य वर्णी जी का दर्शन हो जाता था इस प्रसंग पर बॉम्बे से आये चेतन भैया ने भी 20 दिन पंडित जी की वैयावृत्ति की हमारी सज्जन आंखे आपको सब जगह ढूढ़ती है, आपके द्वारा किये उपकार को कभी नहीं भुलाया जा सकता, इस अमृतांजली के सुअवसर पर कोटिशः इच्छामिः।

- ब्र. मीना दीदी, सागर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद
(पंडित श्री रतनलाल जी)

पंडित श्री रतनलाल जी साहब 10 प्रतिमा के धारी, जिन्हें आचार्य समयसागर जी महाराज ने श्री आत्मानन्द जी नाम से सुशोभित किया, सन् 1956 में हमारे दादी साहब स्वर्गीय चंदा बाई सा. आनंद भवन के आग्रह पर, मलकापुर पंचकल्याणक के समापन के बाद साथ में इंदौर ले आये थे और इंदौर श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम में रहने लगे थे। धीरे-धीरे पंडित जी साहब इन्द्रभवन मंदिर स्वाध्याय स्थल पर सेठ साहब की बैठक में व सेठानी साहब के समक्ष प्रवचन व स्वाध्याय करने लगे थे। ऐसा पं. जी ने बताया था।

पंडित जी साहब की भोजन व्यवस्था की जिम्मेदारी आनंद भवन वाले मा.सा. चन्दाबाई सा. ने संभाली और अपने जीवन पर्यन्त सौद के चौके में भोजन कराया।

पंडित जी साहब प्रतिदिन भोजन से पहले हम बच्चों को जैन धर्म के बेसिक मर्म को समझाते थे और हमें पूरे संस्कार दिये, जिससे हम आज धर्म के मार्ग पर चलने में समर्थ हैं।

पंडिज जी साहब अति विनम्र, निश्चल, निष्काम, निरभिमान सौम्य प्रकृति के संतोषी प्राणी थे।

उनके मुखमंडल पर कभी क्रोध व अभिमान नहीं देखा। वे त्याग की मूर्ति, समता की जीवन्त तस्वीर, विशाल हृदय धार्मिक श्रद्धा ज्ञान की खान थे।

इतना ही नहीं पंडित जी साहब ने अपनी विलक्षण बुद्धि से इस आश्रम में निवासरत दीदीयों को पढ़ाया, प्रवचन देने की कला सिखाई, आगम की गहराई को समझाया, उनकी प्रतिभा को जगाया, यही कारण है कि यहाँ की दीदीयाँ दूर देश में जाकर, विधान, प्रवचन देने में आज समर्थ हैं सक्षम हैं।

उनमें साधुता झलकती थी। वे सरल, निस्पृह और मन्द कषाई थे। वे हमारे प्रेरणा स्त्रोत थे। उनकी क्षतिपूर्ति असंभव है।

मैं अपनी ओर से व अरविन्द, अम्बरीष, सुशील, योगेन्द्र सेठी समस्त आनंद भवन परिवार की ओर से विनम्र भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

- अरूण सेठी, आनंद भवन इंदौर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद
(पंडित श्री रतनलाल जी)

श्री आत्मानंद जी आदरणीय पंडित साहब जी हमे 1981 से उनका सान्निध्य प्राप्त हुआ बहुत सरल स्वयं श्रुत के भंडार पंडित जी का हमारे जीवन में उनका बहुत उपकार है, तन मन धन से शिखर जी की 108 वंदना जो मैंने की उसमें 45 वंदना का तो पंडित के सान्निध्य में उनके साथ करी। पहले समय में 1982 में यात्रा, पहाड़ की वंदना रात को 12 बजे निकलते थे। और जब वंदना करके आते तो बहुत थक जाते थे, फिर रात 12 बजे वंदना करने के लिये जाने का समय पर पंडित साहब हमें अपने बच्चे के समान प्यार से जगाते थे और वंदना के लिये हमे बड़े प्रोत्साहित करते थे। और अपने साथ वंदना के लिए ले जाते थे इस प्रकार उनके साथ 45 वंदना हुई बाकी की वंदना सरोज दीदी के साथ हुई। पंडित साहब हमको भेद संग्रह याद कराते थे। जब हमें उनको याद करके सुनाते तो हमको 50 रूपये आदि देकर उत्साह बढ़ाते पंडित साहब ज्ञानदान का हमारे ऊपर बढ़ा उपकार है। बड़ी-बड़ी बातों को सरल तरीके से समझा देते थे विषय सरल हो जाता।

वह हमें मंडल विधान बनाने में भी बड़े प्रोत्साहित करते थे हर मंडल जो बड़े ध्यान से देखते थे आश्रम में वृद्ध बाई जी की सेवा के लिये हमें प्रोत्साहित करते थे बच्चों को पाठशाला में पढ़ाने को हमें प्रोत्साहित करते थे हमारे ऊपर उनका बहुत उपकार है। उनकी समाधि के समय जब ब्र. भैया जी सेवा करते तो ऐसा लगता था जैसे लौकान्तिक देव उनकी समाधि की सराहना कर रहे हैं। ब्र. दीदीयाँ पास बैठती तो ऐसा लगता जैसे 56 कुमारी देवियाँ सेवा कर रही। जब उनका डोला निकल रहा था, गाजे बाजे व गजरथ के साथ तो ऐसा लग रहा था जैसे देवगण उनको लेने आये हैं। ऐसी समाधी का माहौल मैंने पहली बार देखा। इसी भावना के साथ हमारी भी इस तरह समाधि हो यही श्रद्धांजली

- ब्र. उर्मिला दीदी , अधिष्ठात्री उदासीन श्राविकाश्रम, इंदौर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद
(पंडित श्री रतनलाल जी)

परम श्रद्धेय, जिनवाणी उपासक, देव शास्त्र गुरु के प्रति अगाध भक्ति रखने वाले आराधक पूज्य पंडित साहब आत्मानंद जी के चरणों में हम सबका नम्रीभूत होकर प्रणाम, इच्छामि, इच्छामि इच्छामि।

जिनके गुणों की सुरभि फैलीहै चहुँओर, जिनके शान की किरणें बिखरी हैं चहुँओर,
जिनके आचरण का यशगान करें दिशाएँ, जिनकी विनम्रता का परिचय है उनकी वाणी।

आत्मा को लक्ष्य बनाकर जिनने की है साधना, हर चर्या, हर क्रिया में अहिंसा की है पालना, बस एक ही सार उपदेश का भावना रखो उत्तम से उत्तम लगता नहीं है कुछ भी इसमें न खर्च हो, रत्ती भर धन, हर अनुयोग में निष्णात, रग-रग में बसा है पद्म पुराण कोई कर सकता है भला पाँच मिनट में समयसार का गान, अनेक गुण जिनमें भरे, जो है रत्नों के भंडार

ऐसे गुरु का हेम-सुमत कैसे करें गुणगान,
गुरुवर आपके चरणों में शत-शत प्रणाम।

हम अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानते है जिनको कि पूज्य पंडित साब का इतना सान्निध्य मिला है। यह मलाल जरूर रहेगा कि जितना उनसे लेना चाहिये था उतना ले नहीं पाये पर जितना भी सुना, सीखा, बस उनके बताए मार्ग पर उनकी ही तरह चलने का प्रयास करेंगे यही हमारी सच्ची श्रद्धांजली होगी ! मेरे एवं मेरे समस्त परिवार एवं समस्त महिला वर्ग की ओर से गुरुवर के चरणों में विनयांजली। **-श्रीमति हेमा लुहाडिया**

आदरणीय पंडित जी साहब श्री आत्मानंद ने अपना जीवन सारे संसार के उपकार में लगाते हुए अंत में अपने आत्मा का वह उपकार किया जो उस आत्मा ने किसी भव में शायद न किया हो ऐसी उत्कृष्ट 14 दिन की सल्लेखना समाधिमरण किया। वह भी विषम परिस्थिति में असाता के तीव्र उदय में जबकि समाधि मरण में कहा है कि रोग जनित पीड़ा मत होवे, अरू कषायमत जागे।

फिर भी उन्होंने रोग और कषाय को शमन करके जो आत्मा का उत्थान किया वह सराहनीय है।

पंडित जी साहब ने निःस्वार्थ भाव से उल्लास के अलावा जो भी ओवर टाइम में पहुँचा उसे भी निराश नहीं किया हमारे सिर में दर्द हो जाता है तो 4 पूजा की जगह 2 पूजायें करते हैं मगर पंडित जी साहब इतनी वेदना होने पर उन्होंने एक घंटे की जगह डेढ़ घंटे स्वाध्याय करने लगे थे।

- ब्र. कल्पना दीदी इंदौर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद
(पंडित श्री रतनलाल जी)

मत कहो कि दिन अपने खराब है काँटों के बीच घिर गये समझो गुलाब है।

ऐसे ही विषम परिस्थितियों में अनेक संघर्षों के साथ आपने अपने आत्मबल प्रखर ज्ञान के द्वारा आश्रमस्थ बहनो की प्रगति के लिए समर्पित रहें। ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व के धनी पं. श्री रतनलाल जी शास्त्री जिनके सान्निध्य में आश्रम की ख्याति में चार चाँद लग गए आपने माँ जिनवाणी की सेवा में सारा जीवन लगा दिया आपसे हर संघों के त्यागी व्रती भाई बहनें ही क्या साधु संत साध्वियाँ धर्माराधना और जिज्ञासा समाधान करते थे त्यागी व्रती आपसे शिक्षण अध्ययन कर अनेक जगह देश विदेश जाकर, शिविर, विधान, प्रवचन के माध्यम से इन्दौर आश्रम का नाम रोशन करते थे। जैन जगत के अद्वितीय रत्न श्रद्धेय पंडित जी साहब के उपकार को इन्दौर आश्रम की समस्त श्राविकायें बहनें कभी नहीं विस्मृत कर सकती हैं जब चिन्तन करते थे तो आत्मा में लीन जब कर्त्तव्य का पालन करते तो सभी बहनों को अर्थ सहयोग (बहन जी लीला बाई के माध्यम से करते थे)

-ब्र. सुनीता दीदी गढ़ी

सत्य की प्रभावना तभी होगी जब हम स्वयं अपने जीवन को सत्य मय बनायेंगे हमारे पंडित जी साहब के सरल-सहज व सजगता के दूर-दर्शी सहयोग से ही आश्रम में सजीविता आ सकी उनका जीवन अनुकरणीय ही नहीं बल्कि परम उपकारी रहा। जिनके अंदर मां की ममता पिता का प्रेम भरा ऐसे पं. श्री आत्मानंद आत्मरूपी बगिया को पुष्पित पल्लवित करने वाले पंडित जी साहब के व्यक्तित्व को लिखना नहीं जीवन में हमें लखना है उनका आचरण हमारे जीवन में भी अग्रिम रहे अपनी साधना करते हुए जिस प्रकार जीवन को मंदिर बनाकर कलशा रोहण (समाधि रूपी कलशा रोहण किया हम भी अपने जीवन को चरित्र की बगिया से महकाएं ऐसी भावना सहित धर्म में कभी भी कमी नहीं की हमारी तकलीफ बढ़ती है हम पांच पूजा की जगह एक पूजा करते हैं परंतु पंडित साहब को जब जब तीव्र वेदना हुयी उन्होंने अपना उपयोग दो की जगह चार घंटे धर्म ध्यान में लगाया।

-ब्र. संगीता दीदी, अनंतपुरा

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद
(पंडित श्री रतनलाल जी)

दुनिया में जन्म तो लेते हैं बहुत
पर पूज्यनीय, वंदनीय, बनता है कोई-कोई
गुलशन में फूल तो खिलते हैं बहुत,
पर पं. रतनलाल जी जैसा महकता है कोई-कोई

यू तो पंडित जी साहब किसी पहचान के मोहताज नहीं थे पूरे भारत वर्ष में ही नहीं अपितु विदेश में भी जिनकी ज्ञान के चर्चे होते थे हो रहे हैं।

जन्म भूमि राजस्थान रही, कर्म भूमि मध्य भारत इंदौर और संयम से निज को श्रृंगारा ऐसी सौभाग्यशाली भूमि रही बुंदेलखण्ड की पावन धरा जिला सागर, ग्राम टड़ा (म.प्र.) में 1983 में आचार्य भगवन संत शिरोमणी विद्यासागर जी महाराज से संयम को धारण किया मेरे शरीर को जन्म दिया उसी भूमि ने पर पंडित जी साहब ने संयम से तन का श्रृंगार किया उसी भूमि पर और अनेकानेक महाव्रतियों को अणुव्रतियों की सुधी श्रावकों को ज्ञानार्जन कराकर देह से देहातीत हो विदेह की ओर प्रस्थान किया।

कहते हैं- लक्ष्य न ओझल होने पाये कदम मिलाकर चल।
मंजिल तेरे पग चूमेगी आज नहीं तो कल।।

आज पंडित जी साहब ने लक्ष्य बनाकर 10 प्रतिमा के व्रत अंगीकार कर नवाचार्य श्री समयसागर जी के चरणों में खुद को समर्पित कर दिया और आचार्य समयसागर जी ने नया नाम दिया आत्मानंद जी, यथा नाम तथा गुण की युक्ति को चरितार्थ करते हुए ॐ नमः सिद्धेभ्यः कहते हुए समाधिमरण पूर्वक उत्कृष्ट लक्ष्य को प्राप्त किया।

जाते-जाते वो हमे ऐसी निशानी दे गये।
उम्र भर दोहरायेगे हमें ऐसी कहानी दे गये।।

इसी मंगल भावना के साथ विनयांजलि समर्पित इच्छामि-इच्छामि-इच्छामि।

-ब्र. राजेश टड़ा

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद
(पंडित श्री रतनलाल जी)

जिनवाणी के सच्चे उपासक जैन जगत के वरिष्ठ मूर्धन्य मनीषी पंडित रतनलाल जी का जाना एक अपूरणीय क्षति है।

पंडित जी साहब की विनम्रता, सरलता और आगम-निष्ठा सभी को लुभाती थी। आपकी अनेक विशेषताओं में एक वह सबके प्रिय थे, उनका कोई विरोधी नहीं था। आपकी प्रशस्त भावना एवं मार्गदर्शन से सम्मेद शिखर गिरिराज पर चोपड़ा कुंड मंदिर का निर्माण हुआ और मधुबन स्थित श्री चमत्कारी पद्मप्रभु मंदिर समवशरण श्री अजितनाथ मंदिर के शिखर पर भगवान श्री चंदाप्रभु की अति मनोज्ञ 53 इंची प्रतिमा आपके द्वारा विराजमान की गई है जो सदैव भक्तों को आत्मदर्शन कराती रहेगी।

पंडित जी साहब अनुयोगों के व्याख्याकार और करणानुयोग के विशेषज्ञ थे। हमारा ननिहाल पास ही होने के कारण उनसे बाल्यावस्था से ही इंद्र भवन एवं समवसरण मंदिर इंदौर में पुण्य अवसारों पर सहज सरल व्याख्यान सुनने मिले जो सदैव स्मरणीय रहेंगे। पंडिज जी साहब के ज्ञान के फल स्वरूप अंतिम समय में दस प्रतिमाओं को अंगीकार किया एवं अंतिम समय में केवल जल और उस जल का भी त्याग कर समतापूर्वक समाधिमरण किया है वह संपूर्ण विद्वत् जगत को अनुकरणीय है। आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के द्वारा प्रदत्त आत्मानंद नाम को सार्थक कर अपनी आत्मा में लीन हुए।

वे शीघ्र ही सिद्धावस्था को प्राप्त करेंगे मुझे अंतिम समय में दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ अपने आप को धन्य समझता हूं कि ऐसी मुक्ति मुझे भी प्राप्त हो।

विद्वानों का समाधिमरण बहुत प्रेरक होता है उन्होंने समाधि के साथ देह परिवर्तन किया। यह विद्वानों के लिए आदर्श और प्रेरणादायक संदेश है।

उनका सादगी भरा जीवन विद्वानों को आकर्षित और सदा प्रेरणा देता रहेगा।

सरल स्वभावी विद्वान मनीषी का चिर वियोग जैन समाज के लिए अपूर्णीय क्षति है। आपको शीघ्र मुक्ति की प्राप्ति हो ऐसी मंगल कामना है।

-डॉ. ज्योति बाबू जैन

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद

(पंडित श्री रतनलाल जी)

बाल ब्रह्मचारी पंडित रतनलाल जी शास्त्री जैन जगत के मूर्धन्य विद्वान थे, वे सही मायने में सरस्वती पुत्र थे, अलौकिक व्यक्तितत्व के धनी पंडित जी मूल जिनागम वर्णित चारों अनुयोगों में से करणानुयोग जैसे कठिन और पद्मपुराण जैसे सरलतम विषयों को भी शास्त्रावलम्बन के बिना भी बाल बोध सहज सरल शैली में इस प्रकार से पढ़ाते थे जेसे कोई टेपरिकॉर्डर चल रहा हो और आप शास्त्र सामने रखकर शब्द-शब्द मिलान करके उनके प्रखर क्षयोपशम से उत्पन्न प्रज्ञा की प्रमाणिकता सिद्ध कर सकते हैं । उनका ज्ञान उनके द्वारा कहे हुए वचनों से प्रामाणिक माना जाता था।

उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन को संयम से सुशोभित करते हुए क्षमा, मार्दव, आर्जव और शुचिता जैसे पवित्र गुणों से अपने आपको मण्डित करके अत्यंत मंद कषाय पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए लोगों की इस अवधारणा को मिथ्या सिद्ध किया कि विद्वान संयम का पालन नहीं करते हैं और जीवन के अंतिम समय में रोग ग्रस्त शरीर की संपूर्ण बाधाओं को पार करते हुए आचार्य श्री समयसागर जी महाराज से 10 प्रतिमाओं के व्रत को धारण कर आत्मानंदी स्वभाव को प्राप्त करने हेतु उत्कृष्ट संलेखना समाधि मरण को प्राप्त किया। उनकी यह सच्ची धर्म भावना **गृहस्थो मोक्ष मार्गस्थों** की युक्ति को उनके जीवन में चरितार्थ करती है।

आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महाराज की मंगल चरण छांव में जिन्होंने अपना जीवन व्रती बनकर संयम पूर्वक व्यतीत किया तथा नवाचार्य श्री समयसागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से जिनकी सम्यक् समाधि सानंद संपन्न हुई ऐसे व्रती क्षपक विद्वान की सल्लेखना के समय मुझे भी सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ इसे मैं अपना पुण्ययोग मानता हूँ।

अंत में वह दो मंत्र जिनसे उन्हें संबल शक्ति और साहस मिला अवश्य स्मरणीय है **ॐ नमः सिद्धेभ्यः** और **ओंकारराय नमो नमः** इसके साथ ही यह भावना भाता हूं कि वह शीघ्र ही देव पर्याय से आकर मनुष्य पर्याय को प्राप्त करके साधु पद को धारणकर शीघ्रातिशीघ्र सिद्धत्व को प्राप्त करें ।

ब्र. अशोक कुमार जैन, लिधौरा टीकमगढ़

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद

(दिशा-निर्देशक-पंडित श्री रतनलाल जी)

इंदौर नगर की पहचान स्वाध्याय, संयम एवं साधना रूप में पं. रतनलाल जी से ही थी। सरल, सहज, विनम्र, वात्सल्य, समता, निस्पृह, निर्लोभ, निरीह, करूणा, दया, आत्मान्वेषी, देव, शास्त्र, गुरु आराधक विद्वत् सृजेता, सरस्वती पुत्र की पर्याय थे पंडित जी।

मुझें आपका सान्निध्य पंचबालयति जिनालय इंदौर के शिलान्यास से प्राप्त हुआ । आप मेरी संयमी जीवन यात्रा के निर्देशक थे, जहाँ शुद्धोच्चारण का गौरवमयी निर्देशन संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से सहस्रनाम के पाठ के रूप मिला, शुद्धोच्चारण की विधि एवं अभ्यास पूज्य मुनि श्री क्षमासागर महाराज एवं दृढ़मति माता जी के सान्निध्य में प्राप्त हुआ एवं प्रतिष्ठा विधि एवं अनुष्ठान में इसका संयोजन पंडित जी से प्राप्त हुआ जो मेरे प्रतिष्ठा कार्य में नींव के समान दृढ़ीभूत हुआ।

संस्कृत उच्चारण, छंद संयोजना, अध्यात्म, सिद्धांत एवं आगम से अनुष्ठान एवं पंचकल्याणक का समायोजन कैसे होता है, गुणस्थानों का आरोहण, पंचकल्याणक के पात्रों की संयोजना आगमानुसार उनकी योग्यता एवं पात्रता, गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान एवं मोक्ष की प्रक्रिया में मंत्र, यंत्र एवं तंत्र की संयोजना का ज्ञान पंडित जी से प्राप्त करना मेरे जीवन की अनमोल धरोहर है।

आप करणानुयोग के एक मात्र विद्वान् थे जिनसे वर्तमान के कई आचार्य मुनि एवं आर्यिका माताजी ने आपसे स्वाध्याय की सौगात प्राप्त की।

पिता श्री गुलाबचंद जी पुष्प के प्रति आपका विशेष बहुमान था, आप एक दूसरे के पूरक थे।

आदरणीय पंडित जी के इस विशेषांक के माध्यम से हम सभी उन्हें विनम्र श्रद्धा सुमन समर्पित कर उनका बहुमान करने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं पर यह तभी फलीभूत होगा जब हम स्वाध्याय को जीवन के अंगरूप स्वीकार कर, समाज को लाभान्वित करें ।

- ब्र. जयकुमार निशांत, टीकमगढ़ (महामंत्रीः अ.भा. शास्त्री परिषद)

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

आत्मानंद
(पंडित श्री रतनलाल जी)

करणानुयोग के कर्ण

ब्र. रतनलाल जी का सम्पूर्ण जीवन जैनागम के अध्ययन अध्यापन को समर्पित रहा है। आपने ज्ञानार्जन को चारित्र रूप में उसे अंगीकार भी किया और उसे आत्मसात भी किया। आप सरलता, सहजता, वात्सल्य, निरभिमानता की प्रतिमूर्ति थे। आपके जीवन में मार्दव, आर्जव, सत्य, संयम, आकिंचन , क्षमा, तप-त्याग और ब्रह्मचर्य के दर्शन सुलभता से हो जाते थे। आपकी चर्या आदर्श स्थापित करने वाली तो थी ही साथ ही आगमानुसार आचरण करने के लिए कसौटी के समान थी। आपका स्वाध्याय, अध्ययन अनुपम था। करणानुयोग जैसे किलिष्ट गूढ़, गंभीर विषयों पर आपका प्रवेश ही नहीं अपितु अधिकार भी था।

आपने कर्म सिद्धांत जैसे विषयों को सरलतम बनाकर जन सामान्य को प्रदान कर अपने ज्ञान भंडार को समृद्ध किया है।

आपका जीवन करणानुयोग विषय विशेषज्ञ के रूप में जाना जाता था। आपने अपने इस ज्ञान को मात्र अपने पास न रखकर जीवन के अंतिम समय तक दूसरो को बांटते ही रहे हैं।

संस्कार सागर के इस विशेषांक के माध्यम से आपको श्रद्धा सुमन समर्पित करते हुए आपको नमन करते हैं।

- पं. सनतकुमार विनोद कुमार जैन, रजवांस(सागर)

कविता

जय विद्यासागर

जयति जयति जय विद्यासागर, ज्ञान ध्यान तप तत्त्व उजागर
संत शिरोमणि शिवपथ दाता, सौम्य समाधि गीत सुहाता
धर्म पंथ के युग दृष्टा तुम सहस्र शिष्य दीक्षा दाता तुम
तीर्थोन्नति की सहज भावना, सदा रही मन स्वहित कामना
प्रदर्शन नहीं कर्म पंथ पर, गुरु चले तुम आगम पथ पर
विषय भोग जग लुभा न पाया, निज वैभव आदर्श बनाया
जड़ काया माया से दूरी, समझी भौतिकता को अधूरी
निज रस अमृत के रसिया तुम, शुद्ध तत्त्व वेत्ता गुरुवर तुम
मोक्ष सुन्दरी मन को भायी, मोक्षमार्ग में लगन लगाई
काम विजेता विद्यासागर जन-जन के गुरु विद्यासागर

चलो देखें यात्रा

नेमीराजुल का गिरनार

महत्व एवं दर्शन:- गिरनार पहाड़ पर भगवान नेमिनाथ के दीक्षा, केवलज्ञान, मोक्ष कल्याणक हुये हैं। यहाँ से अनेक मुनियों ने निर्वाण प्राप्त किया है। क्षेत्र पर कुल मंदिर 6 हैं। एक पहाड़ पर, तलहटी में 3 एवं जूनागढ़ में है। अम्बिका देवी का मंदिर गिरनार के दुसरे पर्वत पर है। जो हिंदु और जैन मान्यता में है। अभी अधिकार हिंदुओं का है। श्री धरसेनाचार्य ने पुष्पदंत-भूतबलि को यहाँ पर शास्त्र ज्ञान दिया था। नेमिनाथ भगवान के चरण-चिह्न पांचवी टोंक पर हैं।

मार्गदर्शन: गिरनार पर्वत पर 5 टोंकों की वंदना की जाती है। उसमें लगभग 9999 सीढ़ियाँ हैं। अहमदाबाद, राजकोट, पोरबंदर रोड़ पर जूनागढ़ से 7 किमी. पर गिरनार है। धर्मशाला में डोली की व्यवस्था हो जाती है।

नाम एवं पता: श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र, गिरनार जी, श्री बंडीलाल जी दिगम्बर जैन कारखाना, पो. भवनाथ जि. जूनागढ़ 362001, फोन 0285-2621519, प्रबंधक: श्री भागचंद जी सोगानी , शिवदासपुर वाले मो. 988700828, 9574521280, सहायक प्रबंधक: श्री एस.के. जैन 8264722385, सम्पर्क: श्री महिपाल सालगिया मो. 9414109498, श्री तेजस तलाटी मो. 9785390450।

सुविधायें - सुसज्जित त्यागी निवास में 5 हॉल, 30 एसी कमरे, अटैच कमरे 30 और सामान्य 7 है। नियमित चलने वाली भोजनशाला सशुल्क है।

मंदिर एवं धर्मशाला में एक कैम्पस है। जूनागढ़ में दिगम्बर जैन धर्मशाला जगमाल चौक में है।

सम्पर्क: 0285-2654108, श्री बरूदेव सिंह। जूनागढ़ में स्वामी नारायण मंदिर में आवास सुविधा है। सम्पर्क: 09999893200।

2. श्री नेमिनाथ जिनालय- श्री विश्वशांति निर्मल ध्यान केन्द्र गिरनार जी, धर्मशाला के लिए संपर्क करें श्री सुमत जैन 9426717901, 0289-2671108,

गिरनार तलेहटी पो. भवनाथ 362004 जिला जूनागढ़ , समवशरण मंदिर लच्छी भवन के पास गिरनार फोन 0285-2650611, आवास एवं भोजन सुविधा उपलब्ध है। सम्पर्क सूत्र श्री निर्मल ध्यान केन्द्र तलेहटी बा.ब्र. शांता बेन 094281-15382।

विशेष: उपरकोट किला, राजुल महल, विवेकानंद गार्डन, हवेली मंदिर (कृष्ण) नरसी मेहता का होमटाउन है, जैन मंदिरों के अलावा बुद्ध गुफायें है। जूनागढ़ पर्यटक स्थल है। जूनागढ़ को सेंटर बनाकर चोरवाड बीच रिसोर्ट, सोमनाथ, द्वारका भ्रमण कर सकते हैं। गिरनार में गुजरात टूरिज्म का होटल है। फोन: 0285- 2621201।

यहाँ से समीपवर्ती महात्मा गांधी का जन्म स्थान पोरबंदर है। गांधी जी का घर, संग्रहालय और जैन मंदिर है। शासनगिरि (54), एशियाटिक शेर, तुलसी मंदिर, बारह ज्योर्तिलिंग में से एक है। सोमनाथ 100 किमी है। यहाँ से राजकोट-100, अहमदाबाद -350, द्वारका-225, सोनगढ़-200, राजकोट जैन यात्रियों के लिए मध्यवर्ती शहर, आवास नागेश्वर जैन भवन, यह मुख्य औद्योगिक शहर, अहमदाबाद से 216 किमी. यहाँ से पोरबंदर, कच्छ, गिरनार, द्वारका मोरबी की यात्रा की जा सकती है। जूनागढ़ में दिगम्बर धर्मशाला के अलावा स्वामी नारायण मंदिर है। सम्पर्क: 999893200।

आगम दर्शन

अचेलक वृत्ति/वनाम नग्नता

अचेल का अर्थ वस्त्र का अभाव है चेल अर्थात् वस्त्र उपसर्ग पूर्वक चेल शब्द में तत्पुरुष समास बनने पर अर्थ नग्नता हो होता है तत्वार्थ सूत्र मे नग्न परिषह ही को मान्य किया गया है कुछ लोग अचेल शब्द का अर्थ ईषत् वस्त्र लेते हैं किन्तु वे यदि सवार्थसिद्धि और भगवती आराधना के इन संदर्भो को पढ़ेगें तो वे भी अचेल शब्द का अचेलकत्व-भ.आ./मू.1223 अर्थ नग्नता स्वीकार कर लेगें।

आप निम्न संदर्भों को पढ़े और अपना श्रम मिटायें।

चेल शब्द परिग्रह का उपलक्षण है अतः चेल शब्द का अर्थ वस्त्र ही न समझकर उसके साथ अन्य परिग्रहों का भी ग्रहण करना चाहिए। इसके लिये आचार्य ने ताल पलब्म का उदाहरण दिया है।

तालपलम्ब इस सामायिक शब्द में जो ताल शब्द है उसका अर्थ ताड़ का वृक्ष इतना ही नहीं अपितु वनस्पतियों का उपलक्षण रूप समझकर उससे सम्पूर्ण वनस्पतियों का ग्रहण करते हैं। वस्त्र मात्र का त्याग करने पर भी यदि अन्य परिग्रहों से मनुष्य युत्त है तो इसको संयत मुनि नहीं करना चाहिए। अतः वस्त्र के साथ सम्पूर्ण परिग्रह त्याग जिसने किया वहीं अचेलक माना जाता है। (मू.आ. 3)।

पाँच प्रकार के वस्त्र- दे. वस्त्र

नागन्य परिषह का लक्षण- स.सि.9/9/422 जातरूपपवबिएकलङ्क जातरूप धारणमशक्य प्रार्थनीयं याचना रक्षणहिंसनादिदोष विनिर्युक्तं निष्परिग्रहत्वान्निर्वाण प्राप्तिं प्रत्येक साधनमनन्यवाधनं नागन्य विभ्रतो मनोविक्रियाविप्लुतिविरहात् स्त्रीरूपाण्यप्रत्यन्ताशुचि कुणरूपेण भावयतो रात्रिन्दिवं ब्रह्मचर्यमखण्ड मातिष्ठ मानत्या चेलव्रत धारणमनवद्यभगन्तव्यम्।

बालक के स्वरूप के समान जो निष्कलंक जातरूप को धारण करने रूप हे, जिसका याचना करने से प्राप्त होना अशक्त है, जो याचना रक्षा करना और हिंसा आदि दोषों से रहित है, जो निष्परिग्रह रूप होने से निर्वाण प्राप्ति का अनन्य साधन है, जो मन के विक्रिया रूप उपद्रव से रहित होने के कारण स्त्रियों के रूप को अत्यंत अपवित्र बदबूदार अनुभव करता है, जो रात दिन अखण्ड ब्रह्मचर्य को धारण करता है, उसके निर्दोष अचेलव्रत होता है। (रा.वा. 9/9/10/606/26) (चा.सा. 11/1/2)।

द्रव्यलिंगी की प्रधानता व भावलिंग के साथ समन्वय दे. लिंग 4 अतः श्वेतांबरीय पथ अचेल शब्द का दुराग्रह छोड़कर नग्नता से मुक्ति पथ मानने के सत्य स्वीकार कर सकते हैं जिसमें उनका कल्याण निहित है।

देसमासियमुत्तं आचेलक्कंतितं खु ठिदिकरूपे लुत्तोत्थ आदिसद्रो जह तालपलंवसुत्तम्मि॥
णय होदि संजदो वत्थमित्तचागेण सेसंगेहिं। तह्मा आचेलक्क चाओ सव्वेसिंह होइ संगाणं॥

सुबाई गांव में उड़ीसा का पुरावैभव

✻ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन (मनुज), इंदौर ✻

उड़ीसा में किसी समय श्रमण संस्कृति बहुतायत में पुष्पित-पल्लवित थी। ईसा पूर्व 850 में जब भगवान पार्श्वनाथ ने इस क्षेत्र में विहार किया था, तब राजा अवाकिन्नायों करकंडु 23वें तीर्थंकर के महान भक्त बन गए और उन्होंने दीक्षा ली। वहां तत्कालीन राजाओं और उनकी परम्परा में अन्य सामन्तों ने जैन मंदिर, मूर्तियां, मठ बनवाये। ओडिशा के अविभाजित कोरापुट जिला में ईसा की चौथी शताब्दी में जैन सभ्यता-संस्कृति का परचम लहराता था। इतिहासकारों के अनुसार, जैन व्यापारी, अविभाजित कोरापुट क्षेत्र में रत्न संग्रहीत करने और व्यापार करने के लिए आए थे, उन्होंने वहां मठ की स्थापना की और नियमित पूजा आराधना किया करते थे।

सुनाबेड़ा से 16 किलोमीटर और कोरापुट से 34 किलोमीटर दूर एक गांव सुबाई में एक जीर्ण-शीर्ण मठ है। इसमें पांच मंदिरों का पुंज है, जिसमें तीर्थंकरों और शासनदेवियों की दुर्लभ मूर्तियां है। वर्तमान में सुबाई गांव के जैन मंदिर परिसर की अधिकतर मूर्तियां प्राचीन, मूर्तिकला व अत्यंत पुरातात्विक महत्त्व की हैं। जैन पुरातन प्रतिमा निर्माण विधा के अनुसार तीर्थंकर ऋषभनाथ के केशविन्यास, जटामुकुट और स्कंधों तक लटकती केश-लड़ियां दर्शाई जाती रही हैं, किन्तु यहां की तीर्थंकर ऋषभनाथ के केशविन्यास, जटामुकुट तो हैं ही, अन्य सभी बड़ी मूर्तियों के भी सुंदर केश-विन्यास दर्शाये गये हैं। पर एक विभेद अवश्य है कि आदिनाथ की केश-जटायें स्कंधों पर भी लटकी हुई दर्शाई गई हैं। यहां की छह बड़ी प्रतिमाएं परिसर में खुले में बाहर स्थापित हैं, शेष जीर्ण मंदिरों में हैं। कुछ अन्यत्र संग्रह में रखी प्रतीत होती हैं। बड़ी मूर्तियों में दो आदिनाथ की चौबीसी है। अर्थात् मुख्य प्रतिमा आदिनाथ की है, शेष तेईस तीर्थंकर उसके परिकर में बनाये गये हैं। परिकरस्थ अन्य तीर्थंकरों के चिहन स्पष्ट हैं। आदिनाथ की दो अन्य एकल सपरिकर प्रतिमाएं हैं। इनके पादपीठ पर बीच में शासनदेवी चक्रेश्वरी निर्मित हैं। मध्य में चक्रेश्वरी है। एक के पादपीठ पर दायें गाय के समान मुख वाला गोमुख यक्ष निर्मित है व बायें तरफ अर्जलिबद्ध आराधिका बैठी हुई है। पद्मासन में वृषभ लांछन भी दर्शाया गया है।

एक पंचतीर्थी अर्थात् मुख्य प्रतिमा के अतिरिक्त उसके परिकर में चार अन्य तीर्थंकर भी हैं। इसके सिंहासन में मध्य में चतुर्भुज खड़ी हुई शासनदेवी दर्शाई गई हैं, पादपीठ में मध्यम में लांछन भी है, किन्तु पाषाण क्षरित हो जाने के कारण अधिकतर परिकरस्थ आकृतियां अस्पष्ट हो गई हैं। इस प्रतिमा के दोनों ओर के चंवरधारियों के दाहिने हाथ में चँवर धारण किये हुए दर्शाया गया है। यह विशेषता इन प्रतिमाओं के अति प्राचीन होने के संकेत हैं। एक एकल आदिनाथ की प्रतिमा के परिकरस्थ चंवर वाहक भी दाहिने-दाहिने हाथ से चंवर ढुराते हुए दर्शाये गये हैं।

यहाँ एक दश भुजाओं वाली शासन देवी की एकल प्रतिमा है। इसका परिकर बहुत महत्वपूर्ण है। पादपीठ में प्रतीत होता है कि इस देवी के जीवन की घटनाओं का अथवा तीर्थंकर के जीवन की घटनाओं का चित्रण किया गया है। इसके वितान में भी कई आकृतियां हैं। देवी के मस्तक के ऊपरी वितान के मध्य में सर्पफणयुक्त पद्मासनस्थ लघु तीर्थंकर और पादपीठ में भी मध्य में पद्मासन में एक लघु तीर्थंकर प्रतिमा है। स्थानीय लोग चूड़ी, फूल, सिंदूर, चढ़ाकर इसकी पूजा करते हैं।

कहा जाता है कि यहां अस्सी के दशक से 2010 तक सरकार पर्यटकों का आकर्षण बढ़ाने के लिए विभिन्न जैन उत्सवों का आयोजन करती थी। उन्होंने मंदिरों और मूर्तियों के संरक्षण पर भी ध्यान दिया। इंटरनेट पर पड़ी जानकारी के अनुसार वर्तमान में पुरातत्त्व विभाग की पूरी उदासीनता के कारण प्रतिमाएं पानी में भीगकर, धूप में जलकर नष्ट हो रही हैं। मंदिर टूट रहे हैं, जगह-जगह पेड़ उग रहे हैं। मूर्ति चोरी की भी एक घटना हो चुकी है। यहां की पुरातात्त्विक धरोहर का पुनः संरक्षण होना चाहिये।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
जून 2025

ये कितना दृश्य सुहाना

प्रथम-

भक्ति का सुप्रवाह
यह धर्मपुण्य का कारण है
भगवत् की भक्ति से होता
दुख का शीघ्र निवारण है
सिद्धचक्र की महिमा हरदम
हम को हर पल है गाना
मंडल विधान के लखाने
ये कितना दृश्य सुहाना

श्रीमति इन्द्रा जैन, अहमदाबाद

द्वितीय-

देखे दृश्य अनेकों तुमने
कब भक्ति का दृश्य लखा
पाप त्यागकर पुण्य बढ़ाने
कब भक्ति का स्वाद चखा
जिनवर की सचती भक्ति से
स्वर्ग मुक्ति का सुख पान
नृत्य गान भय मंडल सपना
ये कितना दृश्य सुहाना

श्रीमति दृश्या जैन, भोपाल

तृतीय-

सारे जहाँ में अच्छा जिनधर्म है हमारा
इसने सभी दुखी को भव कष्ट से निवारा
मिथ्या मतों को तेज के सद् धर्म को निभाना
अरिहंत भक्ति को ये कितना दृश्य सुहाना

श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़

वर्ग पहेली क्र. 307
मई 2025 के विजेता

प्रथम : श्रीमती रजनी जैन, इंदौर
द्वितीय : मिलापचंद जैन, कोटा
तृतीय : तारा जैन, इंदौर

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द अ द्ढ ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

काम पिशाच

रहासि दुर्लभमाप्य मनीषितं न हि विमुञ्चानि लब्धरसो जनः ।।
दुर्लभ वस्तु को पाकर उसका रस प्राप्त करने वाले उसे छोडते नहीं हैं।

न सुलभं सुमुखे किमु भर्तरी ।।
भर्ता के अनुकुल रहने पर कौन सी वस्तु सुलभ नहीं ?

परिचितः प्रणयः खलु दुद्धत्यजः ।।
परिचित- अनुभूत स्नेह बड़ी कठिनाई से छूटता है।

कामग्रहगृहीतस्य का मर्यादा क्रमोऽपि कः ।।
कामरूपी पिशाच से गृहीत मनुष्य की मर्यादा क्या है ? और क्रम क्या है ? कामी मनुष्य सब मर्यादाओं और क्रमों को छोड़ देता है।

तावब्दार्यादयो यावन्मर्यादा संस्थितः प्रभुः ।।
स्त्री आदि तभी तक है तब तक स्वामी मर्यादा में रहता है-मर्यादा का पालन करता है।

पातकात्पतनं ध्रुवम् ।।
पाप से पतन होता ही है।

का वा कठिनचित्तस्य जिनशासनभक्तता ।।
जो समर्थ होकर भी आपत्ति के समय सम्यग्दृष्टि की उपेक्षा करता है उस कठोर हृदय वाले के जिनशासन की क्या भक्ति है ? कुछ भी नहीं है।

कविता

पंथ दिगम्बरः शिव सुख का आधार

✲ संस्कार फीचर्स ✲

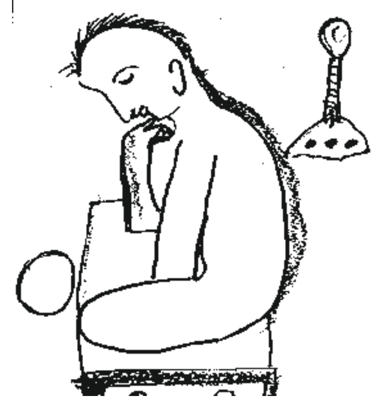

सुनो मुमुक्षु पंथ दिगम्बर शिवसुख का आधार
चिंता शोक बढ़ाये परिग्रह, थोड़ा करो विचार
संग परिग्रह काम बढ़ाये काम क्रोध की खान
क्रोध मति को भ्रष्ट करें नित मतिभ्रष्ट दुखखान
छोड़ परिग्रह पवन सरीखे साधु पा भव पार
वस्त्र बने चिंता का कारण, हिंसा क्रिया साथ
लेश्या अशुभ वसन से होती कहते जिनवर नाथ
वीतरागता चेल बिना ही वीर प्रभु वचन है साथ
वेद पुराण सभी तो कहते मूल दिगम्बर पंथ
नग्न साधना सत्य स्वरूपी अपनाओ सब संत
प्राचीन निग्रंथों का पथ दे मुक्ति उपहार

केरियर

बने अदालत का संकट हारक
बी.ए.एल.एल.बी

बैचलर ऑफ आर्टस ऑर बैचलर ऑफ लेजिस्लेटिन लॉ यह कोर्स कला और कानून से जुड़े विषयों का अध्ययन कराता हैं। इस कोर्स में इतिहास, समाजशास्त्र, प्रशासनिक कानून, अपराधन-विज्ञान, पारिवारिक कानून, पॉलिटिकल सिस्टम्स, इकॉनॉमिक्स, एलीमेंट्री साइकोलॉजी, बेसिक सोशियालॉजी यह विषय पढ़ाये जाते हैं।

कोर्सः बी.ए.एल.एल.बी

अवधिः यह कोर्स 5 साल का होता है

फीसः 50000 रूपये से लेकर 5 लाख रूपये तक अलग-अलग हो सकती है।

नौकरीः लॉयर
लीगल ॲनालिस्ट
लीगल असोसिएट
ज्युडीसियरी

वेतनः 25000 डिपेंड ऑन एक्सपीरियंस
0-2 ईयर- 3 लाख से 3.75 लाख
3-5 ईयर- 5 लाख से 8 लाख
5-10 ईयर- 10.20 लाख से 15 लाख
10 से ज्यादा- 24 लाख से 30 लाख

इंस्टिट्यूटः एस एस मनियार लॉ कॉलेज, जळगांव
युनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लॉ- हैदराबाद
आयएलएस लॉ कॉलेज, पुणे
सिम्बायोसिस लॉ कॉलेज, पुणे

■ 1 मई

- सूरत की त्रिशा पटेल ने एम.बी.बी.एस के कार्य को छोड़ पशु सेवा में योगदान देना शुरु किया।

- उ.प्र. के कई हिस्सों सहित उत्तर भारत में तेज बारिश से सात लोगों की मौत हुई।

- भोपालः लव जिहाद के खिलाफ 26 चौराहों पर प्रदर्शन छात्र और महिलाओं ने किया।

■ 2 मई

- केरल में विझिंजम बन्दरगाह का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया।

- उ.प्र. के शाहजहाँ पुर में गंगा एक्सप्रेस पर राफेल मिराज और जुगार ने ताकत दिखाई। 32 विमानों ने लेडिंग की।

- केदारनाथ के कपाट खुले मुख्यमंत्री पुष्कर धामी उपस्थित रहे।

■ 3 मई

- गोवाः के शिरगांव के लहराई मंदिर में भगदड़ मचने से 6 लोगो की मौत हुई। 80 घायल हुए।

- भारत ने पाकिस्तान से होने वाले सभी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष आयात पर रोक लगाई।

- रायपुर (छत्तीसगढ़) 8 लाख का इनामी नक्सली मुठभेड़ में ढेर हुआ।

■ 4 मई

- भारत ने चिनाव नदी का पानी रोका रामवन के बगली हार बांध का पानी पाकिस्तान जाने से रोका।

- इजराईल के हवाई अड्डे पर हुती ने मिसाईल हमला किया एयर इंडिया का विमान अबूधाबी में लैंड हुआ।

- बांसवाडा (राजस्थान) बागीदौरा का विधायक जयकृष्ण पटेल 20 लाख रूपये घूस लेते रंगे हाथों पकड़ा गया।

■ 5 मई

- सुप्रीम कोर्ट ने लाल किला दावा करने वाली सुल्ताना बेगम की याचिका को खारिज किया।

- भारत का युद्ध मोड ऑन हुआ मॉक ड्रिल करने हेतु राज्यों को निर्देश दिये गये।

- आतंकवाद के खिलाफ जंग में रूस ने भारत का साथ देने की सहमति दी।

■ 6 मई

- भारत-ब्रिटेन के बीच मुफ्त व्यापार समझौता हुआ।

- पुंछः पाकिस्तानी घुसपैठिया गिरफ्तार किया गया।

- फ्रेडरिक गर्ज जर्मन के 10वें चांसलर बने।

■ 7 मई

- भारत ने 1.32 रात को आपरेशन सिन्दूर को अंजाम दिया 9 आतंकी ठिकानों पर हमला हुआ 100 से अधिक आतंकी मारे गये।

- कर्नल सोफिया कुरैशी एवं विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेस की।

- पाक ने एल.ओ.सी के पास गांवों पर गोलीबारी की भारत ने पाक की सैन्य

चौकियाँ नष्ट की।

■ **8 मई**

- पाक के हमले भारत ने नाकाम किये पंजाब, गुजरात, राजस्थान पर हमले नाकाम किये।

- जल प्रहारः भारत ने सलाल व बगलीहार डैम के गेट खोले इससे पाक में बाढ़ के हालात बने।

- पाकिस्तानी फिल्मों गानों और सीरियल पर प्रतिबंध लगा।

■ **9 मई**

- यात्री विमानों का ढाल बनाकर पाकिस्तान ने भारत के 36 शहरों पर 400 ड्रोन मिसाईलों से हमला किया भारत ने सभी ड्रोन मिसाईलों को नाकाम किया।

- एल.ओ.सी पर घुसपैठ करते 7 आतंकी ढेर हुए।

- विश्व बैंक में सिंधु संधि पर पाक को झटका दिया।

■ **10 मई**

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के हस्तक्षेप के बाद भारत ने 5 बजे संघर्ष विराम की घोषणा की परंतु पाक ने 3 घंटे बाद वादा तोड़ा।

- सतना (म.प्र.) एक हेडकॉस्टेबल को अपराधी ने थाने में घुसकर गोली मारी प्रिंसगर्ग की मौके पर मौत हुई।

- भारत ने पाक के 8 सैन्य ठिकानों को तब तबाह किया।

■ **11 मई**

- भारतीय सेना के डी.जी.एम.ओ राजीव घई ने प्रेस कॉन्फ्रेस में बताया 100 से अधिक आतंकी मारे गये एवं 40 से अधिक पाक सैनिक मारे गये।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा उधर से गोली चले तो भारत से गोला चलेगा।

- ढांकाः बाग्लादेश की अवामीलीग पर प्रतिबंध लग गया।

■ **12 मई**

- भारत के सभी 32 एयरपोर्ट संघर्ष विराम के बाद खुले।

- संघर्ष विराम के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र के नाम संबोधन दिया कहा सिंदूर ऑपरेशन न्याय की अखंड प्रतिज्ञा।

- भारत-पाक डी.जी.एम.ओ. के बीच शाम 5 बजे चर्चा हुई।

■ **13 मई**

- सदमपुर (पंजाब) एयर बेस प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने सैनिकों को संबोधित किया कहा आतंकवाद जारी रहा तो विनाश कर देंगे।

- अमृतसरः जहरीली शराब पीने से 21 मरे।

- शॉपियाँ (जे.के.)लश्कर चीफ शहिद कुट्टे सहित तीन आतंकी ढेर हुये।

■ **14 मई**

- कनाडा की विदेशी मंत्री अनीता आनंद ने गीता के साथ शपथ ली।

- जस्टिस गवई भूषण ने मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ की।

- बी.एस.एफ जवान पूर्णम कुमार शॉ की 21 दिन बाद पाकिस्तान से वापसी हुई।

■ **15 मई**

- पुलवामाः सुरक्षा बल ने तीन आतंकियों को ढेर किया।

- पहलगामः ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद तिरंगा यात्रा निकली।

- भारत सरकार ने सेलेबी एयर पोर्ट सर्विसेज इंडिया प्रायवेट लि. की सुरक्षा मंजूरी रद्द की।

■ **16 मई**

- व्यापारियों और आभूषण विक्रेताओं ने तुर्कीए के आयात रोका कानपुर के विश्वविद्यालयों ने करार तोड़ा।

- गुजरात समाचार के मालिक बाहुबली शाह को ई.डी. ने हिरासत में लिया।

- गाजाः इजरायली हमले में 100 फिलस्तीनी मरे।

■ **17 मई**

- दिल्लीः आम आदमी पार्टी के 13 पार्षदों ने इस्तीफा दिया।

- हैदराबादः असदुद्दीन औवेसी ने कहा पाकिस्तान मानवता के लिए खतरा बन गया है।

- मुम्बईः आई.एस. के 2 आतंकी अब्दुल फैयजशेख और तल्हा खान को एन.आई.ए ने गिरफ्तार किया।

■ **18 मई**

- हैदराबादः चार मीनार के पास गुलजार हाउस में आग लगने से 8 बच्चों सहित 17 मरे।

- इस्लामाबादः आतंकी सरगना अबू सैफुल्ला ढेर हुआ।

- हिसारः पाकिस्तान के लिए जासूसी करने वाली ज्योति मलहोत्रा के 5 साथी और गिरफ्तार हुए।

■ **19 मई**

- संभल (उ.प्र.) जामा मस्जिद के सर्वे रोकने से हाईकोर्ट ने इंकार किया।

- सेना ने कहा स्वर्ण मंदिर पर पाक हमले को नाकाम किया था।

- सुप्रीम कोर्ट ने म.प्र. के मंत्री विजय शाह की टिप्पणी पर कहा इस से पूरा देश शर्मसार हुआ है।

■ **20 मई**

-बंगाल वैज्ञानिक डॉ. जयंत विष्णु नारलीकर का निधन हुआ परमाणु रिएक्टर नींव रखने वाले वैज्ञानिक डॉ. एम आर श्री निवासन का निधन हुआ।

- पाक आर्मी चीफ असीम मुनीर मार्शल फील्ड बने।

- गढ़ चिरोली (महा.) 36 लाख के इनामी नक्सली सहित 5 नक्सली गिरफ्तार हुए।

■ **21 मई**

- डेढ़ करोड का इनामी गगन्ना सहित 27 नक्सली छत्तीसगढ़ में ढेर हुए।

- ईडी ने कहा राहुल व सोनिया गांधी ने 142 करोड़ अवैघ रूप (नेशनल हेराल्ड) से कमाये।

- इस्लामाबादः सेना के नहर प्रोजेक्ट का विरोध हुआ गृहमंत्री के घर को फूका 2 प्रदर्शनकारी मरे।

■ **22 मई**

- किस्तवाड़ (ज.कश्मीर) सुरक्षा बल के साथ मुठभेड़ में 2 आतंकी ढेर हुए संदीप गावकर शहीद हुए।

- सुप्रीम कोर्ट ने ईडी को फटकार लगाते हुए कहा ई.डी सारी सीमाओं को पार कर रही है।

- विदेशीमंत्री एस जयंशकर ने कहा पाक ने सीधे हमसे बात की तब फैसला लिया कोई मध्यस्थ नहीं बना।

■ **23 मई**

- मास्कोः भारतीय सांसदो की फ्लाइट लैंड होने से पहले एयरपोर्ट पर ड्रोन अटैक हुआ।

- इंदौर (म.प्र.) जिले के एक कुएँ में तेंदूए को वन विभाग ने बचाया।

- नई दिल्लीः अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी 121 नागरिकों को हिरासत में लिया गया।

■ 24 मई

-नीति आयोग की बैठक हुई 31 राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भाग लिया प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हर राज्य में एक ग्लोबल पर्यटन स्थल बनाने की अपील की।

- कच्छः सहदेव सिंह गोहिल पाक जासूसी मामले में पकड़ा गया।

■ 25 मई

- राजद और परिवार से लालू प्रसाद यादव ने अपने बेटे तेजप्रताप यादव को निष्कासित किया प्रेम का इजहार भारी पड़ा।

- काँग्रेस नेता शशि थरूर ने कहा भारतीयों की हत्या करके कोई पाकी बचकर नहीं जा सकता।

- इस्लामाबादः बलूचिस्तान में सैन्य काफिले पर धमाका हुआ 32 पाकी जवान मृत हुए।

■ 26 मई

- लातेहार (झार.) 5 लाख का इनामी नक्सली मनीष यादव मुठभेड में ढेर हुआ।

- गाजा में इजरायली हमलों में 52 लोगों की मौत हुई।

- इंदौरः राजा रघुवंशी एवं सोनम रघुवंशी मेघालय से लापता हुए।

■ 27 मई

- पहलगामः जम्मू-कश्मीर सरकार की कैबिनेट की बैठक हुई । मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्हा ने साइकलिंग की।

- असम-बांग्लादेश बॉर्डर पर हवाई फायरिंग के बाद हाई अलर्ट जारी।

- अमृतसरः मजीटा रोड़ पर धमाके में खालिस्तानी आतंकी की मौत हुई।

■ 28 मई

- तेहरानः 3 भारतीय लापता हुए 1 करोड़ की फिरौती माँगी।

- पूर्व सेबी प्रमुख माधवी बुच को लोकपाल ने क्लीन चिट दी।

- विदेशी सचिव विक्रम मिसरी अमेरिकी उपमंत्री जेफरी केसलर से मिले।

■ 29 मई

- अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को दोहरा झटका लगा एलन मस्क ने साथ छोड़ा और टेरिफ को असंवैधानिक करार दिया।

- भारत-नेपाल सीमा पर वीडियो बनाते दो चीनी गिरफ्तार हुए।

- भुवनेश्वरः माओवादी कुंजाम हिडमा को गिरफ्तार किया गया।

■ 30 मई

- कानपुरः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पहलगाम में मारे गये शुभम द्विवेदी के परिवार से मिले।

- ईडी के डिप्टी डायरेक्टर चिंतन रघुवंशी 10 लाख की घूस लेते पकड़े गये।

- मुक्तसर साहिब में पटाखा फैक्ट्री में धमाका 5 मरे।

■ 31 मई

- बलुचिस्तान के शहर सुराब पर बी.एल.ए ने कब्जा करने का दाबा किया।

- कोलम्बिया ने भारत से संसदीय मंडल की आपत्ति के बाद पाकिस्तान पर संवेदना जताने वाला बयान बदला।

- भारी बारिश और भूस्खलन से भारत के पूर्वोत्तर में भारी तबाही 19 लोगों की मौत हुई।

इसे भी जानिये

अमेरिका के राष्ट्रपति

1	जॉर्ज वांशिग्टन	1789-1797
2	जॉन ऐडम्स	1797-1801
3	थॉमस जेफखनन	1801-1809
4	जेम्स मेडिसन	1809-1817
5	जेम्स मन्रो	1817-1825
6	जॉन विम्सी ऍडम्स	1825-1829
7	ॲड्रयु जॅक्सन	1829-1837
8	मार्टिन वॅन ब्युरेन	1837-1841
9	विल्यम हैन्री हॅरिसन	मार्च 1841-अप्रैल 1841
10	जॉन टायलर	1841-1845
11	जेम्स के पोल्क	1845-1849
12	झचारी टायलर	1849-1850
13	मिलार्ड फिलमोर	1850-1853
14	फ्रॅन्कलिन पिअर्स	1853-1857
15	जेम्स बुकानन	1857-1861
16	अब्राहम लिंकन	1861-1805
17	ॲड्रयु जॉन्सन	1865-1869
18	युलिसेस एस ग्रांट	1869-1877
19	खदरफोर्ड बी हायेस	1877-1881
20	जेम्स गारफिल्ड	मार्च 1881- सितम्बर 1881
21	चेस्टर आर्थर	1881-1885
22	ग्रोव्हर क्लिव्हलँड	1885-1889
23	बेंजामिन हैरिसनु	1889-1893
24	ग्रोव्हर क्लिव्हलँड	1893-1897
25	विल्यम मककिनले	1897-1901
26	थिओडोर रूझवेल्ट	1901-1909
27	विल्यम होवर्ड टॉफ्ट	1909-1913
28	वुड्रॉ विल्सन	1913-1921
29	वॉरन हॉर्डिंग	1921-1923
30	कोल्विन कुलिज	1923-1929
31	हर्बर्ट हुव्हर	1929-1933
32	फ्रॅंकालिन डी रूझवेल्ट	1933-1945 क्रमशः

दिशा बोध

उपद्रव-त्याग

1. शुद्धान्तःकरण वाले मनुष्य को यदि कुबेर की सम्पत्ति मिले, तो भी वह किसी को त्रास देने वाला नहीं है।
2. द्वेषबुद्धि से प्रेरित होकर यदि कोई दूसरा आदमी उसे कष्ट देवे, तो भी पवित्र हृदय का व्यक्ति उससे उसका बदला नहीं लेता।
3. यदि बिना किसी छेड़खानी के तुम्हें किसी ने कोई कष्ट दिया है और बदले में तुम भी वैसा ही कष्ट दोगे, तो अपने ऊपर ऐसे घोर संकटों को खींच लोगे, जिसका फिर कोई उपचार नहीं।
4. दुःख देने वाले व्यक्ति को शिक्षा अर्थात् दण्ड देने का यही एक उत्तम तरीका है कि वह लज्जा के मारे मर जावे। यही उसके लिए गहरी मार है।
5. दूसरे प्राणियों के दुःख को जो अपने दुःख के समान नहीं समझता और इसलिए वह दूसरों को कष्ट देने से विमुख नहीं होता, ऐसे मनुष्य की बुद्धिमत्ता का क्या उपयोग ?
6. स्वयं एक बार दुःखों को भोगकर मनुष्य को फिर वैसे कष्ट दूसरों को न देने का ध्यान रखना चाहिए।
7. यदि तुम जानबुझकर किसी प्राणी को थोड़ा-सा भी दुःख नहीं देते हो, तो यह बड़ी प्रशंसा की बात है।
8. स्वयं कष्ट आ पड़ने पर कैसी वेदना होती है,- ऐसा जिसको अनुभव है, वह दूसरों को दुःख देने के लिए कैसे उतारू होगा ?
9. यदि कोई मनुष्य अपने किसी पड़ौसी को दोपहर को दुःख देता है, तो उसी दिन तीसरे पहर ही उसके ऊपर विपत्तियाँ अपने आप आ टूटेंगी।
10. दुष्कर्म करने वालों के ऊपर विपत्तियाँ सदैव आया ही करती हैं, इसलिए जो मनुष्य दुःखदाई अनिष्टों से बचना चाहते हैं, वे स्वयं ही दुष्कृत्यों से सदैव अलग रहते हैं।

ब्र. आत्मानंद जी (पंडित श्री रतनलाल जी) इंदौर (दसम प्रतिमाधारी) का समाधिरण

ब्र. जिनेश मलैया (प्रधान संपादक संस्कार सागर), इंदौर

आत्मानंद जी महाराज (पं. श्री रतनलाल जी) आपने दो प्रतिमा- टड़ा जिला सागर (म.प्र.) में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी से नो प्रतिमा- 22.03.2025- आचार्य श्री समयसागरजी महाराज जी से कुण्डलपुर (म.प्र.) चैत्र कृष्ण अष्टमी, शनिवार दस प्रतिमा- 28.03.2025- चैत्र कृष्ण चतुर्दशी शुक्रवार आचार्य श्री समयसागर महाराज जी से कुण्डलपुर (म.प्र.) अन्य का त्याग- 28.02.2025- फाल्गुन शुक्ल एकम शुक्रवार मात्र जल-20.03.2025- चैत्र कृष्ण षष्ठी गुरुवार, अष्टमी चतुर्दशी उपवास, क्षेत्र का परिमाण- 19.03.2025-चैत्र कृष्ण पंचमी बुधवार, समाधिः 2 अप्रैल 2025 बुधवार सिद्धियोग चैत्र शुक्ल पंचमी आपकी समाधि में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, आचार्य श्री समयसागरजी महाराज, आचार्य श्री वर्द्धमानसागरजी महाराज, आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज, निर्यापक श्रमण योगसागर जी महाराज, निर्यापक श्रमण सुधासागरजी महाराज, निर्यापक श्रमण समता सागरजी महाराज, मुनि श्री प्रमाणसागरजी महाराज, मुनि श्री अमितसागरजी महाराज, मुनि श्री प्रणम्यसागरजी महाराज, मुनि श्री पुण्यसागरजी महाराज, मुनि श्री निरंजनसागरजी महाराज, मुनि श्री संधानसागरजी महाराज, एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज, आर्यिका श्री दृढमति माताजी आदि 46 माताजी का परोक्ष आशीर्वाद रहा तथा मुनि श्री निर्णयसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री अटलसागरजी महाराज, मुनि श्री महिमासागरजी महाराज, मुनि श्री दिव्यसेनसागरजी महाराज, मुनि श्री परमसागरजी महाराज, आर्यिका सुग्रीवमति माताजी, आर्यिका सुभद्रामति माताजी, क्षुल्लिका सम्मेदमति माताजी, मुनि श्री आदित्सागरजी महाराज, मुनि श्री अप्रमितसागरजी महाराज, मुनि श्री सहजसागरजी महाराज, मुनि श्री आराध्यसागरजी महाराज, मुनि श्री शुद्धसागरजी महाराज, क्षुल्लक श्री श्रेयशसागरजी महाराज का प्रत्यक्ष सान्निध्य एवं आशीर्वाद रहा।

समाधि में ब्र. जिनेश मलैया, पंचबालयति मंदिर इंदौर, ब्र. सुरेश मलैया, पंचबालयति मंदिर इंदौर, ब्र. अनिल भैया- उदासीन आश्रम, इंदौर, ब्र. अभय भैया (आदित्य)- उदासीन आश्रम, इंदौर, ब्र. सुनील भैया, अनंतपुरा, ब्र. मुकेश भैया, अशोकनगर, ब्र. विमल भैया, इंदौर, ब्र. हरिश भैया, उरई, ब्र. रामसिंह जी, अशोकनगर, ब्र. महेन्द्र भैया, कलकत्ता, ब्र. कैलाशचंद जी, टीकमगढ़, ब्र. प्रकाश जी,

तिलकनगर इंदौर, ब्र. नाथूलाल जी, हर्रई , ब्र. सुशील भैया, गाडरवाडा, ब्र. उत्तमचंद जी, गढिया, ब्र. अशोक भैया, लिधौरा, ब्र. पंकज भैया, ईसरी, ब्र. डॉ. अनिल शास्त्री, जयपुर, ब्र. डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, दिल्ली, ब्र. विनोद भैया, भिण्ड, ब्र. विनोद भैया, आधारताल जबलपुर, ब्र. प्रदीप भैया, पियुष जबलपुर, ब्र.प्रदीप सुयष, अशोकनगर, ब्र. चेतन भैया, मुंबई, ब्र. तरूण भैया, स्मृतिनगर इंदौर, ब्र. अजय भैया, स्मृतिनगर इंदौर, ब्र. परिमल भैया, मुंबई, ब्र. चंदन भैया, उदयपुर, ब्र. संजय भैया, पठारी, ब्र. मनीष भैया, तेन्दूखेडा, ब्र. श्रेयांस भैया, नेमावर आश्रम, ब्र. कुशाल (कन्नू) भैया, ब्र. राकेश पुष्पकेले, निवार, ब्र. पियूष भैया, ब्र. निखिल भैया तथा आर्यिका विज्ञानमति माताजी संघ की दो बहने, ब्र. सविता दीदी, पिपरई, ब्र. माया दीदी बंडा, ब्र. अमिता दीदी, शिवपुरी प्रतिभा प्रतिक्षा, ब्र. सपना दीदी, खातेगांव प्रतिभा प्रतिक्षा, ब्र. गुडिया दीदी, अशोकनगर, ब्र. मिली दीदी, चिरमिरी, ब्र. पिंकी दीदी, चिरमिरी, प्रतिभास्थली की 40 बहनें, ब्र. पदमा दीदी, खंडवा श्राविका आश्रम इंदौर, ब्र. मीना दीदी, पिण्डरई, ब्र. साधना दीदी, जबलपुर, ब्र. अनिता दीदी, टीकमगढ़, ब्र. बबीता दीदी, टीकमगढ़, ब्र. प्रज्ञा दीदी, टीकमगढ़, ब्र. मैना दीदी, शिवपुरी, ब्र. शशि दीदी, टीकमगढ़, ब्र. रेखा दीदी, ललितपुर, ब्र. शशि दीदी, ललितपुर, ब्र. किरण दीदी, मसुरहाई, ब्र. मुन्नी दीदी, बंडा, ब्र. मुन्नी दीदी, सागर, ब्र. सुषमा दीदी, उज्जैन, ब्र. साधना दीदी, पिपरई, ब्र. खुशबू दीदी, भिण्ड, ब्र.किरण गोदरे, सागर, ब्र. प्रभा दीदी, गंजबासोदा, ब्र. उर्मिला दीदी, मंदसौर, ब्र. अंजना दीदी, बेगमगंज, ब्र. सुनीता दीदी, इंदौर, ब्र. किरण दीदी (सुन्दरी), सागर, ब्र. डॉ. रजनी जैन, ब्र. सुगन्धी दीदी, बेगमगंज, ब्र. ज्योति दीदी, भिण्ड, ब्र. सुनीता दीदी, गढ़ी, ब्र. संगीता दीदी, अनंतपुरा, ब्र. संगीता दीदी, जबलपुर, ब्र. संगीता दीदी, मलकापुर, ब्र. सरिता दीदी, भोपाल, ब्र. क्रांति दीदी, बम्होरी, ब्र. विनयप्रभा दीदी, ब्र. विजया दीदी, ललितपुर, ब्र. शांता दीदी, सदलगा, ब्र. स्वर्णा दीदी, सदलगा, ब्र.नीतू दीदी, भिण्ड, ब्र. अल्पना दीदी, टीकमगढ़, ब्र. अनीता दीदी, अनंतपुरा, ब्र. सुनीता दीदी, राहतगढ़, ब्र. मुन्नी दीदी, बंडा, ब्र. अनीता दीदी, कटनी, ब्र. सुमन दीदी, सागर, ब्र. उषा दीदी, भरतपुर, ब्र. साधना दीदी, गोटेगांव, ब्र. समीक्षा दीदी, महाराष्ट्र, ब्र. शकुन पाटोदी, इंदौर, ब्र. मीना दीदी, सागर, ब्र. प्रेमाबाई जी, खातेगांव, ब्र. नाजुक दीदी, ब्र. सुनंदा दीदी, ब्र. मधु दीदी, उदयपुर आदि बहनों का सहयोग आत्म साधना में रहा ।

डॉ. श्रेयांश जैन, बडौत (अध्यक्ष) अखिल भारतीय शास्त्री परिषद, पं. विनोद जैन, रजवांस मंत्री अखिल भारतीय शास्त्री परिषद, डॉ. नरेन्द्र जैन, गाजियाबाद, पं. रमेशचंद्र जी बांझल, इंदौर, डॉ. अनुपम जैन, इंदौर, डॉ. अरविन्द जैन, इंदौर, डॉ.

संगीता मेहता, इंदौर, डॉ. प्रकाश जी छाबडा, इंदौर, डॉ. सुनील संजय, ललितपुर, डॉ. बाहुबली जैन, इंदौर, डॉ. सुमित कुमार जैन, उदयपुर, डॉ. ज्योतिबाबू जैन, उदयपुद, डॉ. आशीष जैन, बम्हौरी, डॉ. पंकज जैन, इंदौर, डॉ. भरत जैन, इंदौर, पं. सुरेश मारौरा, इंदौर, पं. जयकुमार जैन, पं. लोकेश जैन, गनौड़ा, पं. विकाश छाबडा, इंदौर, डॉ. महेन्द्र मनुज, इंदौर, डॉ. मुकेश विमल, इंदौर, पं. प्रकाश जी छाबड़ा, पं. रमेशचंद्र जी विद्वानजन् उपस्थित रहें।

श्रीमति रूकमणि जैन, प्रतापगढ़ राजस्थान (बहन), श्रीमति चंदा जैन, उदयपुर (भांजी), श्रीमति वीणा जैन, उदयपुर (भांजी), श्री प्रकाश मांगीलाल जैन, टीमरूवा, श्री दिनेश मांगीलाल जैन, टीमरूवा, श्री महावीर जमफलान जी, टीमरूवा, श्री मनोज जमफलान जी, टीमरूवा, श्री कांता दिनेश कुमार, टीमरूवा, श्रीमति शकुन्तलावेन शांतलाल जी, वाराबेन कस्तुचंद जी, अखावन, शांतीलाल जी काइलालजी संघवी, शौभनावेन माघवलाल जी, संघवी, माधवलाल जी ऋभुलाल जी, संघवी, वीरेन्द्र माधवलाल जी संघवी, चंदावेन जीवनलाल जी, कृणावा, जीवनलाल जी अंबालाल जी, कुणावा, गुणमालाबेन श्यामलाल जी अखावा, लक्ष्मीबेन अशोककुमार जी, जींगवा, योगीताबेन मनोजकुमार, टीमरूवा श्यामलाल जी रंगलाल जी, टीमरूवा, वीरेन्द्रकुमार शांतीलाल जी, टीमरूवा, नविनचन्द्र फतहलाल जी पटवारी, चिराग महेशभाई पटवारी, लीलाबेन केशरीमल जी, मंजुलाबेन महेन्द्र कुमार जी, महेन्द्रकुमार जी , स्नेहलताबेन ऋषभकुमार जी सलावन, ऋषभकुमार जी न्यायचंद जी सलावन, प्रमिला बेन अमृतलाल जी संघवी, कैलासबेन विजयकुमार जी, जयश्री बेन ऋषभकुमार जी, डिम्पल बेन दिनेश कुमार जी, तेजल बेन भानुकुमार जी नावडीया, हियुबेन विपुलकुमार शाह, रीनाबेन विशाल कुमार छुदाया, सीमा बेन विशालकुमार नावडीया, आशिष अशोक कुमार जींतावत, मेघा आशिष कुमार जींतावत, जयंतीलाल छगनलाल, उषाबेन जयंतीलाल, अंकित जयंतीलाल, नीडी अंकित, मयंक जयंतीलाल, तेजस अशोककुमार, सचीता तेजस, सुमतीलाल मगनलाल, गुसाज बेन सुमतीलाल, जाजरमसल केशुसासल, यहजिन जासजरसमल, दुनकमसल मांगीलाल, भंवरी जैन कनकमसल, आशीष अशोककुमार, आशा जैन आशीष कुमार, चिराग महेशभाई पटवारी आदि परिजन उपस्थित रहे।

विनयांजली सभा एवं शांतिविधान 5 अप्रैल 2025 को समवशरण परिसर में रखा गया जिसका संचालन हंसमुख गांधी ने किया । विधि-विधान प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़ तथा ब्र. जिनेश मलैया पंचबालयति मंदिर इंदौर ने कराया।

कार्यक्रम में मुनि श्री निर्णयसागरजी महाराज, मुनि श्री महिमासागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री अटलसागर जी महाराज, ब्र. रेखा दीदी, ब्र. शशि दीदी, ब्र. स्वर्णा दीदी, ब्र. सरीता दीदी, ब्र. उर्मिला दीदी, ब्र. सुनंदा दीदी, ब्र. अनीता दीदी अनंतपुरा, ब्र. संगीता दीदी, ब्र. सुषमा दीदी, ब्र. अनिता दीदी कटनी, ब्र. किरण दीदी सागर, ब्र. साधना दीदी पिपरई, मधु दीदी उदयपुर, ब्र. शांता दीदी, ब्र. शशि दीदी टीकमगढ़, ब्र. कल्पना दीदी टीकमगढ़ आदि तथा शास्त्री परिषद के महामंत्री ब्र. जयकुमार जी निशांत टीकमगढ़, ब्र. जिनेश मलैया पंचबालयति इंदौर, ब्र. अभय भैया, ब्र. सुनील भैया, ब्र. हरीश भैया, ब्र. तरूण भैया आदि ने अपनी विनयांजली अर्पित की।

इसके साथ-साथ समाज की कई संस्थाओं के पदाधिकारियों में श्रीमति पुष्पा कासलीवाल, रानी दोषी, संजय जैन, भरत मोदी, गिरि सेठी,अरूण सेठी, पंडित रमेशचंद्र बांझल, आजाद बीड़ी वाले, कैलाशचंद वैद्य, रचना बहन, अशोक दोषी, बहुमंडल सुरभी पहाड़िया, डी.के.जैन, अक्षय कासलीवाल, पंडित प्रकाश छाबडा, सुशीला सालगिया, जयश्री टोग्या, हेमा लुहाडिया आदि ने पंडित जी के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये विनयांजली प्रेषित की।

अंतिम श्वांस श्री दिगम्बर जैन उदासीन श्राविकाश्रम में ॐ नमः सिद्धेभ्यः कहते हुये 2 अप्रैल रात्रि 11 बजे ली। तथा अंतिम संस्कार में हाथी, रथ, बैण्ड, आदि के द्वारा श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र गोमटगिरि की तलहटी पर श्री सुभाष जी सांवरिया जी की जमीन पर किया गया। अंतिम संस्कार में हजारों श्रावक-श्राविकायें उपस्थित थे तथा रास्ते में पढ़ने वाले सभी मंदिरों के श्रावक श्राविकाओं ने अपने मंदिर के बाहर आकर आत्मानंद जी को श्रीफल समर्पित कर अपनी विनयांजली रखी। इतना सैलाव एक साधु की समाधि में नहीं उमड़ता है जितना सैलाव आत्मानंद जी की समाधि में उमड़ा तथा श्रद्धा भक्ति प्रकट की।

इसी के साथ श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में मुनि श्री निर्णयसागर महाराज जी, क्षुल्लक श्री अटलसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 15 अप्रैल 2025 को श्री आत्मानंद जी (पंडित श्री रतनलाल जी) इंदौर की समाधि के पश्चात् गुणानुवाद सभा तीर्थंकर वाटिका में सम्पन्न हुई। जिसमें उदासीन आश्रम के अधिष्ठाता ब्र. अनिल भैया के साथ सभी ब्रह्मचारी भाई तथा उदासीन श्राविकाश्रम की अधिष्ठात्री उर्मिला दीदी तथा उपधाष्ठात्री विजया दीदी के साथ सभी ब्रह्मचारिणी बहनों के साथ-साथ समाज के वरिष्ठजनों ने पंडित जी के प्रति अपनी विनयांजली प्रेषित की। तथा ब्र. जिनेश मलैया ने घोषणा की ब्र. आत्मानंद जी (दसम प्रतिमाधारी) का स्टेच्यू पंचबालयति मंदिर प्रांगण तीर्थंकर वाटिका में लगाया जायेगा।

कहानी

काम बिना बेचैन

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

शिरपुर नगर में जब परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी का चातुर्मास वर्षायोग 2022 चल रहा था तभी बहुत सारे नगरों से चौका लगाने की दृष्टि से लोग शिरपुर नगर पर आए थे। सब अपनी अपनी श्रद्धा के अनुसार परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जी की आहार देने के लिए आतुर रहते थे वह यह कहा करते थे कितना भी पैसा खर्च क्यों न हो जाए मगर हमारे घर आचार्य श्री का आहार होना चाहिए आचार्य श्री विद्यासागर जी के जब सुबह नौ बजकर पंद्रह मिनिट से कुछ मिनटों के लिए प्रवचन होते थे उन प्रवचनों में मंत्र मुग्ध होकर के श्रावक सुना करते थे। और वह भावना भाते थे उठकर के जब नौ तीस पर या नौ चालीस पर आचार्य विद्यासागर जी मुद्रा बांध करके निकलते थे तो पचहत्तर अस्सी लोग परिवार के साथ लाइनों में खड़े हो जाते थे उन्हें देखकर ही एक युवक किशोर नाम का रोज खड़ा होकर के देखता था वह सोचता था। यदि मेरी टापरी अगर अच्छी होती तो मैं भी अपने घर में आचार्य श्री की चरण रज प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त करता किशोर एक राजपूत समाज से होने के कारण से वह ईमानदार खेत में मजदूरी करने वाला एक मजदूर व्यक्ति था। उसकी उचाई लंबी भाषा कड़क और इसके साथ साथ वह दुबला पतला चार बेटियों का पिता था। वह हमेशा एक बात सोचता था कि मेरे टीन के टापरे में कब आचार्य विद्यासागर जी के चरण पढ़ेंगे वह यह सोच सोच कर के सदैव दुखी सा होता रहता था। किशोर के घर के सामने पूना के एक स्वप्निल कोठारी भी चौका लगाते थे।

जब शाम को वह बैठता था तो स्वप्निल कोठारी उसको अपने पास बुला लेते थे और उसकी बातें सुना करते थे स्वप्निल कोठारी को यह लगा कि यह व्यक्ति साधन विहीन आस्था से युक्त है इसके लिए कैसे हम अच्छा और समृद्ध और स्वावलंबी बना दें। इसके

लिए एक बार स्वप्निल ने कहा किशोर भाई तुम्हें क्या चाहिए है किशोर ने कहा नहीं भैया मुझे कुछ नहीं चाहिए मेरे पास सब कुछ है । मुझे अगर चाहिए तो एक बार मेरे घर पर आचार्य श्री के चरण पड़ जाएँ बस में यही चाहता हूँ क्योंकि मेरी गरीब की कुटिया है सब लोगों ने हर घर में चौका लगा लिए पर मेरे घर में किसी ने भी चौका नहीं लगाया । क्योंकि मेरे पास सिर्फ दस बाय चालीस का मकान है और उसमें कुछ भी नहीं है हाँ पर एक बात अवश्य है कि एक दिन अमित हमसे कह रहा था कि हम तुम्हारे मकान के सामने दुकान लगाना चाहते हैं तो अभी तक वह लौटकर नहीं आया तो स्वप्निल ने कहा चिंता मत करो वह जरूर आएगा लेकिन किशोर भाई एक बात समझ लेना कि तुम्हारे लिए एक बार आचार्य विद्यासागर जी के चरण अगर तुमने छू भी लिए तो तुम बहुत पापों से मुक्त हो जाओगे किशोर ने कहा बड़े-बड़े आदमियों से घिरे हुए आचार्य विद्यासागर जी के चरण कैसे छू सकते हैं।

तो किशोर ने एक दिन घर के सामने से आचार्य श्री जा रहे थे उसने लाइन में लगने की कोशिश की चरण छूने की परंतु स्वयं सेवक ब्रह्मचारियों ने उसे पकड़ लिया और पीछे कर दिया बेचारा पीछे खड़ा हो गया कि आज मौका मिला था चरण छूने का लेकिन नहीं छू पाया। आचार्य श्री जब शिरपुर मे चातुर्मास रत थे तब दोनों तरफ लाइन बन जाती थी और पवली मंदिर तक दोनों तरफ लाइन बनी रहती थी इतनी भीड़ देखकर के भी किशोर ने चरण छूने का साहस किया परंतु असफल रहा फिर उसने कहा क्या करें तो स्वप्निल ने पूछा उसे क्यों भाई आज तो तुमने कहा था हम चरण छू लेंगे तो किशोर ने कहा भैया में चरण छूने गया भी था लेकिन वालेन्टीयरों ने मुझे पीछे धकेल दिया और चरण नहीं छूने दिए। स्वप्निल ने कहा देखो भाई किशोर चलते समय चरण नहीं छूए जाते है क्योंकि आचार्य श्री इस समय काफी उम्र दराज हैं उनका शरीर भी कमजोर है और वे हो सकता है कि किसी के भी पैर हाथ आने पर गिर सकते हैं इसलिए कोई भी व्यक्ति को अनेक चरण नहीं छूने देते हैं। स्वयं सेवक इसी बात के लिए लगे रहते हैं हम लोगों ने भी कभी चरण नहीं छूए और एक बोर्ड और लगा दिया गया है तुमने शायद कभी पढ़ा हो किशोर या ना पढ़ा हो। उसमें लिखा है चरण नहीं आचरण छुएँ किशोर ने भी यही बात तय कि आचरण कैसे छुए जा सकते है स्वप्निल से पूछा।

स्वप्निल ने कहा देखो आचरण अपन आचार्य विद्यासागर जी के लिए देखें उनके आचरण कैसे हैं तो किशोर ने कहा हमें तो वे कलियुगी भगवान लगते हैं कि इतने बड़े नग्न दिगम्बर क्योंकि हम लोग अभी तक शिरपुर में उन साधुओं को देखते आये जिन साधुओं के पास एक हाथ में डंडा होता है पैर में चप्पल होती है सफेद कपड़े पहने हुए होते हैं और वे उनके भोजन कब होते है कहां होते हैं एक दो बार तो वो मेरे घर भी आए एक दर्शना बाईजी मुंबई की थी वह बाई एक दो बार महाराज साहब को लेकर के आई उन्होंने हमारे घर से भी कुछ सामान लिया हमने भी दिया। लेकिन इन आचार्य विद्यासागर जी और उन संतों के

बीच में बहुत अंतर है।

स्वप्निल ने कहा किशोर भाई यही तो समझने की बात हैं कि ये दिगंबर साधु हैं वो श्वेताम्बर साधु हैं जैन दोनों है लेकिन दोनों की साधना पद्धति में अंतर हैं। वे जब आहार लेते तो हाथ में आहार लेते हैं, कोई पात्र नहीं रखते और ये लोग पात्र में लेकर के जाते हैं किशोर ने पूछा कि स्वप्निल सेठ ये बताओं कि ये कपड़े लाठी वाले साधु भोजन ले जाकर अपने स्थान पर खाते हैं और तुम्हारे ये नग्न साधु घर आकर अपने हाथ पात्र में आहार लेते है, ऐसा क्यों ? स्वप्निल ने कहा देखो किशोर भाई तुम पढ़े लिखे तो होगे, नहीं भैय्या में पढ़ा लिखा नहीं हूँ छठवी तक पढ़ा हूँ मुझे ज्यादा नहीं आता स्कूल में मैं भी पढ़ा नहीं हूँ ज्यादातर मैंने स्कूल में जाकर के सिर्फ कामचोरी ही की है, पढ़ाई नहीं की है। ठीक है कोई बात नहीं देखो मैं तुम्हें बता रहा हूँ तुमने एक चन्द्रगुप्त मौर्य का नाम सुना है किशोर ने कहा हमें क्लास में मौर्य साम्राज्य के नाम से पढ़ाया जाता था।

उस समय चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में बारह वर्ष का अकाल पड़ा था और उस समय बारह वर्ष का अकाल पड़ने के कारण से आचार्य भद्रबाहु अपने सभी साधुओं को लेकर के दक्षिण भारत चले गए थे लेकिन कुछ साधु श्रेष्ठियों की बातें में आकर के वे उत्तर भारत के उज्जैन में ही रूक गये थे। श्रेष्ठियों ने उनसे कहा था कि आपकी पूरी सेवा करेंगे आपको सब कुछ देंगे लेकिन जब वो आहार को निकलते थे तो उस समय उनके पीछे दुखिहारी लोग जो भूखे रहते थे साधन विहीन थे जिनके पास खाने के लिए कुछ नहीं होता था, वो रोने लगे तो साधुओं को अंतराय आने लगा तो उन्होंने कहा अब ऐसा करते हैं कि अपन एक डिब्बा कर लेंगे और उस डिब्बे में भोजन सामग्री रात में लेकर जाकर के दिन में खा लिया करेंगे। यह उन्होंने करना शुरु किया और इसी डिब्बे को पात्र बोलते हैं और हमारे दिगंबर जो साधु होते हैं वह हाथ को ही पात्र बनाते हैं कोई भी पात्र नहीं लेते अब इसके बाद फिर क्या हुआ एक रात में श्रेष्ठी की पुत्र वधू अंधेरे में नंगे व्यक्ति (मुनि)को देखकर के भयभीत हो गयी और भयभीत होने के कारण से उसके गर्भपात हो गया तब साधुओं ने यह तय किया कि अब अपन एक सामने कपड़ा लटका लेंगे इसको अर्ध फालक कहते हैं स्वप्निल कोठारी जब यह बात समझा रहा था तभी एक सज्जन और आकार खड़े हो गये जिनका नाम प्रीतम देशमुख था।

प्रीतम देशमुख भी खड़ा होकर के सुनने लगा। सुनते ही वह बोले एक बात बताओं एक कपड़े सामने लटकाते थे ये पूरे कपड़े क्यों पहनने लगे तो स्वप्निल सेठ ने कहा जैसे किसी आदमी को कोई सुविधा मिल जाये तो वो आदमी सुविधा का दुरुपयोग करता है। आचारांग के लोक सागर में लिखा है कि जिन्हें ठंड सहन न हो गर्मी सहन न हो लज्जा को जो जीत नहीं सकते हों तो वे एक लंगोटी लगा सकते हैं लेकिन ये लंगोटी के स्थान पर तो ये तो पूरे चौदा उपकरण लेकर के घूमने लगे किशोर ने कहा भैय्या हम लोगों की तो जिंदगी पूरी निकल गई इन्हीं साधुओं को देखा है। आज पहली बार हमारे गांव में दिगंबर साधु आचार्य

विद्यासागर जी यहाँ आए और उनको देखकर के पूरा गांव ही नहीं पूरा इलाका उनका भक्त बन चुका है और सब लोगों ने अपने अपने मकान जैसे हमारे राजू का ये उन्होंने अपने पूरे मकान का किसी से कोई किराया लिये बिना चौका लगाने के लिए उन्होंने कह दिया कि कोई भी चौका लगा सकता हैं।

अब प्रीतम भाई देशमुख ने एक प्रश्न किया भैया एक बात बताओं तुम्हारे महाराज जी हाथ में लेते हैं तो उसमें से नीचे गिरता है तो इसमें हिंसा नहीं होगी। तो स्वप्निल ने कहा देखो भाई इतना शास्त्रों का ज्ञान तो नहीं मैं रखता हूँ फिर भी मैं एक बात कह सकता हूं हिंसा तो हर जगह होती है लेकिन जैन आगम में एक बात कही गई है **प्रमत्त योगात् प्राण व्यपरोपणं हिंसा** प्रमाद के योग से जो प्राणों का व्यपरोपण होता है उसे हिंसा कहते हैं ऐसे तो फिर अपन सांस लेते सांस लेने में भी जीव हिंसा बोले प्रीतम ने कहा कुछ साधु मुंह पर पट्टी बांधे थे मैंने उनसे कहा कि आप पट्टी क्यों बांधते हैं मुंह पर तो उन्होंने यह कहा कि हम श्वास लेते बोलते हैं तो उसमें से जीव हिंसा होती है इसलिए हमने मुख पट्टी लगा रखी है, तो देखो हवा में जीव हैं पानी में जीव है पृथ्वी में जीव सब जगह जीव हैं लेकिन जैन आचार्यों ने एक बात कही है कि जहां आलस्य पूर्वक प्रमाद पूर्वक जो कार्य किया जाता है उस प्रमाद पूर्वक होने वाले कार्य में हिंसा होती है और जहां प्रमाद नहीं होता है वहां पर प्राणों का व्यपरोपण भी हो जाए तो हिंसा नहीं होती है। इसलिए किशोर भाई तुम एक बात समझो अगर अन्न नीचे गिर भी जाए तो हिंसा नहीं होती है। और एक और चीज तुम्हें बता दूं वहां पर एक बर्तन रखा दिया जाता है उसमें सब एकट्ठा होता है फिर श्रावक अपने विवेक से जहां जीव जंतु न हो वहां पर डालते हैं तो प्रीतम ने एक बात पूछी स्वप्निल कोठारी से कि भैया तुम्हारे दिगंबर महाराज जी कितनी बार भोजन लेते हैं तो उसने कहा दिगंबर महाराज जी सिर्फ एक ही बार भोजन लेते हैं एक ही बार पानी लेते चौबीस घंटे में अगर बाल निकल आए, कोई जीव जंतु निकल आए कुछ भी निकल आए तो फिर भोजन छोड़ देते हैं।

भैया श्वेताम्बर साधु कितनी बार लेते हैं ।प्रीतम बोला मैंने तो वहां काम किया है जब महाराज साहब को भूख लगती है तब वो भोजन करने लगते हैं जब प्यास लगती तो पानी पीने लगते ऐसा दिगंबर साधु नहीं करते अच्छा किशोर बोला भैया ये बात तो बिल्कुल सही कह रहे हो तुम वे डिब्बे में ले जाते हैं जब उनको भूख लगती सुबह बिस्कुट भी खाते हैं नो नक्कारशी करते हैं शाम को भी खाते हैं, दोपहर में भी खाते हैं जब भूख लगती तब खाते हैं तो यह बातें जो चल रही थी तो स्वप्निल बोला किशोर तुम इतने अच्छे आदमी हो तुम एक काम कर सकते हो क्या बोले तुम पूरे परिवार को लेकर के पूना चलो मैं तुम्हारे लिए पूना में अपने यहाँ नौकरी दिला दूंगा और जितना तुम जो कुछ भी कहोगे वह देंगे किशोर बोला नहीं भैया हमें शिरपुर छोड़ने की कोई इच्छा नही है। क्योंकि शिरपुर मेरा सबसे अच्छा गांव है। स्वप्निल ने कहा मगर एक ध्यान रखो तुम कितना कमाते हो खेत में जाके हमारे यहां

काम करोगे तो ए.सी. में रहोगे हम तुम्हें भोजन व्यवस्था भी देंगे सब चीजें देगे पूरे परिवार को तुम्हारी बच्चियों को पढ़ायेंगे लिखायेंगे सब कुछ कराएंगे तुम जैसे अच्छे आदमी से मैं एक ही बात कहता हूँ कि तुम एक बार मेरे साथ पूना चलो किशोर ने कहा हम सोच कर के बताएंगे।

किशोर दो तीन दिन तक स्वप्निल से मिला नहीं चौथे दिन जब स्वप्निल बाहर बैटा था तब किशोर भी घर से बाहर निकला तो स्वप्निल ने किशोर को बुलाया बोले किशोर भाई यार तुमने तो मेरे पास आना ही बंद कर दिया बोले नहीं-नहीं ऐसी बात नहीं थोड़ा मैं खेत में जाने लगा था अभी तो इसलिए नहीं आ पाया निंदाई चल रही है ना। ठीक है कोई बात नहीं अच्छा अब तुम बताओ तुमने क्या डिसीजन लिया कि मेरे साथ जाने का। हम ऐसा करेंगे एक महीने तुम्हारे गांव चलेंगे और फिर हम जा करके सब कुछ देखेंगे दूसरे दिन स्वप्निल सेठ के यहां कोठारी के यहा आचार्य विद्यासागर जी महाराज जी के आहार हो गए आहार होने के बाद किशोर से कहा कि किशोर अब मेरे यहाँ आचार्य विद्यासागर जी के आहार हो गये हैं अब तुम एक काम करो तुम मेरे साथ पूना चलो क्योंकि मेरे भी सब महाराजों के आहार हो गए आचार्य श्री के होना थे वो भी हो गए। मैं कल जाऊंगा तो किशोर से कहा कि तुम अपनी तैयारी कर लो कल अपन को चलना है। गाड़ी अपनी तैयार है किशोर ने कहा ठीक है मैं एक महीने के लिए चलूंगा किशोर स्वप्निल कोठारी के साथ पूना चला गया।

पुणे में चकाचौंध बिजली सब चीजें देखी तो सब पहले मजदूरी करने के लिए किशोर मुंबई भी जा चुका था और मुंबई जाने के बाद उसने मुंबई में बिल्डिंगों में काम किया था पर यहां जब वह आया देखा बहुत बड़ा मकान उस मकान में भी कई कमरे और रहने वाले सिर्फ चार लोग बंगला बहुत बड़ा था पेड़ पौधे सब प्रकार के लगे थे किशोर देख के चार पांच दिन तो बहुत अच्छा रहा फिर इसके बाद उसका मन पूना से उखड़ने लगा इस बात को स्वप्निल ने समझ लिया कि कुछ बिल्कुल गुमसुम सा किशोर रहता है वह बात भी नहीं करता है क्या बात है एक दिन किशोर से पूछा किशोर गुमसुम क्यों रहते हो,क्या करते देखो हम तो चलो हम तुम्हारे लिए आज घुमाने ले चलते हैं किशोर को गाड़ी घुमाने ले गए उन्होंने सोचा इसका मन बहल जाएगा लेकिन किशोर का मन बहल नहीं पाया किशोर पंद्रह दिन बीत जाने के बाद किशोर बोला मुझे शिरपुर जाना है तो स्वप्निल ने कहा क्यों जाना हैं। क्या बात हो गई भाई बोलो मेरे लिए अच्छा नहीं लग रहे हैं अरे बोलो क्या अच्छा नहीं लग रहा है कितना अच्छा है इससे अच्छा और क्या हो सकता है किशोर ने कहा हमारे लिए यह कोई काम नहीं है हम बिना काम के थक जाते हैं हमें काम चाहिए काम नहीं होने से दिन भर बिल्कुल सुस्त सा रहता है। स्वप्निल ने कहा भाई तुम एक काम करो हम तुम्हारे कमरे में टीवी रख देते हैं तो टीवी देखते रहा करें किशोर ने कहा टीवी देख कब तक क्या करेंगे फिर भी टी.वी ला कर रखी गई टी.वी. देखने के बाद भी उसका मन नही लगा

आखिरकार उसने एक काम किया अपनी पत्नी को फोन लगा दिया और यह कह दिया कि तुम यह बोल देना कि लड़की की तबीयत बहुत खराब है और तुम जल्दी- जल्दी से आ जाओ।

किशोर की बात जम गई और किशोर की पत्नी ने स्वप्निल कोठारी से फोन नंबर पर नंबर लगा दिया और कहा कि हमारी किशोर जी से बात कराओ किशोर से बात कराने के लिए जैसे ही वो फोन उन्हों ने सुना तो किशोर को बुलाया बोले किशोर तुम्हारी पत्नी का फोन आया है लो बात करो किशोर ने बात की बोले सृष्टि की बहुत ज्यादा तबीयत खराब हो रही है तुम आ जाओ किशोर ने कहा भैया मेरी बेटी बहुत अच्छी है पढ़ी लिखी होशियार है पढ़ने में बहुत तेज है अगर उसको कुछ हो गया तब मेरा मन नही लग रहा है उसने कहा नहीं नहीं तुम एक काम करो यही पर बुला लो हम अच्छा इलाज करा देंगे किशोर ने कहा भैया हम यहां नही बुला सकते हैं बच्ची को वहां पर इलाज करवाना पड़ेगा तुम तो हमारे लिए जाने के लिए स्वप्निल ने कहा भैया एक बात बताओ तुम्हें इतना सब कुछ हम दे रहे तुम्हारा मन क्यों नहीं लगता है । किशोर ने कहा भैया मेरा मन इसलिए नहीं लगता है कि यह हाँ कोई काम नहीं है मुझे जब तक हाथों में काम नहीं मिलता हैं मैं दिनभर कुछ न कुछ मजदूरी मेहनत नहीं कर लूँ तब तक मेरा मन नहीं लगता। तुम्हें यह बात पता होना चाहिए हाँ यार स्वप्निल ने कहा एक बात मैंने भी सुनी है कहानी भी है शांताराम की एक फिल्म देखी थी वह फिल्म भी दो आँखे बारह हाथ उसमें उनके लिए जेल के कैदियों को सब कुछ देते थे लेकिन उन्हें बीड़ी लगाना बहुत जरूरी होता था तो वो रात में जब उनको जब तक नींद नहीं आती थी जब तक वो बीड़ी न लगा लें ठीक इसी तरीके से होता है तो कोई बात नहीं हम तुम्हें काम देंगे काम करोगे लेकिन किशोर ने कहा कोई काम दीखता तो नहीं है दो दिन और बिताए तीसरी दिन उसने कहा भैया आज तो मैं जाऊँगा और उसने पूना घर के बंगले से निकलना तय कर लिया अपना बैग झोला वगैरह सब जमा लिया और वह निकलने के लिए तैयार हुआ जब किशोर स्वप्निल से विदाई ले रहा था तो स्वप्निल की आँखों में आंसू आ गए और वह स्वप्निल एक बात सोचने लगा कि एक व्यक्ति ऐसा है जिसे काम चाहिए और बहुत सारे हमारे यहाँ नौकर आए हैं जिन्हें हम काम छोटा सा भी देते थे को कामचोरी किया करते थे तो ये आदमी और उन आदमियों में कितना अंतर है उस श्रद्धा से स्वप्निल भरा हुआ था। और किशोर को एक बात और लग रही थी कि पुणे में सब कुछ तो है पर आचार्य विद्यासागर जी तो नहीं है इसलिए किशोर ने आचार्य विद्यासागर जी के दर्शन रोज अगर मिलेंगे तो शिरपुर में मिलेंगे और शिरपुर में मिलने के बाद अपन उनके एकाद दिन चरण जरूर छू लेंगे इसी आशा और विश्वास के साथ शिरपुर के लिए बैठ गया और शिरपुर आने के बाद जब शिरपुर आया तो एक दिन वह भीड़ में घुस ही गया और आचार्य श्री जब बाहर खड़े कुछ देख रहे थे तभी उसने चरण छू लिए और जब उसने चरण छू लिए तभी किशोर की जिंदगी में एक बहुत सुख और सुकुन मिल गया।

हमारे गौरव

तीर्थ रक्षक आचार्य आर्यनंदी महाराज

ज्ञान, ध्यान, तप में रत श्रमण संस्कृति की रक्षा तथा प्राचीन तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा व संवर्धन के लिए आचार्य श्री आर्यनंदी जी ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। आपका जन्म 23 फरवरी सन् 1907 को महाराष्ट्र में मराठवाड़ा संभाग में ठोरकीन ग्राम में हुआ। पिता श्री लक्ष्मणराव और श्रीमति कृष्णा बाई ने अपने इस पुत्र का नामकरण किया शंकर। वे दिगम्बर जैसवाल जैन थे। आगे चलकर शंकर ने अपने नाम को सार्थक किया। उनके एक भाई और दो बहिने थी।

अर्जन: बालक शंकर ने कक्षा 12 तक शिक्षा प्राप्त की। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण आगे अध्ययन न कर सके। पार्वती देवी से विवाह कर आपने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया। आप एक पुत्र एवं दो पुत्रियों के पिता बने।

अध्ययन के पश्चात् निजाम सरकार के कस्टम ऑफिस में पेशकार के पद पर कार्य करने लगे। इस सेवाकाल में उन्हें प्रलोभन के कई अवसर मिले पर वे धर्म और न्याय के पथ पर अडिग रहे। सेवा निवृत्ति के उपरांत तो धर्मध्यान में संलग्न हो गये।

वैराग्य की राहों पर: धार्मिक संस्कार और श्रमणों की संगति ही आपके वैराग्य में निमित्त बनी। वैराग्य भाव से संपन्न वे दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र कुंथलगिरि गये। वहाँ विराजमान आचार्य श्री समन्तभद्र जी महाराज से 13 नवम्बर सन् 1959 को मुनि दीक्षा अंगीकार की। तब से निरंतर धार्मिक ग्रंथों का स्वाध्याय व मनन किया। वे मराठी, अंग्रेजी, उर्दू, गुजराती, संस्कृत और हिन्दी भाषा के ज्ञाता थे।

मुनि श्री स्वाध्याय प्रेमी, विद्वानों के प्रति अनुरागी थे। आचार्य श्री की प्रेरणा से एलोरा एवं नवागढ़ के गुरुकुलों की स्थापना हुई। उनके उत्कर्ष के लिये समाज को प्रेरित कर आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाया। तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण-संवर्धन में कार्यरत एक मात्र संस्था दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी को संकल्पित कर एक करोड़ रूपये का ध्रुवफंड की राशि एकत्रित करने के लिए भारतवर्ष में विहार किया। इसी प्रकार आपने हिन्दी एवं मराठी साहित्य में स्वयं एवं अन्यों को प्रेरणा देकर विकास किया है आपने लगभग 30,000 किमी. की पदयात्रा कर संकल्प को पूर्ण किया। आपने अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, मंदिरों के जीर्णोद्धार के ऐतिहासिक कार्य किये।

समाधिमरण: एक ओर जहाँ आचार्य श्री का 94 वां जन्म जयंती उत्सव का भव्यता के साथ आयोजन चल ही रहा था, वहीं महाराष्ट्र प्रांत में परभणी जिले के सुप्रसिद्ध प्राचीन ऐतिहासिक श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र नवागढ़ में तीर्थरक्षा शिरोमणि आचार्य आर्यनंदी महाराज का जन्म फरवरी 2000 को सायंकाल 7.20 पर सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण हो गया।

संस्कृति का सम्मेलन है चातुर्मास

❊ डॉ. सुनील जैन (संचय) ललितपुर ❊

श्रमण, वैदिक और बौद्ध संस्कृति में चातुर्मास की व्यवस्था है। साल के सावन, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक इन चार माह में चातुर्मास होता है। कैलेण्डर के अनुसार ये माह वर्षा काल के माने गये हैं । इन दिनों अधिक वर्षा होने से जीवों की उत्पत्ति अधिक होती है। ऐसे में उन जीवों की हिंसा न हो जाए, इस भाव से चातुर्मास इन चार माह में ही होता है।

चातुर्मास आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी से प्रारंभ होता है कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि तक माना जाता है। चातुर्मास धार्मिक जगत की धुरी है। वर्षावास या चातुर्मास का न केवल पर्यावरण व कृषि के दृष्टिकोण से वरन् धार्मिक दृष्टिकोण से भी विशेष महत्त्व है। वर्षा ऋतु में जीवोत्पत्ति विशेष रूप से हो जाती है। पानी के सम्पर्क में आकर भूमि में दबे बीज अंकुरित हो जाते हैं। सीलन, फलन, फफूंद काई की उत्पत्ति हो जाती है। त्रस व स्थावर जीवों की अधिकता के कारण उनकी विराधना की संभावना अधिक हो जाती है। जगह-जगह जल एकत्रित हो जाने से एक गांव से दूसरे गांव या शहर तक पगडण्डी द्वारा विहार संभव नहीं हो पाता है। आगम शास्त्रों में भी स्पष्ट निर्देश हैं कि चातुर्मास के दौरान साधु-साध्वियों को विहार नहीं करना चाहिए। चातुर्मास का संयोग हमारी मनःस्थिति से भरे विभिन्न प्रदूषणों को समाप्त करने के साथ ही दुष्प्रवृत्तियों को सत्यवृत्तियों में बदलने का कार्य करता है।

मन, वचन और शरीर को शुद्ध करने का पर्व चातुर्मास है। इन चार महीनों में कई धार्मिक पर्व आते हैं जो मनुष्य को धर्म अध्यात्म के करीब लाने का कार्य करते हैं। आध्यात्मिक जागृति का पर्व चातुर्मास माना जाता है। यह जीवन को साधने का स्वर्णिम समय होता है। इन दिनों अधिक वर्षा होने से जीवों की उत्पत्ति अधिक होती है। ऐसे में उन जीवों की हिंसा न हो जाए, इस भाव से जैन संत-साध्वी एक स्थान पर चार माह रूककर साधना करते हैं इसे ही चातुर्मास कहा जाता है। श्रावक और संत के जुड़ाव का वाहक चातुर्मास दो किनारों को जोड़ने का काम करता है। धर्म रूपी रथ को चलाने के लिए दो पहिए हैं , एक श्रावक और दूसरा संत। इन श्रावक साधु की साधना में सहयोगी बनकर उन सब साधनों को उपलब्ध करवाता है। जो उसकी साधना में अत्यंत आवश्यक है और साधु, श्रावक को पाप और कषाय से बचने का मार्ग बताकर, उसके पापों का प्रक्षालन करने के लिए प्रायश्चित देता है।

श्रावक साधु की संगति में अपने वैराग्य एवं संयम साधना की वृद्धि करे उनकी साधना में सहयोगी बने। भौतिक संसाधनों से उन्हें दूर रखें, लौकिक कार्यों में न उलझाएं, पारिवारिक कृत्यों की चर्चा न करके धार्मिक चर्चा करें। शंका समाधान करके जिनवाणी का श्रद्धान बढ़ाएं।

यह समय आध्यात्मिक क्षेत्र में लगातार नई ऊंचाइयों को छूने हेतु प्रेरित करने के लिए है।

अध्यात्म जीवन विकास की वह पगडंडी है जिस पर अग्रसर होकर हम अपने आत्मस्वरूप को पहचानने की चेष्टा कर सकते हैं।

पूरे चातुर्मास अर्थात 4 महीने तक एक क्षेत्र की मर्यादा में स्थायी रूप से निवास करते हुए जैन दर्शन के अनुसार मौन साधना, ध्यान, उपवास, स्व अवलोकन की प्रक्रिया, सामायिक और प्रतिक्रमण की विशेष साधना, धार्मिक उद्बोधन, संस्कार शिविरों से हर शख्स के मन मंदिर में जनकल्याण की भावना जाग्रत करने का सुप्रयास जारी रहता है। तीर्थंकरों और सिद्धपुरुषों की जीवनियों से अवगत कराने की प्रक्रिया इस पूरे वर्षावास के अनंतर गतिमान रहती है तथा परिणति सुश्रावकों तथा सुश्राविकाओं के द्वारा अनगिनत उपकार कार्यों के रूप में होती है।

चातुर्मास संस्कृति की ध्वजा को फहराता हैः- चातुर्मास धर्म और संस्कृति का एक बहुत बड़ा सम्मेलन है। चातुर्मास आत्म कल्याण मात्र के लिए नहीं है, चातुर्मास उनके लिये भी किया जाता है जो तुम्हारे पैर से कुचल सकते हैं चातुर्मास वह संस्कृति है जिसमें जीने दो की बात है। चातुर्मास में संत अपने लिए ही नहीं बैठते दूसरे के लिए भी बैठते हैं। चातुर्मास जीने दो के लिए किया जाता है। जैन परंपरा में चातुर्मास अषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी से कार्तिक बदी अमावस्या तक होता है।

साधु का चातुर्मास पराधीन नहीं स्वाधीनता होता हैः- चातुर्मास से संस्कृति का निर्माण होता है। साधु का चातुर्मास पराधीन नहीं स्वाधीन होता है। वर्तमान परिपेक्ष्य में आज चातुर्मास के दो रूप हैं। श्रावक अपना चातुर्मास मांगलिक बनाएं। यह चातुर्मास घर-घर में खुशहाली देने वाला बने, हर घर में सुख-समृद्धि हो, चेहरों पर धर्मानन्द छाया रहे।

चातुर्मास में अपनी दैनंदिनी में परिवर्तन लाएंः चातुर्मास में श्रद्धालु भी अपने जीवन में परिवर्तन लाएं। भोजन की थाली में बदलाव लाएं, बुरा देखने-सोचने मे परिवर्तन आना चाहिए। घर को 4 महीने पावन बनाने की कोशिश करें।

चातुर्मास काल में त्याग, वैभव, तप, व्रत और संयम का सागर लहराने लगे, ऐसा सामूहिक प्रयत्न होना चाहिये। हम साधना व आराधना के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की उपेक्षा करते हैं। हमारी जीवन-शैली अहिंसा से प्रभावित हो। हम जितना अधिक संयम का अभ्यास करेंगे, उतना ही अहिंसा का पालन होगा। भगवान महावीर ने चातुर्मास काल में जिनवाणी द्वारा जीने की कला से विश्व को अवगत कराया है। अगर उसके अनुरूप हम चलें तो निश्चित ही यशस्वी मानव बन सकते हैं। जप, तप, सत्संग आदि में समर्पित भाव से सहभागी बनने से ही चातुर्मास की विशेषता अक्षुण्ण रहेगी। चातुर्मास उस दर्पण के समान है, जिसमें झाककर हम जान सकते हैं कि हम धर्म के कितना नजदीक हैं। धर्म का कितना पालन कर रहे हैं। कितनी कलंक- कालिमा हम पर लगी हुई है। चातुर्मास व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व से पहचान कराने का पर्व है। चातुर्मास को पर्व भी कह सकते हैं। चातुर्मास में साधु मानव में मानवता के संस्कार भरने का कार्य करता है। चातुर्मास धर्म रूपी रथ को चलाने के लिए श्रावक और संत दोनों को एक-दूसरे से जोड़ने का पुनीत काम करता है।

क्रमांक-52 वरिष्ठ नागरिक

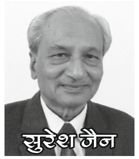

बुढ़ापे में आराम से रहने हेतु सुझाव

1. कम बोलें।
2. आहार पानी में संतोषी रहें।
3. प्रभु का स्मरण अवश्य करें।
4. प्राकृतिक जीवन शैली अपनायें।
5. बहू-बेटी के कार्य में दखल ना दें।
6. मनचाही वस्तु न मिलने पर क्रोध ना करें।
7. अपनी इच्छा पूर्ण कराने की कोशिश ना करें।
8. अपनी धन-सम्पत्ति का बार-बार बखान ना करें।
9. अपने परिवार की समस्यायें दूसरों के सामने न रखें।
10. घर पर आये व्यक्ति से अपने घर की कोई बुराई न करें।
11. अपने स्वास्थ्य के अनुसार घर के कामों में सहयोग करें।
12. बुढ़ापे को नशे से दूर रखें।
13. बुढ़ापे में कष्ट को कर्म फल समझ कर खुशी-खुशी सहन करें।
14. यह आशा न रखे कि हर काम हमसे पूछकर ही किया जायें।
15. ध्यान रहे कर्मोदय से ही सब कुछ प्राप्त हुआ है।
16. खाली हाथ ही आये थे, और खाली हाथ ही जाना है।
17. किसी के व्यापार अथवा परिवार में दखल न दें।
18. अपने आप पर सदा विश्वास रखें।
19. हर चीज का केवल रचनात्मक पक्ष देखें।
20. अपने हम उमर व्यक्तियों से मित्रता रखें।
21. अपनी बीमारी का हर किसी के सामने रोना न रोऐं।
22. कम से कम दिन में दो बार खुल कर हंसे।
23. जिद बिलकुल न करें।
24. गुस्से को त्याग दें।
25. सबसे मधुर संबंध ही अब आपका सबसे बड़ा धन हैं।
26. कभी अपने बुढ़ापे को न कोसें तथा बुढ़ापे का ही आनंद लें।

साइटिका दर्द (Sciatica Pain)
कारण व नियत्रंण उपाय

✼ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✼

साइटिका तंत्रिका यह शरीर की सबसे बड़ी, लंबी व मोटी व्यापक एकल तंत्रिका है, जो पीठ के निचले हिस्से से शुरु होकर पैर तक जाती है। जब यह तंत्रिका या उसकी जड़े दबती हैं या उत्तेजित क्षतिग्रस्त होती है तो साइटिका का दर्द होता है, जो एक तेज चुभने वाली बैचेनी की तरह महसूस हो सकती है जो पीठ के निचले हिस्से कूल्हों और पैरों तक फैल जाता है। यह दर्द बैठने चलने या झुकने जैसे दैनिक कार्यो को मुश्किल बना देता है, यह जीवन की समग्र गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

साइटिका तंत्रिका कई स्पाइनल तंत्रिका जड़ों से बनती है जो पीठ के निचले हिस्से से निकलता है जो निचली रीड से कूल्हे के जोड़ के पीछे, नितंव और दो हिस्सों में विभाजित होकर दाये बायें पैर से घुटने के पीछे तक जाती है, जहाँ यह कई शाखाओं में विभाजित हो जाती है और नीचे पैरों तक जाती है।

साइटिका तंत्रिका पैरों की मांसपेशियों को नियंत्रित करती है और पैरों को हिलाने चलने दौड़ने, घुटने को मोडने और कोल्हे को जोडने की सुविधा प्रदान करती है, संवेदना प्रदान करती है जिससे पैर व पैर के निचले हिस्से में तापमान स्पर्श पहुँचाती है।

दर्द- 1. साइटिका का दर्द असहनीय होता है जिसमें कमर में सुई चुभने का दर्द, ज्यादा देर तक बैठने में कमर में अकड़न होना, पंजों में दर्द व चीटी चलना, दर्द दायें या बायें पैर में होता है।

2. साइटिका दर्द में चाल में लचक, झुनझुनी, सुन्नता और कमजोरी शामिल हो सकती है व पेशाब के रास्ते में दर्द भी हो सकता है। चलने खड़े होने या झुकने में परेशानी, दर्द में नींद नहीं आना आदि।

कारण- 1. बहुत ज्यादा सर्दी लगना, गीली व भींगी स्थानों में बहुत देर तक बैठना या सोना।

2. पीठ में चोट लगना बैठक संबंधी असावधानी से समस्या पैदा होना, साइटिका तंत्रिका पर दबाव डालने वाली मांसपेशियों की जकड़न, शारीरिक निष्क्रियता, मोटापा आदि।

3. साइटिका के सबसे आम कारण (क) हनियेटेड डिस्क- जिसमें रीड में डिस्क का खिसकना (ख) स्पाइनल स्टेनो सिस-रीड़ की हड्डी का संकुचन होने से पीठ दर्द, पैरों टांगों में दर्द सुन्नयता या कमजोरी हो सकती है। (ग) पेट की बीमारी- जिसमे शरीर की हड्डी बड़ी और विकृत कमजोर ट्यूमर व संक्रमण, होना हड्डी में दर्द, हड्डी कमजोर होना, जोड़ों का दर्द अकड़न, सुनने में कमी, सिर दर्द आदि होना।

4. कब्ज- आंतों में मल सूखा व गांठ बनकर इकट्ठा होकर साइटिका तंत्रिका पर दबाव पड़ना।

5. महिलाओं में जरायु के निकटवर्ती किसी स्थान पर ट्यूमर आदि होना या गर्भ में भ्रूण के

साथ जरायु द्वारा साइटिका तंत्रिका पर दबाव पड़ना।

6. वात रोग (रियूमैटिज्म), गठिया रोग (गाउट), 40-50 वर्ष की उम्र में हड्डियों का परिवर्तन व क्षय होना, स्नायु शूल, घात ग्रस्त व्यक्तियों को यह रोग होने की ज्यादा, संभावना होती है।

7. पर्याप्त विटामिन बी-12, विटामिन डी और मैग्निशियम की कमी से नसों के चारों और सुरक्षात्मक परत जिसे माइलिन म्यान कहा जाता है, कमजोर हो जाती है जिससे साइटिका के लक्षण पैदा हो जाते है।

सावधानियाँ- 1. उपरोक्त कारणों को ध्यान में रखते हुए सावधानी रखते हुए शरीर क्षमता से अधिक भार नहीं उठाना, शरीर को ठंडी हवा के झोंको से बचाना प्रभावित भाग को गर्म कपड़ा से ढांक कर रखना सही तरीके से बैठना अचानक नीचे की ओर नहीं झुकाना लम्बा बेल्ट बांधना शरीर को गतिशील बनाना नियमित घूमना, योग आदि करना, सुगर, मोटापा नियंत्रित करना।

2. भोजन में पर्याप्त मात्रा में ताजे फल, सब्जियाँ, प्रोटीन और फाइबर शामिल करें व विटामिन बी-12 एवं विटामिन डी युक्त पोषक दूध, दही, ओट्स पनीर पदार्थों को शामिल करना।

3. तनाव मुक्त होना जिसमें गहरी सांस लेने से तंत्रिका तंत्र को शांत करती है व नियमित रूप से इनको अपनाकर साइटिका जैसी समस्याओं से बचाव किया जा सकता है।

विशेष- 1. आज का युवा वर्ग जिम जाकर अपनी बॉडी बनाने के चक्कर में अधिक बजन उठाते हैं, वजन उठाने के पूर्व कोच की सलाह का पूर्ण रूप से पालन करना व शरीर में तरल पदार्थ की मात्रा बनी रहे, कमर में बेल्ट जरूर लगाये जिससे शरीर की क्षमता बनी रहती है।

उपचार-1. प्रारंभिक अवस्था में गर्म और ठंडे पानी से सिकाई करने से साइटिका दर्द में अस्थाई रूप से आराम पाया जा सकता है व दर्द वाली जगह गर्म पानी की बोतल भरकर दबाने से आराम मिलता है।

2. गंधक का चूर्ण नितम्ब से लेकर नीचे पांव तक छिड़ककर गर्म कपड़े बांधकर रखने से आराम 2-4 दिनों में मिल जाता है।

3. प्रातः काल कुछ समय सुरक्षित स्थान पर पीछे की तरफ चलने से भी लाभ होता है।

4. यह एक सामान्य रोग है जो सावधानियां रखने, योग कसरत से एक माह में आराम हो जाता है।

5. विशेष जानकार मालिश आदि से नस को बैठा देने से आराम मिल जाता है।

6. समय पर उचित इलाज ना करने से या देरी करने से या गंभीर या अन्य उपचार सफल ना होने पर सर्जरी की आवश्यकता होती है।

विशेष- साइटिका होने पर पूरी तरह से आराम नहीं करना चाहिए व सही समय पर उपचार न कराने पर अन्य रोग जैसे मेरू मज्जा क्षय (Locomotor A Taxial) आदि हो सकते है। सभी चिकित्सा पद्धति में इलाज होता है। होम्योपैथी पद्धति में कोलोसिन्थ, मैग्नेशिया फास, अर्निका, एकोनाइट, रसटॉक्स, हाइपेरिकम, एमनम्यिूर औषधियों का रोग के लक्षणों के आधार पर किया जाता है। उपचार के पूर्व अनुभवी समर्पित चिकित्सक की सलाह लेना चाहिये।

हास्य तरंग

1. नये पुलिस इंस्पेक्टर अपने इलाके के ग्राम में निरीक्षण करने गये जहाँ रात्रि होते ही लगभग सभी शराब पी लेते है। इंस्पेक्टर ने ग्राम के सरपंच से पूछा-गाँव में कितने सरकारी कर्मचारी रहते हैं ? सरपंच ने कहा अभी तो एक भी नहीं है, लेकिन थोड़ी देर बार बहुत मिल जायेंगे।

2. एक महिला अपने पति को लेकर मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉक्टर के पास पहुँची बोली पता नहीं इन्हें क्या शंका हो गई है कि ये वजन तौलने की मशीन हैं। डॉक्टर ने महिला के पति से कुछ प्रश्न किये पर कोई उत्तर नहीं दिया तो उन्होंने महिला से पूंछा ये बोलते भी नहीं है ? महिला बोली- पहले इनके मुँह में दस रूपये का सिक्का तो डालिये।

3. भावित अपने दादाजी को अस्पताल लेकर गया। डॉक्टर ने पूंछा इन्हें क्या हुआ है। भावित आज सुबह टीवी पर देखकर योग कर रहे थे। जिसमें सांस अंदर खीचो कुछ देर बाद वापिस छोड़ो। इन्होंने सांस बाहर निकाली कि अचानक बिजली चली जाने से टीवी बंद हो गई और ये सांस अंदर लेना भूल गये।

4. जिलाधीश (गुस्से में) फाइल देखते हुए तुमने कभी गधा देखा है ? कर्मचारी सिर झुकाकर नहीं सर ! जिलाधीश तो नीचे क्या देख रहे हो ? मेरी तरफ देखो।

5. एक पत्रकार ने-वरिष्ठ नेता से पूंछा पिछले 77 वर्षो की आजादी के दौरान आपको कैसा महसूस हो रहा है। नेता जी मंद मुस्कुराहट के साथ शायराना अंदाज में बोले हम तो कुछ ही दिन आजाद रहे। 15 अगस्त के दिन आजादी मिली और 26 जनवरी के दिन हमारी शादी हो गई।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

जैन पनीर मसाला

सामग्री- तेल 1 चम्मच, इलायची 2, धनियां पत्ता 10ग्रा., टमाटर-2, नमक 1/2 चम्मच, मिर्च पावडर 1/2 चम्मच, धनिया पावडर 1/2 चम्मच, काजू 90 नग।

विधिः- ऊपर के सभी पदार्थ 90 मिनिट तक मिक्स करके गरम करना और हल्के हाथों से चम्मच चलाना, कुछ देर उसे ठंडा होने दें, उस सबको मिक्सर में डालकर जरूरी पानी मिलाये और मिक्सर से पीसें।

फिर 2 चम्मच घी, सूखी मिर्च आवश्यकतानुसार घी में डालें और थोडा गरम कर निकाले, फिर उसी घी में जीरा 1/2 चम्मच, हिंग 1/2 चम्मच, मिर्च पावडर आवश्यकतानुसार पेस्ट डाले और उसे 5 मिनिट तक गरम करें, और शक्कर डालें और उसे 5 मिनिट तक ढंककर पकायें, पनीर डालें और उसमें शिमला मिर्च डालें और पनीर डालने उपरांत 2 मिनिट तक पकायें और गरम गरम सर्व करें।

बाल कहानी

कातिल प्रेमी

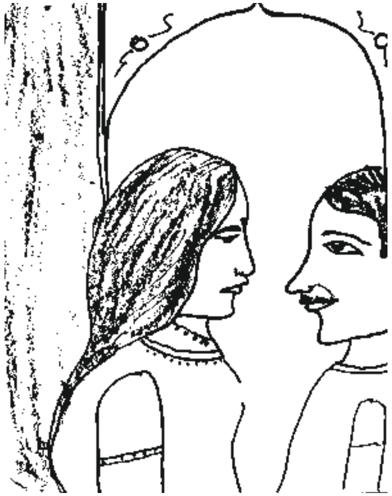

अमेठी की गलियों में घूमने वाले चंदन वर्मा को गली मुहल्ले वाले एक नेक शरीफ इंसान मानते थे परंतु चंदन वर्मा दिखने में जितना सीधा साधा इंसान था उतना ही भीतर से इतना क्रूर होगा यह कोई भी नहीं जानता था चंदन वर्मा के माता-पिता उसकी शादी करने के लिए खूब आतुर थे। चंदन ने हर लड़की को रिजेक्ट कर दिया था। चंदन के रिस्तेदार सब परेशान हो चुके थे। चंदन की पंसद कैसी वह समझ में नहीं आ रहा था।

चंदन अपने माता पिता को यह नहीं बता पा रहा था कि उसकी पसंद पूनम भारती थी जिसने उसे छोड़कर एक शिक्षक से शादी रचा ली थी और गृहस्थी बसा ली थी परंतु चंदन वर्मा पूनम भारती के दिन मे चार चक्कर जरूर लगाता था पूनम से मोबाईल पर बात करता था पूनम भी चाहते हुए भी चंदन से स्पष्ट इंकार नहीं कर पा रही थी कि चंदन पुराने दिन एक सपने की तरह भूल जाने में ही हमारा और आपका भी भला है।

चंदन के मित्रों ने एवं सभी रिश्तेदारों ने समाज बंधुओं ने समझाया कि पूनम को भूल जाओ और कोई अच्छी लड़की को अपना जीवन साथी बनाओ परंतु चंदन सबकी बातें सुनता एक कान ओर दूसरे कान से निकाल देता था। 18 अगस्त को पूनम भारती ने शिकायत दर्ज करायी कि यदि मेरे परिवार में किसी की हत्या होती है तो इसका जिम्मेदार चंदन वर्मा होगा। पूनम की शिकायत के बाद चंदन वर्मा ने शिक्षक के परिवार को परेशान करना शुरु कर दिया। चंदन से पूछतांछ के बाद उसने अपने मोबाईल का बायों चेंज कर दिया और एफ आई आर के बाद पूनम और चंदन वर्मा के बीच बातचीत भी बंद हो गई थी।

एक रात चंदन वर्मा, पूनम भारती के घर में घुसकर गोली बारी करना शुरु कर दी। शिक्षक को तीन गोली मारी और पूजन को दो गोली , बच्चों को एक-एक गोली मारी 5 परिवारों के सदस्यों की हत्या करने के बाद चंदन वर्मा रिवालवर लहराते हुए बाहर निकल गया। खून की होली खेलने के बाद चंदन ने विनाश लीला का खेलकर अपनी जिद और जुनून को पूरा करने में सफल रहा। प्रेम की झूठी लीला रचने के नाम पर वासना को ही पूरा किया। वासना अंधी और स्वार्थी होती हैं। वासना इतनी हिंसक हो सकती है। चंदन वर्मा सच्चा प्रेमी तो साबित नहीं हो पाया किंतु कातिल प्रेमी साबित हुआ।

संस्कार सागर जुलाई 2025

संस्कार गीत

अनुपम जीवन

प्राण शक्ति मय जीवन अनुपम
श्वांसों का व्यवहार है
यह जीवन अनमोल मिला है मात पिता उपहार है

1.
बुद्धि सदा बढ़ाओं अपनी आवेगों में संयम हो
धीरज नहीं कभी भी खोना संघर्षों से परिणाम हो
चलें रास्ता सीधा सच्चा सत्य सरलता सार है।

2.
झूठा प्यार सदा ही धोखा नहीं किसी पर तुम मरना
व्यापक प्रेम बनाओ चेतन नहीं
मुश्किलों से डरना
अरे आत्म हत्या करने का सोच
बहुत बेकार है

3.
सदा साथ नहीं कोई देता नाते झूठे होते हैं
काम वासना आवेगों में
शलभ बने हम जलते हैं
बुरे दिवस भी बीत जायेंगे उनका उपसंहार है।

बाल कविता

जिन मंदिर

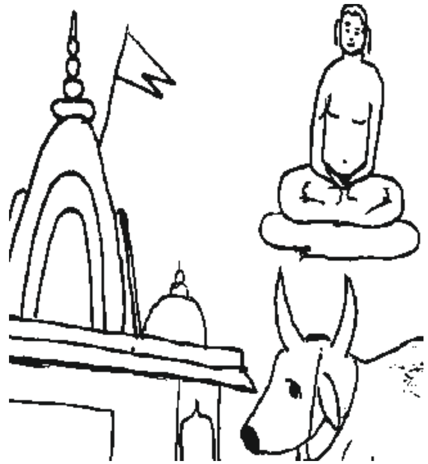

शांति सुख को देने वाला
मंदिर सुंदर शिखरों वाला
मानवता का यह रखवाला
मन के पाप मिटाने वाला
धर्म ध्यान का केन्द्र निराला
जग पीड़ा को हरने वाला
जो भी जिन मंदिर को आये
अपने मन के पाप मिटाये।

समाचार

समाधिमरण

डोंगरगढ़ (छत्तीसगढ़)-वंदनीय साधिका माँ धर्मश्री जी (श्रीमति विमलाबाई जी अशोकनगर निवासी), ब्र. प्रीति दीदी की माँ का समाधिमरण 14 जून 2025 दोप. 12 बजे श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र डोंगरगढ़ आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के समाधिस्थल पर हुआ । आपने आचार्य गुरुवर विद्यासागर महाराज जी से सात प्रतिमा के व्रत 2006 में एवं आचार्य श्री समयसागर जी महाराज जी से दस प्रतिमा के व्रत 2025 में लिये थे।

कटनी- निर्यापक मुनि श्री प्रसादसागर महाराज जी के मुनि श्री पद्मसागरजी, मुनि श्री शीतलसागर महाराज जी के सान्निध्य में दो प्रतिमाधारी 95 वर्ष की श्रीमति हीराबाई का समाधिमरण 4 जून 2025 दोप. 1.30 बजे कटनी (म.प्र.) में हुआ।

जबलपुर- आचार्य श्री समयसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में ब्र. चिदानंद जी (राजेन्द्र कुमार धनगसिया) अजमेर का समाधिमरण लाखा भवन जबलपुर में दिनांक 29 मई 2025 को दोप. 3.55 पर हुआ। आपने दस प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये थे।

विद्यासागर चौराहा इंदौर में घोषित

इंदौर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के नाम से इंदौर नगर में गोम्मटगिरि के पास चौराहे का नाम विद्यासागर चौराहा घोषित किया गया।

श्रुतपंचमी देवशास्त्र गुरु 111 जिनवाणी रथयात्रा सम्पन्न

इंदौर-श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इंदौर में दिनांक 30 मई को श्रुतस्कंधन विधान एवं 1 जून को देव शास्त्र गुरु तथा 108 जिनवाणी रथ के साथ कुल 111 रथों द्वारा रथ प्रवर्तन मुनि श्री निष्पक्षसागर जी महाराज, मुनि श्री निस्पृह सागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें सारथी बनने का सौभाग्य श्रीमति संध्या धर्मेन्द्र जैन सिमकेन, स्वर्ण रथ सारथी रमेश जैन क्लर्क कॉलोनी, दीपक जैन परदेशीपुरा, वीरेन्द्र जैन, हर्ष जैन, धर्मेन्द्र जैन सी.ए., आजाद मोदी, प्रदीप जी टड़ा, आनंद जैन, पाठशाला परिवार क्लर्क कॉलोनी, राजेश जैन पुष्पक, भरत जैन, चेतन बाकलीवाल आदि को सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरण स्थापित

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में मुनि श्री निष्पक्षसागर जी महाराज एवं मुनि श्री निष्पृहसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 1 जून 2025 को आचार्य गुरुवर विद्यासागर महाराज जी के चरण स्थापित करने का सौभाग्य श्रीमति सुनीता वीरेन्द्र जैन, श्रीमति समता राजकुमार जैन (पुष्प परिवार) इंदौर को प्राप्त हुआ।

पंचकल्याणक सम्पन्न

पनागर- आचार्य श्री समयसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में आचार्य पद के बाद प्रथम पंचकल्याणक श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पनागर में दिनांक 14 मई से 20 मई तक बाल ब्र. विनय भैया बण्डा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ । जिसमें आचार्य श्री समयसागर जी महाराज तथा निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागर महाराज के डाक टिकट का लोकार्पण 20 मई को किया गया। तथा पंचकल्याणक में 9 रथों द्वारा रथ प्रवर्तन किया गया । जिसमें नगर गौरव

निर्यापक श्रमण मुनि श्री संभवसागर जी महाराज की विशेष उपस्थिति रही। जिसमें माता पिता बनने का सौभाग्य श्रीमति शालिनी पवन लसगरी को प्राप्त हुआ सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रीमति पल्लवी नमन जैन सिवनी को प्राप्त हुआ।

पूना- श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर विद्या शांतिधाम पिंपले सौदागर पूना का पंचकल्याणक दिनांक 31 मई से 5 जून 2025 को आचार्य श्री समयसागर महाराज जी के आशीर्वाद से युवा बोध प्रणेता मुनि श्री कुंथुसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में भारत गौरव ब्र. धीरज भैया राहतगढ़ एवं ब्र. नितिन भैया के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सानंद सम्पन्न हुआ। जिसमें पंडित श्री श्रेयांश जी बड़ौत के निर्देशन में एवं डॉ. जयंत कीर्ति स्वामी, सौरभसेन स्वामी के निर्देशन में ब्र. धीरज भैया को कर्मयोगी की उपाधी यू.एस.ए. बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड से सम्मानित किया गया। एवं मुनि श्री कुंथुसागर महाराज जी का डॉक टिकट का विमोचन किया गया।

श्री 1008 समवशरण महामंडल विधान सम्पन्न

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में मुनि श्री निष्पक्षसागर जी महाराज एवं मुनि श्री निष्पृहसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 25 मई से 1 जून 2025 तक श्री समवशरण महामंडल विधान बाल ब्र. संजीव भैया कटंगी के विधानाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ जिसमें समवशरण उद् घाटन करने का सौभाग्य नवीन गोधा, चक्रवर्ती बनने का सौभाग्य संजय निधि जैन बासौदा, सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य आशीष निधि जैन बरायठा वालों को प्राप्त हुआ।

कातंत्र रूपमाला शिविर

इंदौर-श्रुत सिद्धान्त शोधपीठ द्वारा कातंत्र रूपमाला (पंचसंधि) पर एक सप्ताह का आवासीय जैन संस्कृत व्याकरण शिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है। जिसमें अनुभवी योग्य विद्वानों द्वारा कातंत्र रूपमाला का प्रशिक्षण दिया जायेगा दिनांक 19 जुलाई से 27 जुलाई 2025 तक।

इच्छुक विद्वानों और विद्यार्थियों से आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। शिविरार्थियों के आवास और शुद्ध भोजन की व्यवस्था समिति की ओर से रहेगी।

अंतिम परीक्षा उत्तीण करने वालों को प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा साथ ही कक्षा में 80% शारीरिक उपस्थिति भी अनिवार्य होगी। प्रयोगिक अभ्यास के लिए पठन सामग्री एवं पुस्तकें उपलब्ध कराई जायेगी।

पंजीकरण की अंतिम तिथि 30 जून 2025 रहेगी। सम्पूर्ण शिविर पूर्णतः निःशुल्क रहेगा । निर्देशकः ब्र. जिनेश मलैया 8989505108, प्रशिक्षकः डॉ. ब्र. प्रदीप शास्त्री (पीयूष) जबलपुर मो. 9424914146, संयोजक डॉ. ब्र. समता मारौरा इंदौर 8450088410 पर सम्पर्क कर सकते है।

कक्षा 12वीं में टॉप

पूज्यनीय पंडित श्री गुलाबचंद जी पुष्प की परिवरमाला से उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री शिखरचंद जी सिंघई की नातिन सुश्री तनवी जैन पुत्री अबनीश एवं अलका जैन ने कक्षा 12वीं मे 92.8% अंक प्राप्त किए । यह उपलब्धि इसीलिए भी सराहनीय है क्योंकि तनवी ने कक्षा 4 से कक्षा 10 तक पढ़ाई अमेरिका में की एवं अपने देश में कक्षा 11वीं में प्रवेश लेकर, सिर्फ 2 वर्ष में 12वीं 92.8% अंक अर्जित किये। इसी के साथ संस्कार सागर परिवार की और से बहुत-बहुत शुभकामनायें।

वर्ग पहेली 309

1	2		3	■	4		5	6
7		■	8			■	9	
10		11		■	12	13	■	■
	■		■	14	■	15		16
17	18		■	19			■	
■	20		■	■	■	21	22	■
23		■	24	25	26	■	27	28
29		30	■	31		32	■	
	■	33			■	34		

बाये से दाये

1. बावन जिनालय युक्त अष्टमद्वीप -4
4. आचार्य विद्यासागर जी का जन्मनगर -4
7. श्वास, ताकत, शक्ति -2
8. वस्त्र, कपड़ा, चेल -3
9. उसी प्रकार, वैसा ही, वैसे -2
10. गर्मी के कारण नाक से रक्त बहना -3
12. थोड़ा, अल्प -2
15. फलक, लकड़ी का आसन पाट -3
17. नृत्य करना -3
19. जल पानी -3
20. हुनर, विद्या, आर्ट -2
21. चरबी, मांस -2
23. अंधेरा, अंधकार -2
24. पठन-पाठन -3
27. सोपता, 52 पत्ते का सेट -2
29. धन नगद पैसा गहना -3
31. निषेध -3
33. झुकना झुकाव -3
34. दृष्टि -3

ऊपर से नीचे

1. सुमेरू पर्वत पर स्थिति एक वन -5
2. पुस्तकों को खाने वाला एक कीट -2
3. फैलने सुकड़ने वाला ठोस पदार्थ -2
4. अकारण क्रोध -3
5. व्यसन, आदत -2
6. आमीछंद, कहानी -2
11. सम्मेदशिखर पर बहने वाला नाला -4
13. प्रयोजन, अर्थ, तात्पर्क -4
14. पसंद -2
16. सतह, -2
18. आग चिन्गारी निकालने वाला पत्थर -2
22. सुख अनुकूलता, अच्छा लगन -2
25. फूल (उर्दू) -3
26. माँ के पिता -2
28. अगर, महानगर -3
30. चित्त अंतः करण -2
32. न्यून, कम -2

वर्ग पहेली 308 का हल

1 अ	ज	2 मे	3 र	■	4 व	न	5 वा	6 सी
ह	■	7 ख	ग	ध	र	■	8 सां	ता
9 म	10 च	ला	■	■	11 दा	म	■	■
12 द	म	■	13 प	14 व	न	■	15 सा	16 या
17 न	न	■	18 र	त	■	■	19 ग	द
ग	■	20 प	त	न	■	21 अ	■	■
22 र	23 ज	त	■	■	24 चं	द्र	गि	25 रि
■	26 त	वा	■	27 पा	च	क	■	वा
28 वा	न	र	■	29 प	ल	■	30 वा	ज

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

ये साधना हैं सम्यक् पथ की

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

श्री 1008 समवशरण, आचार्य छत्तीसी श्रुतस्कंध महामंडल विधान, महामस्तकाभिषेक एवं रथयात्रा

मुनि श्री निष्पक्षसागर जी एवं मुनि श्री निष्पृहसागर जी का समवशरण मंडल विधान के पोस्टर का लोकार्पण करते हुये

भव्य समवशरण की रचना

अर्घ समर्पित करते हुये ब्रह्मचारीगण

समवशरण में अर्घ समर्पित करते हुये इन्द्र गण

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-3193601, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 27/05/2025, पोस्टिंग दिनांक : 03/06/2025